THE LARGEST CIRCULATED AND READ HINDI DAILY IN TELANGANA & ANDHRA PRADESH

स्वतंत्र वार्ता

epaper.vaartha.com
Vaartha Hindi
@Vaartha_Hindi
Vaartha official
www.hindi.vaartha.com

वर्ष-30 अंक : 51 (हैदराबाद, निजामाबाद, विशाखापट्टणम, तिरुपति से प्रकाशित) ज्येष्ठ कृ.6 2082 रविवार, 18 मई-2025

प्रधान संपादक - डॉ. गिरीश कुमार संघी हैदराबाद नगर ✼ पृष्ठ : 16+32 मूल्य : 8 रुपये

उत्तरी कश्मीर में कई जगह पुलिस के छापे

श्रीनगर/इस्लामाबाद, 17 मई (एजेंसियां)। जम्मू-कश्मीर पुलिस की स्टेट इन्वेस्टिगेशन एजेंसी (एसआईए) सेंट्रल और नॉर्थ कश्मीर के सोपोर, बारामुला, हंदवाड़ा, गांदरबल और श्रीनगर समेत कई इलाकों में छापेमारी कर रही है। यह कार्रवाई आतंक से जुड़े मामलों की जांच के सिलसिले में की जा रही है। सूत्रों के मुताबिक, शुक्रवार देर रात एजेंसी को संदिग्ध आतंकी मूवमेंट की जानकारी मिली थी, जिसके बाद यह कार्रवाई शुरू की गई। वहीं, सांबा जिले के एक गांव में टेरर एक्टिविटी दिखने के बाद सुरक्षा बलों की संयुक्त टीम ने सर्च ऑपरेशन शुरू किया है। इधर, पाकिस्तान के प्रधानमंत्री शहबाज शरीफ ने नूर खान एयरबेस पर भारतीय हमले की बात कुबूल कर ली है।

भारत की बात करने वालों से नफरत क्यों करते हैं राहुल?

थरूर विवाद पर भाजपा ने कांग्रेस पर साधा निशाना

नई दिल्ली, 17 मई (एजेंसियां)। 'ऑपरेशन सिंदूर' के बाद आतंकवाद के खिलाफ भारत के कड़े रुख का संदेश लेकर सात सर्वदलीय प्रतिनिधिमंडल विदेश जाएंगे। जिनमें से कुछ प्रतिनिधिमंडलों का नेतृत्व सत्तारूढ़ दलों के नेता कर रहे हैं जबकि कुछ की अगुवाई विपक्षी दलों के नेता करेंगे। एक प्रतिनिधिमंडल की कमान कांग्रेस सांसद शशि थरूर को मिली है। जिसे पर सियासी बवाल मचा हुआ है, क्योंकि कांग्रेस ने उनका नाम प्रस्तावित किया था। अब इसे लेकर कांग्रेस और भाजपा एक दूसरे पर आरोप लगा रहे हैं।

केंद्र ने खुद थरूर का नाम किया प्रस्तावित :

सरकार ने प्रतिनिधिमंडलों का नेतृत्व करने के लिए जिन नेताओं का चयन किया है, उनमें सत्तारूढ़ दलों से भाजपा नेता रविशंकर प्रसाद और बैजयंत पांडा, एनडीए में शामिल शिवसेना के श्रीकांत शिंदे और जनता दल (यूनाइटेड) के नेता संजय झा, विपक्षी दलों में कांग्रेस के शशि थरूर, द्रविड़ मुन्नेत्र कषगम (द्रमुक) की कनिमोई, राकांपा-एसपी की सुप्रिया सुले शामिल हैं। शशि थरूर के नाम को लेकर अब सियासत हो रही है। दरअसल कांग्रेस ने जिन चार नामों का प्रस्ताव भेजा था, उनमें शशि थरूर का नाम नहीं था। केंद्र सरकार ने थरूर का नाम खुद से प्रस्तावित किया है। कांग्रेस नेता और राज्यसभा सांसद जयराम रमेश ने सरकार पार्टी से विचार-विमर्श किए बिना उसके किसी सांसद को शामिल नहीं कर सकती। उनका यह भी कहा कि यह अच्छी लोकतांत्रिक परंपरा रही है कि आधिकारिक प्रतिनिधिमंडल में शामिल होने वाले सांसद अपनी पार्टी नेतृत्व से अनुमति लेते हैं। जयराम रमेश ने शशि थरूर का नाम लिए बगैर कहा कि कांग्रेस में होने और कांग्रेस के होने में जमीन आसमान का फर्क है। सरकार ने इस मामले में ईमानदारी नहीं सिर्फ शरारत दिखाई है और वह ध्यान भटकाने का खेल खेल रही है क्योंकि उसका विमर्श 'पंचर' हो गया है।

भारत के लिए बोलने वालों से नफरत करते हैं राहुल :

कांग्रेस की ओर से आई प्रतिक्रिया पर भाजपा प्रवक्ता प्रदीप भंडारी ने कहा, तो जयराम रमेश अपने ही कांग्रेसी सांसद शशि थरूर का संसदीय प्रतिनिधिमंडल का नेतृत्व करने के लिए चुने जाने का विरोध कर रहे हैं। राहुल गांधी भारत के लिए बोलने वाले हर व्यक्ति से नफरत क्यों करते हैं, यहां तक कि अपनी पार्टी में भी? कांग्रेस के बयान पर, भाजपा सांसद मनोज तिवारी ने कहा, इससे कांग्रेस को कोई फायदा नहीं होने वाला है। यह कांग्रेस शासित राज्यों के लिए भी अच्छा नहीं होगा। यह राजनीति का विषय नहीं है। यह केंद्र सरकार की महानता है कि वे हर पार्टी से कुछ सांसदों को (प्रतिनिधिमंडल का नेतृत्व करने के लिए) चुन रहे हैं। वहीं असम के मुख्यमंत्री हिमंत बिस्वा सरमा ने कहा कि सूची में शामिल सांसदों में से एक (असम से) ने पाकिस्तान में लंबे समय तक रहने की बात से इनकार नहीं किया है... कथित तौर पर दो सप्ताह तक और विश्वसनीय दस्तावेजों से पता चलता है कि उनकी पत्नी भारत में काम करते हुए पाकिस्तान स्थित एक एनजीओ से वेतन ले रही थीं।

अब हमारा ध्यान अमरनाथ यात्रा पर व्यवधान नहीं चाहते : उमर अब्दुल्ला

श्रीनगर, 17 मई (एजेंसियां)। भारतीय सेना के ऑपरेशन सिंदूर के बाद जम्मू-कश्मीर के मुख्यमंत्री उमर अब्दुल्ला ने कहा कि पहलगाम की घटना के बाद से हमारी संस्कृति को बहुत नुकसान पहुंचा है। अब हमारा ध्यान अमरनाथ यात्रा को सुगम बनाने पर है। मुख्यमंत्री उमर अब्दुल्ला ने कहा कि एलओसी पर स्थिति ठीक है। बॉर्डर और एलओसी पर सीजफायर उल्लंघन की खबरें नहीं आ रही हैं, जो नुकसान हुआ है उसका मुआयना किया जा रहा है।

रिपोर्ट आने के बाद नुकसान की भरपाई की जाएगी। इस दौरान पर्यटन को भारी नुकसान हुआ है लेकिन अब हमारा पूरा ध्यान अमरनाथ यात्रा को सुगम बनाने पर है। हम नहीं चाहते कि उसमें कोई व्यवधान हो। बता दें कि ऑपरेशन सिंदूर के बाद पाकिस्तान की ओर से किए गए हमलों में सीमावर्ती क्षेत्रों को काफी नुकसान हुआ है। इसके लिए सरकार मुआवजा देने के लिए कह रही है।

मोदी ने हर हमले का करारा जवाब दिया : अमित शाह

हमारी सेनाओं ने पाकिस्तान को बता दिया कि हमारी मिसाइलें रोक नहीं पाओगे

अहमदाबाद, 17 मई (एजेंसियां)। केंद्रीय गृह एवं सहकारिता मंत्री अमित शाह शनिवार से दो दिन के गुजरात दौरे पर हैं। शनिवार को वे गांधीनगर पहुंचे, जहां विभिन्न कार्यक्रमों में हिस्सा लिया। इस मौके पर उन्होंने अपने संबोधन में कहा-हमारी सेना ने पाकिस्तान के अंदर जाकर आतंकियों के 9 ठिकानों को तबाह कर 100 से ज्यादा आतंकियों को मारा। पाकिस्तान ने कच्छ से कश्मीर तक हमले का दुस्साहस किया, लेकिन हमारी सेना ने हर हमले को विफल किया। एक भी मिसाइल भारत में नहीं गिरी। हमारी आर्मी ने पाक एयरबेस को भी तबाह कर दिया। गृहमंत्री ने आगे कहा कि पहले हमलों का जवाब नहीं दिया जाता था, लेकिन मोदीजी ने हर हमले का करारा जवाब दिया है। सेनाओं ने ईंट का जवाब पत्थर से दिया। उन्हें बता दिया कि हमारी मिसाइलें रोक नहीं पाओगे।

गृहमंत्री ने शनिवार को 1100 करोड़ रुपए के विकास कार्यों का लोकार्पण किया। साथ ही 3 आवास योजनाओं के लिए ड्रॉ निकाला। इसके बाद वावोल के पास नगर निगम द्वारा नवनिर्मित प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्र का लोकार्पण किया।

नेपाल के रास्ते बिहार में घुसने की फिराक में आतंकी

इंडो-नेपाल बॉर्डर पर हाई अलर्ट, सुपौल एसपी बोले-स्लीपर सेल के सदस्यों को पहचानना मुश्किल

किशनगंज/सुपौल, 17 मई (एजेंसियां)। भारत-पाक तनाव के बीच खुफिया विभाग की ओर से आतंकी घुसपैठ का अलर्ट जारी किया गया है। नेपाल के रास्ते बिहार में आतंकी घुसपैठ की कोशिश में हैं। खुफिया एजेंसियों के अनुसार, बांग्लादेश और पाकिस्तान से जुड़े 10 से ज्यादा आतंकी किशनगंज के ठाकुरगंज के रास्ते बिहार में घुसने की फिराक में हैं। यह संदिग्ध आतंकी ग्रुप बांग्लादेश के जमात-उल-मुजाहिदीन, हरकत-उल जिहाद अल-इस्लामी और बांग्लादेश जमात-ए-इस्लामी जैसे कट्टरपंथी संगठनों से जुड़े बताए जा रहे हैं।

आतंकी घुसपैठ का इनपुट मिलने के बाद बिहार के सीमावर्ती जिलों में चौकसी बढ़ा दी गई हैं। सशस्त्र सीमा बल (एसएसबी) और बिहार पुलिस की संयुक्त टीम ने किशनगंज, सुपौल, किशनगंज, अररिया और सीतामढ़ी में गश्त बढ़ा दी है। वीरपुर, निर्मली और कोसी नदी के दियारा क्षेत्रों में गश्त तेज कर दी गई है।

'पाकिस्तान को पहले सूचना देना अपराध' : राहुल का केंद्र पर निशाना

नई दिल्ली, 17 मई (एजेंसियां)। कांग्रेस नेता राहुल गांधी ने शनिवार को ऑपरेशन सिंदूर को लेकर केंद्र सरकार पर बड़ा हमला बोला। उन्होंने आरोप लगाया कि सरकार ने ऑपरेशन सिंदूर के दौरान पाकिस्तान को पहले से जानकारी दी, जो एक गंभीर अपराध है। साथ ही उन्होंने पूछा कि ऐसा करने की इजाजत किसने दी और इस कारण वायुसेना को कितने विमान खोने पड़े?

बता दें कि राहुल गांधी ने अपने सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म एक्स पर एक वीडियो साझा किया, जिसमें विदेश मंत्री एस. जयशंकर यह कहते हुए नजर आ रहे हैं कि हमने पाकिस्तान को संदेश भेजा था कि हम आतंकवादी ठिकानों पर हमला कर रहे हैं, सेना पर नहीं। सेना चाहे तो इसमें हस्तक्षेप न करे। लेकिन उन्होंने हमारी सलाह नहीं मानी।

पाकिस्तान को सूचित करना अपराध :

जयशंकर की टिप्पणी पर राहुल गांधी ने सवाल खड़ा करते हुए जमकर निशाना साधा। उन्होंने कहा कि हमले की शुरूआत में पाकिस्तान को सूचित करना एक अपराध है। विदेश मंत्री ने खुद ये बात मानी है। किसने इसकी अनुमति दी? क्या इससे हमारी वायुसेना को नुकसान हुआ? हालांकि, भारत सरकार की प्रेस इंफॉर्मेशन ब्यूरो (पीआईबी) ने राहुल गांधी के दावे को गलत बताया है। पीआईबी की फैक्ट चेक यूनिट ने कहा कि विदेश मंत्री जयशंकर ने ऐसा कोई बयान नहीं दिया है, उन्हें गलत तरीके से पेश किया गया है। गौरतलब है कि 6 से 7 मई की दरमियानी रात को 1:05 बजे से लेकर 1:30 बजे तक सशस्त्र बलों ने ऑपरेशन सिंदूर को अंजाम दिया। 25 मिनट के इस ऑपरेशन में 24 मिसाइलों के जरिए नौ आतंकी शिविरों को ध्वस्त कर दिया गया। इन नौ ठिकानों में से पांच पाकिस्तान के कब्जे वाले कश्मीर में थे, वहीं चार पाकिस्तान में थे। इन ठिकानों में आतंकियों को भर्ती किया जाता था। उन्हें प्रशिक्षित किया जाता था। इतना ही नहीं भारतीय सेना के इस कार्रवाई में आतंकी मसूद अजहर के परिवार के दस लोगों की मौत हो गई। के पहलगाम में 22 अप्रैल को हुए आतंकी हमले के जवाबी कार्रवाई में भारत ने ऑपरेशन सिंदूर के तहत आतंकियों के पनाहगाह पाकिस्तान और पीओके में नौ आतंकी ठिकानों पर हमला कर उसे पूरी तरह से ध्वस्त कर दिया।

महिला टीचर ने क्लास में कलमा पढ़वाया

पानीपत, 17 मई (एजेंसियां)। हरियाणा में पानीपत शहर के सरस्वती विद्या मंदिर स्कूल में एक महिला टीचर की ओर से 8वीं क्लास के बच्चों को कलमा पढ़वाने का मामला सामने आया है। इसका खुलासा तब हुआ जब बच्चों ने घर जाकर कलमा गुनगुनाया। इसके बाद बच्चों के परिजनों को इसकी जानकारी हुई। अभिभावक एकत्र होकर स्कूल पहुंचे और स्कूल में टीचर के खिलाफ शिकायत दी गई। इसके बाद माता-पिता की शिकायत पर महिला टीचर को तुरंत स्कूल से बर्खास्त कर दिया गया है। मामला बिगड़ने की आशंका पर पुलिस भी मौके पर पहुंची थी, लेकिन मामले में समझौता करवा दिया गया है। मिली जानकारी के अनुसार, सरस्वती विद्या मंदिर स्कूल 2002 से चल रहा है। इसमें 2 दिन पहले मॉर्निंग असेंबली के बाद स्कूल लगा था। इसी में कक्षा 8वीं में संस्कृत की टीचर महजीब अंसारी उर्फ माही ने लेक्चर लिया। इस लेक्चर के दौरान टीचर ने बच्चों को कलमा पढ़ाया।

जज जमीनी हकीकत नजरअंदाज नहीं कर सकते : सीजेआई

> *बार काउंसिल के इवेंट में कहा-न्यायपालिका का लोगों से दूरी बनाए रखना असरदार नहीं*

नई दिल्ली, 17 मई (एजेंसियां)। सुप्रीम कोर्ट के नव-नियुक्त सीजेआई बीआर गवई ने शनिवार को कहा कि जज जमीनी हकीकत को नजरअंदाज नहीं कर सकते हैं। वे बार काउंसिल ऑफ इंडिया (बीसीआई) के सम्मान समारोह में बोल रहे थे। इस दौरान सीजेआई गवई ने सामाजिक वास्तविकताओं को समझने और उनका जवाब देने में जजों की भूमिका पर जोर दिया।

सीजेआई गवई ने कहा कि आज की न्यायपालिका मानवीय अनुभवों की जटिलताओं को नजरअंदाज करते हुए कानूनी मामलों को सख्त काले और सफेद शब्दों में देखने का जोखिम नहीं उठा सकती। सीजेआई ने इस बात पर जोर दिया कि न्यायपालिका में लोगों से दूरी रखना असरदार नहीं है। उन्होंने इस धारणा को खारिज कर दिया कि सुप्रीम कोर्ट के जजों को लोगों से जुड़ने से बचना चाहिए।

पिता ने कहा था-जज बने तो बाबा साहब के दृष्टिकोण को आगे बढ़ा सकोगे :

सीजेआई गवई ने जज का पद मिलने की अपनी शुरूआती हिचकिचाहट के बारे में भी बताया। उन्होंने बताया कि उनके पिता ने उनसे कहा था कि वकील के रूप में काम करना आर्थिक समृद्धि लाएगा, लेकिन संवैधानिक न्यायालय में जज के रूप में सेवा करने से उन्हें डॉ.बी.आर. अंबेडकर के सामाजिक और आर्थिक न्याय के दृष्टिकोण को आगे बढ़ाने का मौका मिलेगा।

अपने पिता की सलाह मानते हुए सीजेआई गवई ने हाईकोर्ट जज के रूप में अपने 22 साल के कार्यकाल और सुप्रीम कोर्ट जज के रूप में छह साल के कार्यकाल पर संतोष जताया। उन्होंने कहा कि इस दौरान उन्होंने हमेशा ज्यूडिशियल सिस्टम को अपना सर्वश्रेष्ठ देने का प्रयास किया है।

इंदौर में मोदी का पोस्टर लॉक, आंख पर पट्टी बांधी

रतलाम-उज्जैन में शाह और देवड़ा का पुतला फूंका; सेना पर आपत्तिजनक बयान का विरोध

भोपाल, 17 मई (एजेंसियां)। मध्य प्रदेश के मंत्री विजय शाह के कर्नल सोफिया कुरैशी पर दिए गए आपत्तिजनक बयान के बाद डिप्टी सीएम जगदीश देवड़ा और मंडला सांसद फग्गन सिंह कुलस्ते भी अपने बयानों के कारण विवादों में घिर गए हैं। इसको लेकर कांग्रेस ने तीनों नेताओं और बीजेपी के खिलाफ मोर्चा खोल दिया है। इंदौर में कांग्रेस ने बयानों के विरोध में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के पोस्टर पर मुंह पर ताला लगाकर और आंखों पर काली पट्टी बांधकर प्रदर्शन किया। वहीं, रतलाम में महिला कांग्रेस ने मंत्री विजय शाह की फोटो पर चूड़ियों का हार पहनाया और डिप्टी सीएम जगदीश देवड़ा का पोस्टर जलाया। इसी तरह उज्जैन, मंदसौर, शिवपुरी, रतलाम, उमरिया, श्योपुर में भी कांग्रेस और महिला कांग्रेस ने देवड़ा और विजय शाह के पुतले जलाकर कार्रवाई की मांग की।

मोहन भागवत बोले-जो दुस्साहस करेगा, उसे सबक सिखाएगा भारत

दुनिया प्रेम और मंगल की भाषा तब ही सुनती है, जब आपके पास शक्ति हो

जयपुर, 17 मई (एजेंसियां)। राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के सरसंघचालक डॉ. मोहन भागवत ने शनिवार को कहा- भारत किसी से शत्रुता नहीं करता है, लेकिन कोई दुस्साहस करेगा तो उसे सबक सिखाने से भी पीछे नहीं हटेगा। उन्होंने कहा-दुनिया प्रेम और मंगल की भाषा भी तब ही सुनती है, जब आपके पास शक्ति हो। यह दुनिया का स्वभाव है, इसको बदला नहीं जा सकता। इसलिए विश्व कल्याण के लिए हमें शक्ति संपन्न होने की आवश्यकता है।

डॉ. भागवत जयपुर के सीकर रोड स्थित रविनाथ आश्रम में आयोजित रविनाथ महाराज की पुण्यतिथि के कार्यक्रम में संबोधित कर रहे थे। उन्होंने कहा-लोगों के मन में आ रहा होगा कि मैं रविदास आश्रम क्यों आया हूं। यह वाजिब भी है। लेकिन मैं रविदास जी का भक्त हूं, उन्हीं के कारण आश्रम में आया हूं। मोहन भागवत ने आश्रम में अपने संबोधन की शुरुआत 'भारत का रहने वाला हूं, भारत की बात सुनाता हूं' से की। उन्होंने भारत को विश्व का सबसे प्राचीन देश बताते हुए उसकी भूमिका बड़े भाई की बताई। उन्होंने कहा-भारत विश्व में शांति और सौहार्द के लिए काम कर रहा है। भारत सब क्षेत्रों में प्रगति करेगा। भारत किसी से शत्रुता नहीं करता है, लेकिन कोई दुस्साहस करेगा तो सबक सिखाने में भी पीछे नहीं हटता है। उन्होंने कहा-भारत जिन दूसरे राष्ट्र की मदद करता है, वो देश कभी-कभी विपरीत धाराओं में बहते हैं, फिर भी हम मदद करते हैं। क्योंकि हमारे मन में सहयोग का भाव रहता है। हम कई देशों के बड़े भाई हैं, लेकिन बड़ा भाई होने का घमंड नहीं करना है। बल्कि बड़े भाई का फर्ज निभाते हुए छोटों को सही नसीहत देनी है।

भागवत ने ऑपरेशन सिंदूर का जिक्र किए बिना कहा कि दुर्बल कुछ नहीं कर सकता है। दुनिया को शक्ति दिखानी होती है। हम जिसका जैसा हित है, उससे वैसा व्यवहार करते हैं। कभी-कभी हमारे विपरीत भी हालात होते हैं, लेकिन हम फिर भी मदद करते हैं। हमारी ताकत विश्व ने देखी है। संघ प्रमुख ने कहा-भारत में त्याग की परंपरा रही है।

उपराष्ट्रपति धनखड़ की देशवासियों से अपील

सोच-समझकर ही किसी देश से व्यापार या पर्यटन करें

नई दिल्ली, 17 मई (एजेंसियां)। उपराष्ट्रपति जगदीप धनखड़ ने शनिवार को कहा कि भारतीय लोग ऐसे देशों की अर्थव्यवस्था को मदद नहीं दे सकते जो भारत के हितों के खिलाफ काम कर रहे हैं। इसका मतलब यह है कि हमें ऐसे देशों से सामान खरीदने (आयात) या वहां घूमने (पर्यटन) से बचना चाहिए जो भारत विरोधी रुख अपनाते हैं। उनका यह बयान उस समय आया है जब तुर्किये और अजरबैजान के खिलाफ व्यापार और पर्यटन का बहिष्कार चल रहा है। इन दोनों देशों ने हाल ही में पाकिस्तान का साथ दिया, जब भारत ने 'ऑपरेशन सिंदूर' के तहत आतंकवादी ठिकानों पर हमला किया था।

एक कार्यक्रम को संबोधित करते हुए उपराष्ट्रपति ने कहा कि हर व्यक्ति को देश की सुरक्षा में सहयोग देना चाहिए। खासकर व्यापार, वाणिज्य और उद्योग जैसे क्षेत्र सुरक्षा मामलों में बड़ी भूमिका निभा सकते हैं। उन्होंने आगे कहा, क्या हम ऐसे देशों को सशक्त बना सकते हैं जो हमारे खिलाफ हैं? समय आ गया है कि हम सभी को आर्थिक राष्ट्रवाद के बारे में गंभीरता से सोचना चाहिए। उपराष्ट्रपति धनखड़ ने यह भी कहा कि हम अब ऐसे देशों की अर्थव्यवस्था को और मजबूत नहीं कर सकते जो संकट के समय भारत के खिलाफ खड़े होते हैं। उनका कहना था कि हर चीज को देशभक्ति के आधार पर देखना जरूरी है। तुर्किये ने पाकिस्तान का समर्थन किया और भारत द्वारा पाकिस्तान और पाकिस्तान-अधिकृत कश्मीर (पीओके) में आतंकियों पर किए गए हमलों की आलोचना की। पाकिस्तान ने इस संघर्ष के दौरान तुर्की से मिले ड्रोन का इस्तेमाल किया। अजरबैजान ने भी पाकिस्तान को समर्थन दिया।

अंतिम लड़ाई में बारूद बिछा रहे नक्सली

> *सीआरपीएफ ने निकाला 'इम्प्रोवाइज्ड एक्सप्लोसिव डिवाइस' का तोड़*

नई दिल्ली, 17 मई (एजेंसियां)। देश में अब नक्सलवाद के खात्मे का काउंट डाउन प्रारंभ हो चुका है। केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह ने 31 मार्च 2026 तक की डेड लाइन जारी की है। यानी इस तारीख तक देश के सभी हिस्सों से नक्सलवाद को पूरी तरह से खत्म कर दिया जाएगा। ऐसा कोई क्षेत्र नहीं बचेगा, जहां तक सुरक्षा बलों की पहुंच न हो।

नक्सल प्रभावित इलाकों में तैनात केंद्रीय बलों ने भी कमर कस ली है। ऐसे सबसे ज्यादा क्षेत्रों में सीआरपीएफ तैनात है। कुछ क्षेत्रों में आईटीबीपी और बीएसएफ भी कार्यरत है। सीआरपीएफ, कोबरा, डीआरजी, आईटीबीपी एवं बीएसएफ आदि बल, अब नक्सलियों के खात्मे की तरफ बढ़ चले हैं। अंतिम दौर की लड़ाई में नक्सलियों ने अपने ठिकानों के आसपास बारूद बिछा दिया है। यानी 'इम्प्रोवाइज्ड एक्सप्लोसिव डिवाइस' आईईडी लगा दी हैं। इसे कहीं भी बैठकर संचालित किया जा सकता है। अगर सटीक टाइमिंग है तो इससे सुरक्षा बलों को बड़ा नुकसान भी पहुंच सकता है। ऐसे में सीआरपीएफ सहित दूसरे बलों ने तकनीकी उपकरणों एवं स्निफर डॉग की मदद से आईईडी का तोड़ निकाला है। इसके बावजूद सुरक्षा बलों के लिए आईईडी विस्फोट एक बड़ी चुनौती बना हुआ है। छत्तीसगढ़ व तेलंगाना बॉर्डर पर स्थित कर्रेगुट्टा पहाड़ी, जहां पिछले दिनों नक्सलियों को खदेड़ने के लिए सबसे बड़ा अभियान 'ब्लैक फॉरेस्ट' चलाया गया था, वहां स्थित सीआरपीएफ के 'फॉरवर्ड ऑपरेटिंग बेस' (एफओबी) पर अमर उजाला डॉट कॉम पहुंचा है। सीआरपीएफ अधिकारियों का कहना है कि अब तकरीबन सभी नक्सल प्रभावित क्षेत्रों में सीआरपीएफ एवं दूसरे सुरक्षा बलों की पकड़ मजबूत होती जा रही है। नक्सलियों के शीर्ष कमांडरों के ठिकानों को ध्वस्त किया जा रहा है। सीआरपीएफ द्वारा जिस तेजी के साथ पांच-पांच किलोमीटर की दूरी पर एफओबी स्थापित किए जा रहे हैं, उससे नक्सलियों की कोर टीम को एक जगह से दूसरी जगह भागना पड़ रहा है।

तीन सप्ताह से ज्यादा समय तक चले ऑपरेशन 'ब्लैक फॉरेस्ट' में 31 नक्सली मारे गए हैं। बीजीएल, आईईडी एवं दूसरे हथियार, कर्रेगुट्टा पहाड़ी पर ही बनाए जा रहे थे। वहां पर नक्सलियों ने चार टेक्नीकल यूनिट स्थापित कर रखी थी। अधिकारियों का कहना है कि अब नक्सली, सुरक्षा बलों के सामने आने से कतरा रहे हैं।

वे सीधी मुठभेड़ से बच रहे हैं। अब जितने भी नक्सली बचे हैं, उन्होंने जंगलों में अपने ठिकानों के आसपास और ऐसे मार्ग, जहां से सुरक्षा बलों की आवाजाही होती है, वहां कदम-कदम पर बारूद बिछा दिया है। वे प्रेशर 'इम्प्रोवाइज्ड एक्सप्लोसिव डिवाइस' (आईईडी) के जरिए सुरक्षा बलों को नुकसान पहुंचाने का प्रयास कर रहे हैं।

टीएमसी सांसद ने सर्वदलीय प्रतिनिधिमंडल में शामिल होने से किया इनकार

नई दिल्ली, 17 मई (एजेंसियां)। सरकार ने टीएमसी सांसद सुदीप बंदोपाध्याय को सर्वदलीय प्रतिनिधिमंडल में शामिल होने का निमंत्रण दिया था, लेकिन टीएमसी सांसद ने इसमें शामिल होने से इनकार कर दिया। गौरतलब है कि आतंकवाद के खिलाफ जीरो टोलेरेंस की नीति, पहलगाम आतंकी हमले और ऑपरेशन सिंदूर को लेकर भारत के पक्ष को दुनिया के देशों के सामने रखने के लिए सर्वदलीय प्रतिनिधिमंडल का एलान किया है। सरकार सात प्रतिनिधिमंडलों को अलग-अलग देशों के दौरे पर भेजेगी, जिसके हर प्रतिनिधिमंडल में छह से सात सांसद होंगे।

टीएमसी सांसद सुदीप बंदोपाध्याय ने अपने इनकार की वजह बताते हुए कहा कि मुझे संसदीय कार्यमंत्री किरेन रिजिजू और विदेश मंत्रालय की तरफ से कॉल आई थी और मुझे अमेरिका जाने को कहा गया था, लेकिन मैंने उन्हें बताया कि मैं स्वास्थ्य कारणों से नहीं जा सकूंगा। संसदीय कार्य मंत्रालय ने सोशल मीडिया पर साझा एक पोस्ट में बताया कि सर्वदलीय प्रतिनिधिमंडल आतंकवाद से निपटने के लिए भारत की राष्ट्रीय सहमति और दृढ़ दृष्टिकोण को दुनिया के सामने रखेंगे। वे दुनिया के सामने आतंकवाद के खिलाफ हमारी जीरो टोलेरेंस की नीति का मजबूत संदेश लेकर जाएंगे।

ये सांसद करेंगे सातों प्रतिनिधिमंडल का नेतृत्व :

सात प्रतिनिधिमंडल का नेतृत्व जो सांसद करेंगे, उनमें भाजपा सांसद रविशंकर प्रसाद, बैजयंत पांडा, कांग्रेस सांसद शशि थरूर, जदयू सांसद संजय झा, डीएमके सांसद कनिमोझी करुणानिधि, एनसीपी (एसपी) सांसद सुप्रिया सुले, शिवसेना सांसद श्रीकांत शिंदे शामिल हैं। संसदीय कार्य मंत्रालय ने बताया कि हर प्रतिनिधिमंडल में राजनयिकों को भी शामिल किया जाएगा। शशि थरूर के नेतृत्व वाले प्रतिनिधिमंडल को अमेरिका भेजा जा सकता है।

दिल्ली में आम आदमी पार्टी को बड़ा झटकाः 13 आप पार्षदों ने दिया इस्तीफा

नई दिल्ली, 17 मई (एजेंसियां)। दिल्ली में आम आदमी पार्टी को बड़ा झटका लगा है। पार्टी के 13 पार्षदों ने इस्तीफा दे दिया है। बागी पार्षदों ने नई पार्टी बनाने की घोषणा की है। एमसीडी में बागी नेताओं ने अलग गुट बनाया है। आम आदमी पार्टी से इन निगम पार्षदों ने इस्तीफा देकर इंद्रप्रस्थ विकास पार्टी बनाने का फैसला किया है। हेमचंद गोयल के नेतृत्व में थर्ड फ्रंट बनाने का फैसला किया गया। मुकेश गोयल पार्टी के अध्यक्ष होंगे। बागी पार्षदों ने आम आदमी पार्टी पर आरोप लगाया है कि जनता से जो वादे किए गए थे उन्हें पूरा नहीं किया गया। 2022 में वे आम आदमी पार्टी के टिकट पर एमसीडी में पार्षद चुने गए थे। लेकिन एमसीडी की सत्ता में आने के बावजूद आम आदमी पार्टी ने के शीर्ष नेतृत्व एमसीडी की सुचारू ढंग से नहीं चला पाया। जिन पार्षदों ने आम आदमी पार्टी से इस्तीफा दिया है उनमें हेमनचंद गोयल, दिनेश भारद्वाज, हिमानी जैन, उषा शर्मा, साहिब कुमार, राखी कुमार, अशोक पांडेय, राजेश कुमार, अनिल राणा, देवेंद्र कुमार, हिमानी जैन का नाम शामिल है। आप से इस्तीफा देने पर हिमानी जैन ने कहा, हमने नई पार्टी बनाई है, इंद्रप्रस्थ विकास पार्टी। हमने आप से इस्तीफा दे दिया है। पिछले 2.5 साल में निगम में कोई काम नहीं हुआ जो होना चाहिए था। हम सत्ता में थे, फिर भी हमने कुछ नहीं किया। हमने नई पार्टी बनाई है क्योंकि हमारी विचारधारा दिल्ली के विकास के लिए काम करना है। हम उस पार्टी का समर्थन करेंगे जो दिल्ली के विकास के लिए काम करेगी। अब तक 15 पार्षद इस्तीफा दे चुके हैं। और भी शामिल हो सकते हैं।

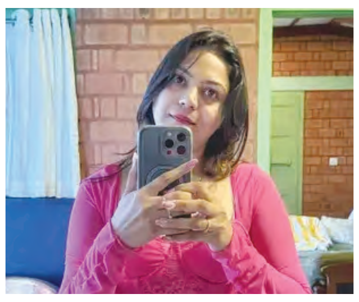

आईएसआई के संपर्क में थी ये महिला यूट्यूबर

भारत की खुफिया जानकारी भेज रही थी पाकिस्तान, पुलिस ने किया गिरफ्तार

चंडीगढ़, 17 मई (एजेंसियां)। पाकिस्तान को भारत की खुफिया जानकारी भेजने के आरोप में पुलिस ने एक महिला यूट्यूबर को हरियाणा के हिसार से गिरफ्तार किया है। इस महिला यूट्यूबर का नाम ज्योति रानी है। ज्योति रानी पर आरोप है कि वह पाकिस्तान को भारत की गोपनीय सैन्य जानकारियां भेजने का काम कर रही थी और ये पाकिस्तान इंटेलिजेंस एजेंसी आईएसआई के संपर्क में थी। बता दें कि महिला यूट्यूबर ज्योति रानी साल 2023 में अपने यूट्यूब चैनल ट्रैवल विद जो के शूट के सिलसिले में पाकिस्तान गई थी। जहां उसकी मुलाकात पाकिस्तान एंबेसी के एक अधिकारी से हुई। इसी अधिकारी ने ज्योति रानी को पाकिस्तान के आईएसआई के अधिकारियों से मिलवाया। जिसके बाद वह लगातार भारत विरोधी जानकारियां पाकिस्तान को भेज रही थी। यूट्यूबर ज्योति रानी यूट्यूब चैनल ट्रैवल विद जो पर 3 लाख 77 हजार सब्सक्राइबर्स हैं। वे अक्सर देश के बाहर अपने वीडियो ब्लॉग्स के लिए जाते रहती है। लेकिन जब ये पाकिस्तान गई तो इसने आईएसआई से ही संपर्क बना लिए और उनके अधिकारियों को भारत की खुफिया जानकारी देने का काम करने लगी। यूट्यूबर ज्योति रानी जब पाकिस्तान गई थी, उस वक्त का वीडियो उसने अपने यूट्यूब चैनल पर भी अपलोड किया है। आइए आपको उसकी वीडियो दिखाते हैं।

जासूसी के आरोप में हरियाणा का एक और युवक हुआ गिरफ्तार

इधर, हरियाणा के कैथल के एक गांव के निवासी को हाल ही में भारत-पाकिस्तान संघर्ष के दौरान पाकिस्तानी सेना और इंटर-सर्विसेज इंटेलिजेंस (आईएसआई) को कथित तौर पर सूचना देने के आरोप में गिरफ्तार किया गया है। आरोपी की पहचान 25 वर्षीय देवेंद्र ढिल्लों के रूप में हुई, जो मस्तगढ़ चीका गांव का निवासी है। डीएसपी कैथल वीरभान ने बताया कि, कैथल की जिला पुलिस को खुफिया सूचना मिली थी, जिसके आधार पर हमारे विशेष जासूस स्टाफ ने मस्तगढ़ चीका गांव निवासी नरवल सिंह के बेटे देवेंद्र को गिरफ्तार किया।₹ पुलिस ने देवेंद्र को हिरासत में लेने के बाद उससे पूछताछ की। पुलिस के अनुसार, पूछताछ के दौरान देवेंद्र ने पुलिस को बताया कि वह पाकिस्तानी खुफिया एजेंसी आईएसआई के संपर्क में था। पाकिस्तान से लौटने के बाद देवेंद्र ने कथित तौर पर अपने दोस्तों के साथ बातचीत में देश की तारीफ की। वह पटियाला के खालसा कॉलेज में एमए प्रथम वर्ष का छात्र है। बताया जाता है कि वह कुछ समय पहले पाकिस्तानी खुफिया एजेंसी आईएसआई के संपर्क में आया और भारत के खिलाफ जासूसी करने लगा। उसका परिवार मस्तगढ़ गांव में रहता है और खेतीबाड़ी करता है। घर में उसके माता-पिता, दादी, बहन और खुद देवेंद्र शामिल हैं।

'ऑपरेशन सिंदूर' की जानकारियां आईएसआई को देता था

मामले को लेकर आगे कैथल डीएसपी वीरभान ने बताया कि, देवेंद्र को हिरासत में लेने के बाद उससे पूछताछ की गई। पूछताछ में उसने बताया कि वह भारत-पाकिस्तान के बीच चल रहे विवाद की जानकारी उस एजेंसी को देता था और समय-समय पर पाकिस्तानी सेना और आईएसआई को 'ऑपरेशन सिंदूर' की जानकारी भी देता था। साइबर थाने का हमारा स्टाफ उसके पास मिले डिवाइस की गहन जांच कर रहा है। सच्चाई जो भी सामने आएगी, उसके अनुसार कानून का पालन किया जाएगा।

युवक के खिलाफ देशद्रोह और एनएसए के तहत मामला दर्ज

देवेंद्र पिछले कुछ समय से फेसबुक पर हथियारों के साथ फोटो पोस्ट कर रहा था। शुरुआत में उसकी गिरफ्तारी हथियारों में रुचि के मामले में हुई थी। हालांकि, पूछताछ में बड़े खुलासे हुए- वह आईएसआई के संपर्क में था और पाकिस्तान के लिए जासूसी कर रहा था। बताया जा रहा है कि वह भारतीय सेना के ठिकानों की तस्वीरें और वीडियो पाकिस्तान भेज रहा था। देवेंद्र हाल ही में कुछ रिश्तेदारों के साथ करतारपुर साहिब में दर्शन (तीर्थयात्रा) के लिए पाकिस्तान गया था। इसी यात्रा के दौरान वह कथित तौर पर आईएसआई के लोगों के संपर्क में आया था। फिलहाल उससे पूछताछ की जा रही है और उसके खिलाफ देशद्रोह और राष्ट्रीय सुरक्षा अधिनियम (एनएसए) के तहत मामला दर्ज किया गया है।

हथियारों का शौक रखता था युवक

उसके पड़ोसियों के अनुसार, देवेंद्र एक बहुत ही साधारण परिवार से है, लेकिन उन्होंने हथियारों के प्रति उसके आकर्षण को स्वीकार किया, उन्होंने बताया कि वह अक्सर शादियों या सामाजिक समारोहों के दौरान पिस्तौल के साथ फोटो खिंचवाता था। गांव में हर कोई उसकी हाल की पाकिस्तान यात्रा के बारे में जानता था। वापस लौटने पर, देवेंद्र ने अपने दोस्तों से कहा था कि पाकिस्तान एक अच्छा देश है और वहां डरने की कोई बात नहीं है। उसने कहा कि यह वैसा नहीं है जैसा लोग आमतौर पर सुनते हैं। उसे वहां अच्छा लगता है।

मुंबई इंटरनेशनल एयरपोर्ट और ताज महल पैलेस होटल को बम से उड़ाने की धमकी, मचा हड़कंप

मुंबई, 17 मई (एजेंसियां)। मुंबई एयरपोर्ट और ताज महल पैलेस होटल को बम से उड़ाने की धमकी मिली है। मुंबई के छत्रपति शिवाजी महाराज अंतरराष्ट्रीय एयरपोर्ट और ताज महल पैलेस होटल को यह धमकी मुंबई एयरपोर्ट पुलिस के ईमेल आईडी पर मेल के जरिए भेजी गई है। ईमेल में दावा किया गया है कि ताजमहल पैलेस होटल और एयरपोर्ट को बम से उड़ाया जाएगा। मेल में आतंकी अफजल गुरू और सैवक्कू शंकर को अन्यायपूर्ण तरीके से फांसी दिए जाने का हवाला देते हुए यह धमकी दी गई है। मुंबई पुलिस की टीम ने मामले को संज्ञान में लेते हुए जांच शुरू कर दी है। अभी तक कुछ भी संदिग्ध नहीं मिला है। मेल भेजने वाले आरोपी को ट्रैक करने की कोशिश की जा रही है।

हाल ही में हुआ था पहलगाम आतंकी हमला

बीते 22 अप्रैल को कश्मीर के पहलगाम में आतंकी हमला हुआ था। इस आतंकी हमले में 26 लोगों की मौत हो गई थी। इस आतंकी हमले के बाद से देशभर में आतंकवाद को लेकर आक्रोश है। हालांकि भारत सरकार ने इस हमले के बाद आतंकियों के खिलाफ सख्त एक्शन लिया था और पाकिस्तान में आतंकी ठिकानों को ध्वस्त कर दिया था। इसके अलावा कश्मीर में भी आतंकियों के खिलाफ जबरदस्त ऑपरेशन चलाए जा रहे हैं और उन्हें खत्म किया जा रहा है। इसी बीच मुंबई एयरपोर्ट और ताज होटल को मिली बम से उड़ाने की धमकी चर्चा का विषय बनी हुई है। पहलगाम में आतंकी हमले के बाद भारत ने पाकिस्तान के खिलाफ भी सख्त रवैया अपनाया था और पाकिस्तान को उसकी औकात दिखाई थी। भारत की कार्रवाई से पाकिस्तान बौखला गया था और भारत के खिलाफ नापाक साजिशें रचने लगा था। हालांकि भारत ने पाकिस्तान के सारे हमलों को विफल कर दिया था और पाकिस्तान को काफी नुकसान पहुंचाया था, जिसके बाद दोनों देशों के बीच सीजफायर का ऐलान कर दिया गया था।

गांजा बेचने की नौकरी कर रहा था युवक, महीने में मिलता था 15000

ग्वालियर, 17 मई (एजेंसियां)। ग्वालियर पुलिस ने मैरिज गार्डन के पास गांजा बेच रहे एक तस्कर को रंगे हाथों गिरफ्तार किया। पूछताछ में उसने बताया कि उसके मामा-मामी ने 15,000 रुपये महीने की सैलरी पर उसे गांजा बेचने के लिए रखा था। पुलिस उसकी निशानदेही पर मामा के घर पहुंची तो वहां न सिर्फ ढाई किलो से अधिक गांजा मिला, बल्कि 4 लाख रुपये से अधिक नकदी, मोबाइल और पेटीएम पेमेंट रिसीवर भी बरामद हुआ। हालांकि, पुलिस के पहुंचने तक मामा मौके से फरार हो चुका था। जानकारी के अनुसार, मामला ग्वालियर के सिरोल थाना क्षेत्र का है। पुलिस को काफी दिनों से सूचना मिल रही थी कि यहां हरदौल गार्डन के पास गांजा बेचा जा रहा है। पुलिस टीम मौके पर पहुंची तो भूपेंद्र जाटव नामक युवक को गांजा बेचते हुए रंगे हाथों गिरफ्तार कर लिया। भूपेंद्र से पूछताछ में पुलिस को पता चला कि वह यहां अपने मामा राजवीर सिंह जाटव के घर रह रहा था और मामा-मामी द्वारा उसे 15,000 प्रतिमाह देकर गांजा बिकवाया जा रहा था। पुलिस आरोपी भूपेंद्र को लेकर राजवीर के घर पहुंची तो राजवीर नहीं मिला। घर की तलाशी में पुलिस को 2 किलो 800 ग्राम गांजा, 4,19,000 नकद और पेटीएम पेमेंट रिसीवर मशीन मौके से बरामद हुई। पुलिस ने गिरफ्तार युवक भूपेंद्र जाटव के खिलाफ एनडीपीएस एक्ट के तहत मामला दर्ज कर लिया है। अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक निरंजन शर्मा ने बताया कि पकड़े गए आरोपी के मामा-मामी को सह-आरोपी बनाया गया है,

लैंडिंग के समय हेली एम्बुलेंस दुर्घटनाग्रस्त

मरीज को लेने ऋषिकेश से आ रहा था धाम

रुद्रप्रयाग, 17 मई (एजेंसियां)। केदारनाथ धाम में लैंडिंग के समय हेली एम्बुलेंस दुर्घटनाग्रस्त हो गई। हेली एंबुलेंस ऋषिकेश एम्स का था, जोकि ऋषिकेश से केदारनाथ जा रहा था। एम्स के पीआरओ संदीप कुमार ने की इसकी पुष्टि की। शनिवार को केदारनाथ हेलिपैड से बमुश्किल 20 मीटर पहले एम्स का हेलिकॉप्टर क्रेश हो गया। पायलट सुरक्षित है। बताया जा रहा है कि हेलिकॉप्टर एक मरीज को लेने ऋषिकेश से केदारनाथ आ रहा था। एम्स के पीआरओ ने बताया कि हार्ड लैंडिंग के दौरान हादसा हुआ था। हेलिकॉप्टर की टेल बॉन टूटी है। कोई घायल नहीं है। हेली में केवल चालक सवार था। बता दें, 29 अक्तूबर 2024 को पीएम नरेंद्र मोदी ने एम्स की हेली एंबुलेंस सेवा संजीवनी का शुभारंभ किया था। 20 सितंबर 2022 को केंद्रीय नागरिक उड्डयन मंत्री ज्योतिरादित्य सिंधिया ने दिल्ली में एक कार्यक्रम में एम्स ऋषिकेश में हेली एंबुलेंस के संचालन की घोषणा की थी। हेली एबुलेंस सेवा का संचालन केंद्र और उत्तराखंड सरकार के 50-50 फीसदी की साझेदारी में होना है।

आठ मई को ही गंगोत्री धाम जा रहा हेलिकॉप्टर हुआ था दुर्घटनाग्रस्त

अभी आठ मई को ही गंगोत्री धाम जा रहा एक हेलिकॉप्टर गंगनानी के समीप दुर्घटनाग्रस्त हो गया था। इस घटना में पांच महिलाओं समेत छह लोगों ने मौके पर ही दम तोड़ दिया। वहीं एक व्यक्ति गंभीर रूप से घायल हो गया था। गंगनानी का हेलिकॉप्टर हादसा बहुत भयावह था। वहां पर खोज-बचाव अभियान चला रहे अधिकारी कर्मचारियों ने बताया कि घटना में हेलिकॉप्टर के भी दो टुकड़े हो गए थे। वहीं दो शव हेलिकॉप्टर में ही फंस गए थे। उन्हें निकालने के लिए हेली को काटना पड़ा था। वहीं करीब 200 मीटर गहरी खाई में रेस्क्यू अभियान चलाना बहुत मुश्किल था।

ओडिशा में गिरी आकाशीय बिजली, महिलाओं और बच्चों समेत कुल 9 लोगों की मौत

भुवनेश्वर, 17 मई (एजेंसियां)। ओडिशा के अलग-अलग इलाकों में आकाशीय बिजली गिरने से लगभग 9 लोगों की मौत हो चुकी है। अधिकारियों ने कहा कि छह महिलाओं सहित कम से कम 9 लोग मारे गए और कुछ अन्य लोग राज्य में गरज के बीच बिजली गिरने से अलग -अलग घटनाओं में घायल हो गए। कोरापुत जिले में 3 लोगों की मृत्यु हो गई, जजपुर और गंजम में 2-2 लोगों की मौत हो गई है। वहीं धेंकनल और गजापति जिले में 1-1 लोगों की मौत हो गई है। मरने वालों में तीन महिलाओं ने अपनी जान गंवा दी। वहीं एक बुजुर्ग लक्ष्मीपुर में बिजली गिरने की वजह से घायल हो गए हैं।

बिजली गिरने से 9 लोगों की मौत

सूत्रों के अनुसार, बिजली गिरने से जिन लोगों की मौत हुई है। वे सभी एक ही परिवार के सदस्य थे। जब बिजली गिरी उस दौरान वे खेतों में काम कर रहे थे और अस्थायी झोपड़ी में आश्रय लिए हुए थे, क्योंकि बारिश हो रही थी और तेज हवाएं चल रही थीं। एक पुलिस अधिकारी ने कहा कि आकाशीय बिजली झोपड़ी पर गिरी और मौके पर ही तीनों महिलाओं की मौत हो गई। मृतक की पहचान ब्रुधि मंडिंगा (60), उनकी पोती कासा मंडिंगा (18), और कुम्बरगुदा गांव के अंबिका काशी (35) के रूप में की गई है। उन्होंने कहा कि ब्रुधि और कासा मंडिंगा पारिदिगुदा के निवासी थे। एक अन्य 65 वर्षीय व्यक्ति, जिसकी पहचान हंग मंडिंगा के रूप में हुई है। आकाशीय बिजली गिरने से वह घायल हो गया। इस घटना में बुजुर्ग को गंभीर चोटे आई हैं और उन्हें अस्पताल में भर्ती कराया गया है, जहां उनका इलाज चल रहा है। वहीं जाजपुर जिले में बिजली की चपेट में आने की वजह से 2 लड़कों की मौत हो गई। उन मृतकों की पहचान बुरुसाही गांव के तारे हेमब्रम (15) और तुकुलु चटार (12) के रूप में की गई है। अधिकारी ने कहा कि घटना के संबंध में अप्राकृतिक मौत का मामला दर्ज किया गया है और आगे की जांच चल रही है।

मुंबई एयरपोर्ट से एनआईए ने 2 भगोड़ों को पकड़ा

भारत में इस्लामिक शासन स्थापित करना चाहते थे

नई दिल्ली, 17 मई (एजेंसियां)। राष्ट्रीय जांच एजेंसी यानी कि एनआईए ने प्रतिबंधित आतंकी संगठन आईएसआईएस के पुणे स्लीपर मॉड्यूल से जुड़े 2023 के एक मामले में 2 भगोड़ों को गिरफ्तार किया है। यह मामला महाराष्ट्र के पुणे में आईईडी बनाने और टेस्टिंग से संबंधित है। गिरफ्तार किए गए दोनों आरोपियों की पहचान अब्दुल्ला फैयाज शेख उर्फ डायपरवाला और तल्हा खान के रूप में हुई है। इन दोनों को मुंबई इंटरनेशनल एयरपोर्ट टी2 पर ब्यूरो ऑफ इमिग्रेशन ने पकड़ा। वे इंडोनेशिया की राजधानी जकार्ता से भारत लौटने की कोशिश कर रहे थे। एनआईए की टीम ने उन्हें हिरासत में लेकर गिरफ्तार कर लिया। ये दोनों आरोपी पिछले 2 साल से फरार थे और मुंबई की एनआईए स्पेशल कोर्ट ने उनके खिलाफ गैर-जमानती वॉरन्ट जारी किया था। एनआईए ने इन दोनों की जानकारी देने के लिए 3-3 लाख रुपये के नकद इनाम की भी घोषणा की थी। यह मामला अब्दुल्ला फैयाज शेख और तल्हा खान सहित पहले से गिरफ्तार आईएसआईएस पुणे स्लीपर मॉड्यूल के 8 अन्य सदस्यों द्वारा रची गई आपराधिक साजिश से जुड़ा है। इन लोगों ने भारत की शांति और सांप्रदायिक सौहार्द को भंग करने के लिए आतंकी गतिविधियों को अंजाम देने की साजिश रची थी। आरोपियों का मकसद आईएसआईएस के एजेंडे को आगे बढ़ाते हुए भारत सरकार के खिलाफ हिंसा और आतंक के जरिए इस्लामिक शासन स्थापित करना था। इन दोनों आरोपियों पर पहले ही अन्य गिरफ्तार आरोपियों के साथ चार्जशीट दाखिल की जा चुकी है। वे पुणे के कोंढवा में अब्दुल्ला फैयाज शेख द्वारा किराए पर लिए गए एक मकान में आईईडी बनाने में शामिल थे। 2022-2023 के दौरान, इन्होंने बम बनाने और ट्रेनिंग के लिए एक वर्कशॉप का आयोजन किया था। साथ ही, इन्होंने अपने बनाए आइईडी की टेस्टिंग के लिए एक नियंत्रित विस्फोट भी किया था। एनआईए भारत में आईएसआईएस की गतिविधियों की सक्रिय रूप से जांच कर रही है ताकि इसके हिंसक और भारत-विरोधी आतंकी मंसूबों को नाकाम किया जा सके। इस मामले में पहले सभी 10 आरोपियों के खिलाफ यूएपीए, एक्सप्लोसिव सब्सटेंस एक्ट, आर्म्स एक्ट और आईपीसी की विभिन्न धाराओं के तहत चार्जशीट दाखिल की जा चुकी है। अब्दुल्ला फैयाज शेख और तल्हा खान के अलावा, इस मामले में गिरफ्तार अन्य आरोपियों के नाम मोहम्मद इमरान खान, मोहम्मद यूनुस साकी, अब्दुल कादिर पठान, सिमाब नासिरुद्दीन काजी, जुल्फिकार अली बरोदावाला, शमिल नाचन, अकीफ नाचन और शाहनवाज आलम हैं।

बस में घुसकर कंडक्टर पर चाकू से किया हमला

तिरुवनंतपुरम, 17 मई (एजेंसियां)। केरल की राजधानी तिरुवनंतपुरम में एक हैरान कर देने वाला मामला सामने आया है। यहां दिनदहाड़े एक शख्स पर आरोपी ने चाकू से हमला कर दिया। आरोपी ने कई बार शख्स पर चाकू से हमला किया। इसका वीडियो भी सामने आया है। बताया जा रहा है कि आपसी रंजिश के चलते आरोपी ने इस घटना को अंजाम दिया। वहीं पुलिस की टीम ने चाकू से हमला करने वाले आरोपी को गिरफ्तार भी कर लिया है। फिलहाल मामले की जांच की जा रही है। बता दें कि यह घटना एक बस में हुई, जो बस में ही लगे सीसीटीवी कैमरे में कैद हो गई। दरअसल, तिरुवनंतपुरम में एक बस के अंदर चाकूबाजी की घटना सामने आई है। इस घटना के दौरान आस-पास लोग भी मौजूद रहे, लेकिन किसी ने कोई हरकत नहीं की। ये घटना शहर के वेल्लाकोट्टा के पास हुई।

ओडिशा में तपस्विनी एक्सप्रेस पर पत्थरबाजी, एसी कोच के टूटे कांच

संबलपुर, 17 मई (एजेंसियां)। ओडिशा के संबलपुर और झारसुगुड़ा के बीच शनिवार की सुबह एक चौंकाने वाली घटना सामने आई। यहां पुरी-हटिया तपस्विनी एक्सप्रेस ट्रेन पर अज्ञात बदमाशों ने पत्थरबाजी की। यह घटना उस समय हुई जब अधिकांश यात्री गहरी नींद में थे। पत्थर ट्रेन के एसी कोच बी-7 की खिड़की पर लगा, जिससे खिड़की का शीशा चकनाचूर हो गया। यह घटना सुबह करीब 5:30 बजे रेंगाली और झारसुगुड़ा रेलवे स्टेशन के बीच हुई। पत्थर ठीक उस खिड़की पर आकर लगा जो सीट नंबर 15 के पास थी। पत्थरबाजी इतनी तेज थी कि खिड़की का कांच टूटकर अंदर बिखर गया। वहीं घटना के बाद यात्री जोरदार आवाज की वजह से जाग उठे और कोच अटेंडेंट व टिकट चेकर को इसकी जानकारी दी। सीट नंबर 15 पर बैठे यात्री पर इस घटना का गहरा असर पड़ा। तपस्विनी एक्सप्रेस के बी-7 कोच के अटेंडेंट ने बताया, सीट नंबर 15 पर बैठे यात्री इस घटना से बुरी तरह घबरा गए थे। उन्होंने मुझे बुलाकर बताया कि उन्हें एक तेज धमाके जैसी आवाज सुनाई दी, जैसे किसी ने गोली चलाई हो। खिड़की का शीशा पूरी तरह टूट चुका था और उनके ऊपर कांच के टुकड़े गिर पड़े थे। खिड़की पर एक जगह जोरदार टक्कर का निशान था, जिससे ऐसा लग रहा था जैसे किसी ने गोली मारी हो। हालांकि इस घटना में किसी यात्री को गंभीर चोट नहीं आई, लेकिन ट्रेन में सफर कर रहे अन्य यात्री भी इस घटना से दहशत में आ गए। तुरंत कोच अटेंडेंट ने संबंधित अधिकारियों को इसकी सूचना दी और यात्री को आवश्यक मदद व आगे की यात्रा के लिए उचित व्यवस्था दी गई।

सीसीपी नेताओं से राहुल गांधी की मुलाकात पर भाजपा ने उठाए सवाल

अमित मालवीय ने पूछा- आप किसकी तरफ

नई दिल्ली, 17 मई (एजेंसियां)। राहुल गांधी ने हाल ही में कॉर्डिनेशन कमेटी फॉर पीस (सीसीपी) के सदस्यों से मुलाकात की। भाजपा ने इस पर सवाल उठाए हैं। भाजपा नेता अमित मालवीय ने सोशल मीडिया पर साझा एक पोस्ट में राहुल गांधी के सीसीपी नेताओं से मुलाकात पर शंका जाहिर की। उन्होंने लिखा कि 'ऐसे समय में जब भारत नक्सलवाद के खिलाफ निर्णायक लड़ाई लड़ रहा है, ऐसे में राहुल गांधी का माओवादी समूह के शुभचिंतकों से मिलना, परेशान करने वाला है।' अमित मालवीय ने लिखा कि 'सुरक्षाबल नक्सलियों के खिलाफ ऑपरेशन कगार चला रहे हैं, जिसमें सीपीआई (माओवादी) कैडर को भारी नुकसान झेलना पड़ रहा है। ऐसे में कथित शांति समन्वय समिति (कॉर्डिनेशन कमेटी फॉर पीस) द्वारा कांग्रेस के समर्थन से सुरक्षाबलों और माओवादी उग्रवादियों के बीच संघर्ष विराम की कोशिश की जा रही है। सीसीपी के प्रतिनिधिमंडल ने 9 मई को नई दिल्ली में राहुल गांधी से मुलाकात की। सीसीपी प्रतिनिधिमंडल का आरोप है कि सरकार माओवादी विरोधी ऑपरेशन के जरिए आदवासी समुदाय को निशाना बना रही है। उन्होंने राहुल गांधी से दखल देने और संघर्षविराम कराने की अपील की है।' मालवीय ने दावा किया कि 'सीसीपी प्रतिनिधिमंडल ने सुझाव दिया कि कांग्रेस के नेतृत्व वाली तेलंगाना सरकार को भी शांति वार्ता के लिए संघर्षविराम के लिए जोर लगाना चाहिए। राहुल गांधी ने भी कथित तौर पर इस पर विचार करने का आश्वासन दिया है।' भाजपा नेता बताया कि सीसीपी के प्रतिनिधिमंडल में कविता श्रीवास्तव, रिटायर्ड प्रोफेसर जी हरगोपाल, रिटायर्ड जस्टिस चंद्र कुमार, भारत बचाओ के राष्ट्रीय उपाध्यक्ष डॉ। एमएफ गोपीनाथ, झारखंड जन अधिकार महासभा के दिनेश मुर्मू और लेखक मीना कांदासामी शामिल हैं। अमित मालवीय ने दावा किया कि यह शांति समन्वय समिति हाल ही में दिल्ली में गठित की गई और इसका उद्देश्य सरकार और सीपीआई नेतृत्व के बीच शांति वार्ता कराना है। भाजपा नेता अमित मालवीय ने सवाल उठाते हुए पूछा कि मिस्टर गांधी, जब हमारे सुरक्षाबल अपनी जान की बाजी लगाकर हिंसक उग्रवाद को तबाह करने की कोशिश कर रहे हैं। ऐसे में आप उनका साथ दे रहे हैं। आप वास्तर में किसकी तरफ हैं? देश को रक्षकों की तरफ या प्रतिबंधित उग्रवादी संगठन की तरफ। आपकी क्या प्राथमिकताएं हैं?

क्या है ऑपरेशन कगार

गृह मंत्रालय द्वारा शुरू किये गए ऑपरेशन कगार का उद्देश्य नक्सलियों को खत्म करना और माओवाद की राजनीतिक विचारधारा को खत्म करना है। इस अभियान में उन माओवादियों को भारी नुकसान हुआ है जिन्होंने सरकार के सामने आत्मसमर्पण करने से इनकार कर दिया है। इस ऑपरेशन के तहत सुरक्षाबलों के साथ मुठभेड़ में कई नक्सली मारे गए हैं।

पंजाब सरकार के हेलिकॉप्टर पर दिल्ली में राजनीति

सांसद बोलीं- पीला रंग देख केजरीवाल ने टैक्सी समझ लिया, भाजपा ने भी उठाए सवाल

चंडीगढ, 17 मई (एजेंसियां)। पंजाब सरकार के हेलिकॉप्टर को लेकर दिल्ली में राजनीति शुरू हो गई है। आम आदमी पार्टी की राज्यसभा सांसद स्वाति मालीवाल के अलावा भाजपा नेताओं ने भी आप संयोजक अरविंद केजरीवाल के पंजाब दौरे और सरकारी हेलिकॉप्टर के प्रयोग पर सवाल उठाए हैं। यह पूरा विवाद एक तस्वीर को लेकर शुरू हुआ है। सोशल मीडिया पर वायरल हुई तस्वीर में पंजाब सरकार के हेलिकॉप्टर में सीएम भगवंत मान के साथ अरविंद केजरीवाल एवं दिल्ली के पूर्व डिप्टी-सीएम मनीष सिसोदिया भी दिख रहे हैं। स्वाति मालीवाल ने अपने सोशल मीडिया अकाउंट पर पोस्ट कर लिखा- पंजाब सरकार का हेलिकॉप्टर पीले रंग का था, केजरीवाल जी ने इसे टैक्सी ही समझ लिया...। उनकी इस पोस्ट के बाद अब एक-एक कर विपक्षीय दलों के नेता भी आम आदमी पार्टी की सरकार को घेर रहे हैं।

अरविंद केजरीवाल को बार-बार घेर रही स्वाति मालीवाल

यूं तो स्वाति आम आदमी पार्टी की ही राज्यसभा सांसद हैं, लेकिन वे लगातार आप नेताओं व सुप्रीमो अरविंद केजरीवाल को घेरती हैं। समाजसेविका स्वाति का विवाद तब सामने आया था, जब उन्होंने सुप्रीमो अरविंद केजरीवाल की सिक्योरिटी पर उन्हें धक्के मारने के आरोप लगाए थे। जिसके बाद से अभी तक स्वाति लगातार आम आदमी पार्टी के नेताओं को घेरती आ रही हैं।

THE LARGEST CIRCULATED AND READ HINDI DAILY IN TELANGANA & ANDHRA PRADESH

स्वतंत्र वार्ता

मेरा हैदराबाद

सु वि चा र

समस्याओं के हाल आपके पास ही हैं बस उसे खोजने पर ध्यान दो ।

तेलंगाना का लक्ष्य 1 करोड़ महिलाओं को करोड़पति बनाना है : सीएम रेवंत

हैदराबाद, 17 मई (स्वतंत्र वार्ता)। मुख्यमंत्री ए रेवंत रेड्डी ने घोषणा की कि राज्य सरकार महिलाओं को सशक्त बनाने पर केंद्रित कई पहल शुरू कर रही है, जिसका लक्ष्य एक करोड़ महिलाओं को करोड़पति बनाना है।

मुख्यमंत्री ने शनिवार को जुबली हिल्स स्थित जेआरसी कन्वेंशन सेंटर में आयोजित एक भव्य समारोह में डब्ल्यूई हब- महिला त्वरण और जमीनी स्तर पर युवा नवाचार कार्यक्रम का अनावरण किया। इस अवसर पर बोलते हुए उन्होंने कहा कि राज्य सरकार महिलाओं को उद्यमी बनने के लिए प्रोत्साहित कर रही है और महिला समूहों को पेट्रोल पंप खोलकर और खुद सौर ऊर्जा उत्पादन करके एक मजबूत व्यापारिक समुदाय के रूप में बढ़ावा दिया जा रहा है। रेवंत रेड्डी ने कहा, सरकार का दृढ़ विश्वास है कि राज्य आर्थिक रूप से तभी समृद्ध होगा जब महिलाएं सशक्त होंगी और आत्मसम्मान के साथ जिएंगी।

सरकार ने पहले ही महिला समूह को 1000 मेगावाट सौर ऊर्जा उत्पादन व्यवसाय सौंप दिया है। अब अगर महिलाएं कुशलतापूर्वक प्रबंधन करती हैं तो सरकार उन्हें 1000 मेगावाट सौर ऊर्जा उत्पादन का और काम देने के लिए तैयार है। उन्होंने याद दिलाया कि कुछ कॉरपोरेट दिग्गज 16 लाख करोड़ रुपये के बैंक ऋण लेकर देश से भाग गए, जबकि महिला समूह बिना किसी देरी के ब्याज और बकाया राशि के साथ ऋण चुका रहे हैं। महिलाएं वित्तीय अनुशासन का पर्याय हैं। उन्होंने कहा कि राज्य सरकार महिला स्वयं सहायता समूहों की संख्या एक करोड़ तक बढ़ाने के प्रयास कर रही है और उन्हें आगे बढ़ने के लिए प्रोत्साहित करने के लिए तैयार है। मुख्यमंत्री ने आगे कहा कि राज्य सरकार महिला समूहों द्वारा उत्पादित उपहारों को तेलगाना की यात्रा के दौरान विदेशी प्रतिनिधियों और अन्य मेहमानों को भेंट कर रही है।

रेवंत रेड्डी ने कहा, मेरी सरकार की नीति महिला समुदाय को बढ़ावा देना और उन्हें सशक्त बनाना है। मैं अधिकारियों को निर्देश दे रहा हूं कि वे शहरी क्षेत्रों में महिलाओं को स्वयं सहायता समूहों में शामिल करने के लिए एक विशेष अभियान आयोजित करें ताकि एक करोड़ महिलाओं को करोड़पति बनाने का लक्ष्य हासिल किया जा सके।

श्रीधर बाबू को बड़ी राहत, कोर्ट ने उनके खिलाफ गैर-जमानती मामला खारिज किया

हैदराबाद, 17 मई (स्वतंत्र वार्ता)। आईटी और उद्योग मंत्री श्रीधर बाबू को नामपल्ली पब्लिक रिप्रेजेंटेटिव कोर्ट में बड़ी राहत मिली है। कलेश्वरम परियोजना भूमि अधिग्रहण मामले में श्रीधर बाबू और 13 अन्य के खिलाफ दर्ज गैर-जमानती मामले को कोर्ट ने शनिवार को खारिज कर दिया। 23 अगस्त, 2017 को पुलिस ने श्रीधर बाबू के खिलाफ पेद्दापल्ली जिले के बसंत नगर पुलिस स्टेशन में कालेश्वरम परियोजना के लिए जन सुनवाई के दौरान अधिकारियों के काम में बाधा डालने के आरोप में गैर-जमानती मामला दर्ज किया था। श्रीधर बाबू और अन्य लोगों के खिलाफ एफआईआर दर्ज की गई थी। करीब आठ साल से चल रहे इस मामले को नामपल्ली पब्लिक रिप्रेजेंटेटिव कोर्ट ने उचित सबूतों और गवाहों के अभाव में खारिज कर दिया। इस अवसर पर बोलते हुए मंत्री श्रीधर बाबू ने कहा कि यह लोगों, खासकर किसानों की जीत है। उन्होंने कहा, न्यायपालिका ने हाशिए पर पड़े किसानों की दुर्दशा को समझा है और यह फैसला न्याय व्यवस्था में हमारे विश्वास को और मजबूत करता है।

मंत्रियों ने अनाथ बच्चों को आरोग्यश्री स्वास्थ्य कार्ड सौंपे

हैदराबाद, 17 मई (स्वतंत्र वार्ता)। पंचायत राज मंत्री सीतक्का और परिवहन मंत्री पोन्नम प्रभाकर ने शिशु विहार में रहने वाले अनाथ बच्चों को आरोग्यश्री स्वास्थ्य कार्ड प्रदान किए।

शनिवार को बेगमपेट के टूरिज्म प्लाजा में आयोजित एक कार्यक्रम में मंत्री सीतक्का ने कहा कि अनाथ बच्चों को आरोग्यश्री कार्ड प्रदान करना एक अभूतपूर्व पहल है, जो परिवार के बिना बड़े होने की कठिनाई को संबोधित करती है। वर्तमान में, माता-पिता के बिना सभी बच्चों को सरकारी बच्चे माना जाता है। हमने अनाथ बच्चों को आरोग्यश्री कार्ड देने का फैसला किया है। सरकारी अधिकारी इन कार्डों को वितरित करके माता-पिता की भूमिका निभा रहे हैं। उन्होंने कहा, पहली बार, राज्य सरकार हैदराबाद में 2,200 अनाथ बच्चों को आरोग्यश्री स्वास्थ्य कार्ड जारी कर रही है, और भविष्य में इस पहल को पूरे तेलंगाना में विस्तारित करने की योजना है।

कार्यक्रम के बाद, मंत्री सीतक्का और पोन्नम प्रभाकर ने अन्य विशिष्ट अतिथियों के साथ अनाथ बच्चों के साथ भोजन किया। सांसद अनिल कुमार यादव, जीएचएमसी मेयर गडवाला विजयलक्ष्मी, उप मेयर मोथे श्रीलता, हैदराबाद कलेक्टर अनुदीप दुरशेट्टी, महिला एवं बाल कल्याण सचिव अनीता रामचंद्रन और निदेशक कांथी वेस्ले मौजूद थे।

तेलंगाना जागृति ने की प्रमुख संगठनात्मक नियुक्तियों की घोषणा

हैदराबाद, 17 मई (स्वतंत्र वार्ता)। तेलंगाना जागृति ने अपने संचालन को मजबूत करने और अपने उद्देश्यों को आगे बढ़ाने के लिए संगठन के विभिन्न विंगों में नई नियुक्तियों की घोषणा की है। नवनियुक्त संयोजकों से संगठन को मजबूत बनाने और इसके विजन को आगे बढ़ाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाने की उम्मीद है। उनकी नियुक्तियां तत्काल प्रभाव से लागू होंगी। नई नियुक्तियों में मारिपेली माधवी को तेलंगाना जागृति महिला फेडरेशन के राज्य संयोजक के रूप में, एडुरुगट्टू संपत गौड़ को तेलंगाना जागृति यूथ फेडरेशन के राज्य संयोजक के रूप में, अप्पाला नरेंद्र यादव को तेलंगाना जागृति लीगल सेल के राज्य संयोजक के रूप में, जे रामू यादव को तेलंगाना जागृति स्टूडेंट फेडरेशन के राज्य संयोजक के रूप में और प्रकला मनोज गौड़ को तेलंगाना जागृति यूथ फेडरेशन (हैदराबाद विंग) के संयोजक के रूप में शामिल किया गया है।

'एक राष्ट्र-एक चुनाव' कार्यक्रम निरंतर जारी रहेगा : भाजपा एमएलसी

हैदराबाद, 17 मई (स्वतंत्र वार्ता)। पूर्व भाजपा एमएलसी एन. रामचंदर राव ने आज कहा कि 'एक राष्ट्र-एक चुनाव' कार्यक्रम पूरे भारत में जारी रहेगा और उन्होंने कहा कि इस कार्यक्रम के लिए जनता का समर्थन हासिल करने के लिए राजनेता, वकील, डॉक्टर और इंजीनियर सहित विभिन्न क्षेत्रों की प्रमुख हस्तियां इसमें भाग ले रही हैं। अब तक पूरे राज्य में लगभग 500 बैठकें और समूह बैठकें आयोजित की जा चुकी हैं। ये जिला स्तर पर भी सफलतापूर्वक जारी हैं।

प्रदेश पार्टी कार्यालय में पत्रकारों को संबोधित करते हुए उन्होंने कहा कि 18 मई को शहर के कटरिया होटल में होने वाले 'एक राष्ट्र-एक चुनाव के लिए पेशेवर' कार्यक्रम में केंद्रीय मंत्री शिवराज सिंह चौहान, केंद्रीय मंत्री किशन रेड्डी, भाजपा के राष्ट्रीय महासचिव सुनील बंसल, एक राष्ट्र-एक चुनाव कार्यक्रम के राष्ट्रीय प्रभारी अनिल के. एंटनी भाग लेंगे। एक राष्ट्र-एक चुनाव कोई नई अवधारणा नहीं है। 1952 से 1967 तक देश में लोकसभा और विधानसभा चुनाव एक साथ होते थे। इसके बाद कांग्रेस पार्टी ने राज्यपाल के पद का दुरूपयोग किया और संविधान के खिलाफ चुनाव रद्द करना शुरू कर दिया। इससे ऐसी स्थिति पैदा हो गई है कि हर दो से तीन महीने में किसी न किसी राज्य में चुनाव होते हैं। नैतिक संहिता के संदर्भ में विकास पूरी तरह से रुक जाता है। उन्होंने कहा कि भारत अब दुनिया की चौथी सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था बन गया है उन्होंने कहा, रामनाथ कोविंद समिति की रिपोर्ट के अनुसार, यह सुझाव दिया गया है कि स्थानीय निकाय चुनाव भी निर्धारित तिथि के 100 दिनों के भीतर पूरे कर लिए जाने चाहिए।

टीपीएफ ने सरकार से क्षेत्रीय प्रणाली को समाप्त करने का आग्रह किया

हैदराबाद, 17 मई (स्वतंत्र वार्ता)। तेलंगाना पोल्ट्री फेडरेशन ने राज्य सरकार से क्षेत्रीय प्रणाली को समाप्त करने और नए बनाए गए 33 जिलों के आधार पर चिकन अंडे के टेंडर आवंटित करने का आग्रह किया है। शनिवार को शहर में राष्ट्रीय अंडा समन्वय समिति कार्यालय में आयोजित मीडिया सम्मेलन में बोलते हुए, तेलंगाना पोल्ट्री फेडरेशन के अध्यक्ष मोहन रेड्डी, महासचिव भास्कर राव, एनईसीसी के अध्यक्ष गुर्रम शेखर रेड्डी, उपाध्यक्ष बालकृष्ण रेड्डी, अंडा केंद्रीय समिति के सदस्य कासिरेड्डी नारायण रेड्डी और कोषाध्यक्ष कोंडल राव ने आरोप लगाया कि अधिकारी यह सुनिश्चित करने की कोशिश कर रहे हैं कि केवल पांच पोल्ट्री किसानों को ही टेंडर मिले, जबकि पूरे राज्य में 1267 से अधिक पोल्ट्री किसान हैं। उन्होंने यह भी आरोप लगाया कि पिछली सरकार के दौरान, तेलंगाना पोल्ट्री फेडरेशन ने सरकार से क्षेत्रीय प्रणाली को समाप्त करने और 33 जिलों को चिकन अंडे के टेंडर आवंटित करने का आग्रह किया था।

तेलंगाना पोल्ट्री फेडरेशन के अध्यक्ष मोहन रेड्डी, महासचिव भास्कर राव, एनईसीसी के अध्यक्ष गुर्रम शेखर रेड्डी, उपाध्यक्ष बालकृष्ण रेड्डी, अंडा केंद्रीय समिति के सदस्य कासिरेड्डी नारायण रेड्डी और कोषाध्यक्ष कोंडल राव ने आरोप लगाया कि अधिकारी यह सुनिश्चित करने की कोशिश कर रहे हैं कि केवल पांच पोल्ट्री किसानों को ही टेंडर मिले, जबकि राज्य भर में 1267 से अधिक पोल्ट्री किसान हैं। उन्होंने यह भी आरोप लगाया कि राज्य सरकार द्वारा चुने गए पांच पोल्ट्री किसान पड़ोसी राज्यों से अंडे लाकर राज्य की आंगनवाड़ियों को घटिया अंडे की आपूर्ति करते हैं। उन्होंने कहा कि राज्य में हाल ही में बर्ड फ्लू के प्रकोप के कारण पोल्ट्री किसानों को गंभीर नुकसान हुआ है और कहा कि राज्य सरकार को उनकी सहायता के लिए कदम उठाने चाहिए और टेंडरों में अनियमितताओं को रोकना चाहिए। उन्होंने आंगनवाड़ी योजना के तहत चिकन अंडे के लिए टेंडरिंग की प्रक्रिया को रोकने के लिए सरकार को धन्यवाद दिया। उन्होंने कहा कि वे आंगनवाड़ियों को पिछली दरों की तुलना में सस्ती दरों पर गुणवत्ता वाले अंडे की आपूर्ति करेंगे। उन्होंने कहा कि नलगोंडा के सांसद रघुवीर रेड्डी और नागार्जुन सागर के विधायक जयवीर रेड्डी, जो अपने नुकसान के खिलाफ लड़ रहे हैं, के खिलाफ लगाए गए आरोप झूठे हैं और उन्होंने इसकी कड़ी निंदा की।

उन्होंने कहा कि आंगनवाड़ियों को अंडे की आपूर्ति निविदाओं में 10 जिलों के आधार पर आवंटित की जानी चाहिए यदि संभव नहीं है, तो इसे 33 जिलों के आधार पर किया जाना चाहिए। उन्होंने चेतावनी दी कि यदि सरकार पोल्ट्री किसानों के समर्थन के लिए कदम नहीं उठाती है, तो वे राज्य के सभी पोल्ट्री किसानों के साथ मिलकर विरोध कार्यक्रम आयोजित करेंगे।

पोल्ट्री किसान सुधाकर रेड्डी, रंगा रेड्डी, वेंकट रेड्डी, तिरुपति रेड्डी, राजेंद्र रेड्डी, साई कृष्णा, मोहन रेड्डी, और अन्य ने भी कार्यक्रम में भाग लिया।

जीएम/एससीआर ने वारंगल, पेद्दापल्ली और करीमनगर रेलवे स्टेशनों का निरीक्षण किया

हैदराबाद, 17 मई (स्वतंत्र वार्ता)। दक्षिण मध्य रेलवे के महाप्रबंधक अरुण कुमार जैन ने शनिवार को सिकंदराबाद मंडल के वारंगल, पेद्दापल्ली और करीमनगर रेलवे स्टेशनों का विस्तृत निरीक्षण किया। निरीक्षण के दौरान उनके साथ सिकंदराबाद मंडल के मंडल रेल प्रबंधक भारतेश कुमार जैन और मुख्यालय और मंडल के अन्य वरिष्ठ अधिकारी मौजूद थे। अरुण कुमार जैन ने 1.5 करोड़ रुपये की लागत से पुनर्विकसित वारंगल रेलवे स्टेशन का निरीक्षण शुरू किया। महाप्रबंधक ने अमृत भारत स्टेशन योजना (एबीएसएस) के तहत 25.41 करोड़ रुपये की लागत से निर्मित नव विकसित यात्री सुविधाओं, स्टेशन परिसंपत्तियों, नव निर्मित 12 मीटर फुट ओवर ब्रिज, लिफ्टों, एस्केलेटर, स्वचालित टिकट वेंडिंग मशीनों (एटीवीएम), बुकिंग कार्यालय, स्टेशन के अग्रभाग और परिचालित क्षेत्र का निरीक्षण किया। उन्होंने अधिकारियों को व्यस्त समय के दौरान सुरक्षित और सुचारू यातायात प्रवाह सुनिश्चित करने के लिए अपनाए जाने वाले सुरक्षा उपायों के बारे में भी निर्देश दिए। उन्होंने अधिकारियों को स्टेशन भवन की साफ-सफाई और स्टेशन परिसंपत्तियों के रखरखाव पर ध्यान देने के भी निर्देश दिए। बाद में महाप्रबंधक ने पेद्दापल्ली रेलवे स्टेशन का निरीक्षण किया, जहां उन्होंने यात्री सुविधाओं, स्टेशन मास्टर कार्यालय और परिचालित क्षेत्र की समीक्षा की। उन्होंने अमृत भारत स्टेशन योजना के तहत 26.49 करोड़ रुपये की लागत से पेद्दापल्ली स्टेशन पर चल रहे पुनर्विकास कार्यों की प्रगति की भी समीक्षा की। महाप्रबंधक ने क्षेत्र में रेल विकास योजनाओं से संबंधित स्टेशन पर जनप्रतिनिधियों से अभिवेदन भी प्राप्त किए। इसके अलावा, अरुण कुमार जैन ने करीमनगर रेलवे स्टेशन का विस्तृत निरीक्षण किया, जिसे 25.85 करोड़ रुपये की लागत से अमृत स्टेशन के रूप में पुनर्विकसित किया गया है, जिसमें उन्होंने यात्री सुविधाओं, स्टेशन प्रतीक्षालय क्षेत्र, बुकिंग कार्यालय, प्लेटफार्मों पर एस्केलेटर और पेयजल सुविधाओं की कार्यप्रणाली, स्टेशन के अग्रभाग और परिसंचारी क्षेत्र आदि की समीक्षा की। महाप्रबंधक ने क्षेत्र में रेल विकास के संबंध में जन प्रतिनिधियों से भी प्रतिनिधित्व प्राप्त किया।

काडेम जलग्रहण क्षेत्रों में बाढ़ को रोकने के लिए उपाय करेंगे : अरविंद कुमार

सरकार के विशेष मुख्य सचिव ने काडेम परियोजना का निरीक्षण किया

हैदराबाद, 17 मई (स्वतंत्र वार्ता)। राज्य सरकार के विशेष मुख्य सचिव अरविंद कुमार ने कहा कि कदम नदी के जलग्रहण क्षेत्रों को बाढ़ से बचाने के लिए आवश्यक कदम उठाए जाएंगे। शनिवार को अपने जिला दौरे के दौरान उन्होंने काडेम परियोजना का दौरा किया तथा गेटों की कार्यप्रणाली और बाढ़ नियंत्रण व्यवस्था की समीक्षा की। इस अवसर पर विशेष सचिव ने एनडीआरएफ के डिप्टी कमांडर दामोदर सिंह और जिला कलेक्टर अभिलाषा अभिनव के साथ परियोजना में आयोजित व्यापक समीक्षा में भाग लिया। जिला कलेक्टर ने बताया कि परियोजना में जल स्तर बढ़ने पर गेट खोलने की प्रक्रिया में हुई त्रुटियों के कारण पहले भी खतरनाक स्थितियाँ उत्पन्न हो चुकी हैं। इस पर प्रतिक्रिया देते हुए अरविंद कुमार ने अधिकारियों को ऐसी स्थिति की पुनरावृत्ति रोकने के लिए उचित कदम उठाने का आदेश दिया। उन्होंने कहा कि कडेम और दस्तूराबाद मंडलों के 10 से 12 बाढ़ संभावित गांवों में बेहतर अलार्म प्रणाली स्थापित की जाएगी। यह सुझाव दिया गया कि सिंचाई विभाग भारी बारिश के दौरान बाढ़ के पानी को प्रभावी ढंग से नियंत्रित करने के लिए एक विशेष कार्यक्रम तैयार करे। इसके बाद विशेष सचिव ने परियोजना प्रबंधन का निरीक्षण करते हुए इंजीनियरिंग अधिकारियों को कई महत्वपूर्ण सुझाव दिए। अपर समाहर्ता फैजान अहमद, आरडीओ रत्ना कल्याणी, एस.ई. इस दौरे में रवींद्र, ई.ई. विठ्ठल, तहसीलदार प्रभाकर, सरफराज, एमपीडीओ अरुणा और अन्य शामिल हुए।

यूनिफाइड काउंसिल के वार्षिक पुरस्कार समारोह में सीतक्का ने यंग माइंड्स को सम्मानित किया

हैदराबाद, 17 मई (स्वतंत्र वार्ता)। यूनिफाइड काउंसिल ने यहां रवींद्र भारती में अपना वार्षिक पुरस्कार समारोह, 2025 मनाया, जिसमें राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय ओलंपियाड की श्रृंखला में शीर्ष प्रदर्शन करने वाले छात्रों को सम्मानित किया गया। इनमें राष्ट्रीय स्तर की विज्ञान प्रतिभा खोज परीक्षा (एनएसटीएसई), यूनिफाइड साइबर ओलंपियाड (यूसीओ), यूनिफाइड इंटरनेशनल इंग्लिश ओलंपियाड (यूआईईओ), यूनिफाइड इंटरनेशनल मैथमेटिक्स ओलंपियाड (यूआईएमओ) और यूनिफाइड इंटरनेशनल जनरल नॉलेज ओलंपियाड (यूआईजीकेओ) शामिल थे। मुख्य अतिथि सीतक्का, ग्रामीण विकास, पंचायत राज और महिला एवं बाल कल्याण मंत्री ने समारोह की अध्यक्षता की और उपलब्धि हासिल करने वालों को सम्मानित किया। उनके साथ सहज संधू (स्टार्टअप और एमएसएमई विकास, टी-वर्क्स), के.वी. प्रदीप (अभिनेता और प्रेरक वक्ता), डॉ.बी.वी. पट्टाभिराम (प्रख्यात मनोवैज्ञानिक और एचआरडी प्रशिक्षक) और गम्पा नागेश्वर राव (मनोवैज्ञानिक और नेतृत्व कोच) ने युवा उपलब्धि हासिल करने वालों को पुरस्कार भी प्रदान किए। यूनिफाइड काउंसिल के सीईओ श्रीनिवास कल्लुरी ने मीडिया को संबोधित करते हुए कहा, 26 वर्षों से अधिक की विरासत के साथ, यूनिफाइड काउंसिल भारत की सबसे बड़ी ओलंपियाड आयोजित करने वाली संस्था बन गई है। हमारा ध्यान अच्छी तरह से डिज़ाइन किए गए आकलन के माध्यम से स्कूली छात्रों के बीच वैचारिक समझ और प्रतिस्पर्धी तत्परता को बढ़ाने पर है। उन्होंने कहा, हमारी परीक्षाएं छात्रों की वैचारिक स्पष्टता, विश्लेषणात्मक सोच, अनुप्रयोग क्षमताओं और समस्या-समाधान योग्यता का मूल्यांकन करने के लिए डिज़ाइन की गई हैं। देश भर के 250 शीर्ष रैंकर्स को सम्मानित किया गया।

अधिकारियों से नकली दवाओं पर आक्रामक कार्रवाई शुरू करें : शाहनवाज कासिम

हैदराबाद, 17 मई (स्वतंत्र वार्ता)। तेलंगाना के औषधि नियंत्रण प्रशासन महानिदेशक शाहनवाज कासिम, आईपीएस ने प्रवर्तन अधिकारियों का राज्य स्तरीय सम्मेलन आयोजित किया। अधिकारियों को नकली और नकली दवाओं पर आक्रामक कार्रवाई शुरू करने का निर्देश दिया गया। आदत बनाने वाली दवाओं की अंधाधुंध बिक्री में लिप्त लोगों के खिलाफ सख्त कार्रवाई की जाएगी, ऐसे गंभीर अपराधों के प्रति शून्य सहिष्णुता बरती जाएगी। लोगों को गुमराह करने वाले और सार्वजनिक स्वास्थ्य को नुकसान पहुंचाने वाले रोगों और विकारों से संबंधित भ्रामक विज्ञापनों के प्रकाशन या प्रचार में शामिल व्यक्तियों के खिलाफ भी सख्त कार्रवाई की जाएगी। तेलंगाना के औषधि नियंत्रण प्रशासन महानिदेशक शाहनवाज कासिम ने 17 मई, 2025 को डी.सी.ए. के मुख्यालय में राज्य स्तरीय सम्मेलन आयोजित किया, जिसमें राज्य भर के औषधि निरीक्षकों, सहायक निदेशकों और उप निदेशकों सहित विभाग के सभी प्रवर्तन अधिकारी शामिल हुए। सम्मेलन के दौरान महानिदेशक ने चल रही प्रवर्तन गतिविधियों की समीक्षा की और अधिकारियों को स्पष्ट निर्देश दिए कि वे बाजार में नकली दवाओं के प्रचलन को रोकने के लिए औचक छापेमारी तेज करें और निरंतर निगरानी रखें। अधिकारियों को स्पष्ट रूप से नकली दवाओं के निर्माण, वितरण और बिक्री में शामिल नेटवर्क को नष्ट करने का निर्देश दिया गया। ड्रग्स इंस्पेक्टरों को आदतन अपराधियों पर कड़ी निगरानी रखने और प्रवर्तन कार्यों के प्रभावी निष्पादन के लिए जब भी आवश्यक हो पुलिस सहायता लेने का निर्देश दिया गया। यह निर्देश दिया गया कि आदत बनाने वाली दवाओं के दुरूपयोग पर अंकुश लगाना ड्रग्स कंट्रोल एडमिनिस्ट्रेशन, तेलंगाना के लिए सर्वोच्च प्राथमिकता का मामला है। अधिकारियों को पूरे राज्य में ऐसी दवाओं की अंधाधुंध बिक्री और दुरूपयोग को रोकने के लिए ठोस प्रयास करने का निर्देश दिया गया। तेलंगाना को नशा मुक्त राज्य बनाने के मुख्यमंत्री के दृष्टिकोण और दृढ़ संकल्प के साथ, निषेध और आबकारी विभाग के साथ प्रभावी समन्वय के माध्यम से नारकोटिक ड्रग्स और साइकोट्रोपिक पदार्थों के दुरूपयोग को रोकने के लिए कड़ी कार्रवाई की जाएगी। औषधि निरीक्षक बिक्री केन्द्रों पर औचक छापेमारी जारी रखेंगे, जिसमें अनिवार्य रूप से क्यूआर कोड सत्यापन और नकली दवाओं के खिलाफ सतर्कता को मजबूत करने के लिए उन्नत निगरानी उपाय शामिल होंगे, जिससे सार्वजनिक स्वास्थ्य और सुरक्षा सुनिश्चित होगी। इसके अलावा, अधिकारियों को जनता को गुमराह करने वाले रोगों और विकारों से संबंधित विज्ञापनों के प्रकाशन या प्रचार में शामिल व्यक्तियों के खिलाफ कड़ी कार्रवाई करने का निर्देश दिया गया। महानिदेशक ने इस बात पर जोर दिया कि प्रत्येक अधिकारी को सार्वजनिक स्वास्थ्य की सुरक्षा में अपनी जिम्मेदारी को पहचानना चाहिए और अपराधों का सावधानीपूर्वक पता लगाना चाहिए। जनता दवाओं से संबंधित अवैध गतिविधियों के बारे में कोई भी शिकायत औषधि नियंत्रण प्रशासन, तेलंगाना टोल-फ्री नंबर 1800-599-6969 के माध्यम से दर्ज कर सकती है, जो सभी कार्य दिवसों में सुबह 10.30 बजे से शाम 5 बजे तक चालू रहता है।

|| जय जिनेन्द्र || || श्री गणेशाय नमः || || आई माता ||
राजस्थान के सुप्रसिद्ध ज्योतिष और वास्तु शास्त्र के
गोल्ड मेडल विजेता 100% गारन्टी
श्री गणेश ज्योतिष
मोबाइल नं.: 7400240996, 9494993526
(गणेश उपासक)

Famous in India & US-UK
सचोट भविष्य व मार्गदर्शन
व्यापार मे लाभ, लव प्रॉब्लम, बीमारी, लग्न विलंब, फेमिली प्रॉब्लम, विदेश योग, रियल इस्टेट, भूत-प्रेत बाधा, डाकिन छेड़ा लाग पिण्डा, कालसर्प-पितृदोष, शार्पित दोष, हवन मुहूर्त, राशिरत्न, अंगूठी कुण्डली, कर्मकांड, पूजा-पाठ द्वारा जीवन का कोई भी समाधान स्पेश्यालिस्ट
कुंडली, भाग्यरेखा, फोटो देखकर जीवन की कोई भी समस्या का समाधान शास्त्रों अनुसार करवाने के लिए सम्पर्क करे
: दक्षिणा : ₹.500/-
समय: सुबह 9-00 बजे से शाम 7 बजे तक
(कोई भी बात गुप्त रहेगी)
स्थान: प्लॉट नं. 4/909, मरथन्डा नगर, टी.वी.एस. शोरुम के पास, न्यू हाफिसपेट, मियापुर रोड़, हैदराबाद, तेलंगाना
(हैदराबाद, मुम्बई, चेन्नई, अहमदाबाद)
P.Solankey

लालू यादव के घर की होगी कुर्की

सिवान कोर्ट के बुलावे को हल्के में लेना आरजेडी चीफ को पड़ा भारी

सिवान, 17 मई (एजेंसियां)। राष्ट्रीय जनता दल (आरजेडी) प्रमुख लालू प्रसाद यादव की परेशानी बढ़ गई है। सिवान की एक अदालत ने उनकी संपत्ति जब्त करने का आदेश दिया है। यह आदेश 2011 के एक मामले से जुड़ा है। लालू यादव पर चुनाव के दौरान नियमों को तोड़ने का आरोप है। अदालत ने यह फैसला उनकी लगातार गैरहाजिरी के कारण लिया है। 2011 में लालू यादव पर आचार संहिता का उल्लंघन करने का आरोप है।

यह मामला सिवान के दारौंदा में एक सभा को संबोधित करने से जुड़ा है। उस समय धारा 144 लागू थी। इसका मतलब है कि वहां सभा करने और माइक का इस्तेमाल करने की अनुमति नहीं थी। लेकिन लालू यादव ने फिर भी सभा को संबोधित किया। अदालत ने इस मामले में लालू यादव को कई बार नोटिस भेजा, लेकिन वह पेश नहीं हुए। उनकी लगातार अनुपस्थिति को देखते हुए, सिवान की एसीजेएम प्रथम अदालत ने कुर्की जब्ती की प्रक्रिया शुरू करने का आदेश दिया है।

इसका मतलब है कि अदालत उनकी संपत्ति को जब्त कर सकती है। कोर्ट ने कहा, 'इसी मामले में उनकी लगातार अनुपस्थिति को देखते हुए एसीजेएम प्रथम सिवान की अदालत ने कुर्की जब्ती की प्रक्रिया जारी करने का आज आदेश पारित किया है।' इस मामले की अगली सुनवाई 30 मई को होगी।

महिला का शव खेत में मिलने से सनसनी

बरेली, 17 मई (एजेंसियां)। उत्तर प्रदेश के बरेली स्थित बिथरी चैनपुर थाना क्षेत्र में एक महिला का शव खेत में मिलने से सनसनी मच गई है। इस दौरान स्थानीय पुलिस ने मामले की जांच शुरू की है। कुछ लोगों को हिरासत में लिया गया है। एसपी नॉर्थ बरेली के मुकेश मिश्रा ने बताया कि बिथरी चैनपुर थाना क्षेत्र के गांव नवदिया हरकिशन में एक महिला का शव खेत में मिला है। महिला की उम्र 58 वर्ष थी, उनका नाम हरप्यारी पत्नी रामकुमार है। उनका शव गांव के रुकम सिंह के खेत पर पड़ा मिला है। स्थानीय पुलिस और अधिकारियों द्वारा मौके पर पड़ताल की गई। शव को कब्जे में लेकर पोस्टमार्टम के लिए भेजा गया है। उन्होंने बताया कि प्रथम दृष्टया देखने पर शव के गले और सिर पर कटे के निशान हैं।

मथुरा में पकड़े गए 90 बांग्लादेशी ईंट-भट्ठे पर मजदूरी करते थे सब

मथुरा, 17 मई (एजेंसियां)। मथुरा के थाना नौहझील की पुलिस ने ईंट-भट्ठों पर मजदूरी कर रहे महिला-पुरुष व बच्चों सहित 90 बांग्लादेशियों को हिरासत में लिया है। सत्यापन के दौरान इनकी नागरिकता का पता चला। पुलिस उनसे पूछताछ में जुटी है। नौहझील थाना क्षेत्र में सैकड़ों ईंट-भट्ठा संचालित किए जाते हैं।

इन भट्ठों पर बिहार, मध्यप्रदेश, असम सहित अन्य राज्यों के लोग मजदूर के रूप में ईंट-पताई का काम करते हैं। पिछले दिनों हुई क्राइम मीटिंग में वरिष्ठ पुलिस अधीक्षक श्लोक कुमार ने मजदूरों के सत्यापन के आदेश दिए थे। इस आदेश के बाद ही सत्यापन का कार्य मिशन स्तर पर चलाया गया। शुक्रवार को खुफिया विभाग और पुलिस को सत्यापन के दौरान गांव खाजपुर स्थित मोदी ईंट भट्ठे की झुग्गी-झोपड़ियों में कुछ संदिग्ध मजदूर दिखे थे। पुलिस ने जब पूछताछ की तो मजदूरों ने अपना घर बंगाल बताया। लेकिन वे स्पष्ट पता नहीं बता पा रहे थे। फिर पुलिस इनके साथ सख्ती से पेश आई। इसके बाद मजदूरों ने खुद को बांग्लादेशी मुस्लिम के रूप में स्वीकार किया। इन बांग्लादेशी मजदूरों ने बताया कि क्षेत्र के गांव जरैलिया-सेऊपट्टी स्थित आरपीएस ईंट उद्योग पर भी उनके कुछ साथी कार्य कर रहे हैं। पुलिस को वहां भी बांग्लादेशी मिल मिले। पुलिस ने दोनों भट्ठों से 35 पुरुष, 27 महिलाएं, 28 बच्चे सहित 90 बांग्लादेशियों को हिरासत में लिया है। पूछताछ के दौरान मजदूरों ने बताया कि वे 10-15 वर्ष पहले भारत आ गए थे। यहां हरियाणा, गाजियाबाद, नोएडा, दिल्ली, अलीगढ़ में काम करते रहे। 6-7 महीने से यहां पताई का कार्य कर रहे हैं। वरिष्ठ पुलिस अधीक्षक श्लोक कुमार ने बताया कि पकड़े गए बांग्लादेशी लोगों के खिलाफ एफआईआर दर्ज कर कार्रवाई की जा रही है। अन्य सुरक्षा और जांच एजेंसियों को भी सूचना दी गई है।

भारत में बड़े स्तर पर बांग्लादेशी नागरिक अपनी पहचान छुपाकर अनेक राज्यों में रह रहे हैं। केंद्र सरकार बड़े स्तर पर इनकी पहचान करने का अभियान पूरे देश में चला रही है। बिहार, बंगाल, दिल्ली, असम और उत्तर-पूर्वी राज्यों में बांग्लादेशी नागरिकों की बड़ी मात्रा में अपनी पहचान छुपाकर रहने का अनुमान है।

25 लाख की ठगी में अंतरराज्यीय ठग गिरोह का सदस्य गिरफ्तार

बंगाल पुलिस आरोपी को ले गई अपने साथ

दरभंगा, 17 मई (एजेंसियां)। दरभंगा के बहादुरपुर थाना पुलिस ने पश्चिम बंगाल पुलिस की मदद से 25 लाख की ठगी करने वाले एक अंतरराज्यीय गिरोह के सदस्य इमरान अहमद हासमी को गिरफ्तार किया है। कोलकाता के बिधाननगर न्यू टाउन थाने में मुंबई के रहने वाले स्वप्निल संकीर्तन पुरेचा ने 25 लाख रुपए की ठगी का मामला दर्ज कराया था। इसमें इमरान अहमद हाशमी आरोपी था। वह एक साल से पुलिस से बचता हुआ फरार था। जब बंगाल पुलिस को पता चला कि इमरान दरभंगा में है, तो उन्होंने दरभंगा पुलिस से संपर्क किया। पुलिस ने बहादुरपुर थाना क्षेत्र के मूसापुर गांव से उसे गिरफ्तार कर लिया। कोलकाता पुलिस के मुताबिक, इमरान के खिलाफ दो प्राथमिकी दर्ज हैं और अन्य जगहों पर भी मामले की जांच चल रही है।

बहादुरपुर थानाध्यक्ष सुनील कुमार ने बताया कि यह ठगी करने वाला गिरोह टेंडर दिलाने के नाम पर लोगों से पैसे ठगता है। यह लोग वर्क ऑर्डर की कागजों में बदलाव करके टेंडर दिलाने के बहाने लाखों रुपये ले लेते थे। इसके बदले में वे एडवांस में भी पैसे लेते थे। साथ ही, यह गिरोह सप्लायरों को भी अपने साथ जोड़कर ठगी करता था। बताया जा रहा है कि इस गिरोह में और भी कई लोग शामिल हैं। बहादुरपुर थानाध्यक्ष ने बताया कि सारी प्रक्रिया पूरी होने के बाद बंगाल पुलिस आरोपी को अपने साथ ट्रांजिट रिमांड पर ले गई है। आरोपी इमरान अहमद हासमी के खिलाफ कोलकाता के बिधाननगर न्यू टाउन थाना में कई अपराधों के मामले दर्ज हैं, जिनमें धोखाधड़ी, फर्जीवाड़ा, और साजिश शामिल हैं।

उपद्रव में शामिल 50 पर आरोप तय

> अब शुरू होगा ट्रायल, पुलिस 80 लोगों को कर चुकी है गिरफ्तार

चंदौसी, 17 मई (एजेंसियां)। संभल हिंसा के 50 उपद्रवियों पर न्यायालय में आरोप तय हो गए हैं। अब ट्रायल शुरू होगा। इस मामले में आरोपियों की ओर से चार-पांच अधिवक्ताओं ने न्यायालय में डिस्चार्ज प्रार्थनापत्र प्रस्तुत किया और डिस्चार्ज किए जाने के लिए बहस की। जिस पर अभियोजन ने अपने तर्क देकर विरोध किया। जिस पर न्यायालय ने दोनों पक्षों को सुन कर डिस्चार्ज प्रार्थनापत्र खारिज कर दिए।

बता दें कि 24 नवंबर 2024 की सुबह संभल की शाही जामा मस्जिद के हरिहर मंदिर होने के दावे को लेकर मस्जिद के सर्वे के दौरान हिंसा हो गई थी। इस मामले में पुलिस की ओर से कई मुकदमे दर्ज किए गए।

पुलिस अब तक 80 से अधिक आरोपियों को गिरफ्तार कर जेल भेज चुकी है। जिनकी जमानत अर्जी के लिए न्यायालय में प्रार्थनापत्र दिए जा रहे हैं। अब तक लगाई गई सभी जमानत अर्जियां खारिज हो चुकी हैं। बृहस्पतिवार को अपर जिला एवं सत्र न्यायाधीश/एससीएसटी एक्ट रागिनी सिंह के न्यायालय में विवेचक द्वारा लगाए गए आरोपपत्रों पर आरोप तय किए गए। सहायक जिला शासकीय अधिवक्ता हरिओम प्रकाश उर्फ हरीश सैनी ने बताया कि कुछ आरोपियों के पक्ष में चार-पांच अधिवक्ताओं द्वारा अपने-अपने मुल्जिमानों के पक्ष में डिस्चार्ज प्रार्थनापत्र न्यायालय के समक्ष प्रस्तुत किए। जिनमें उनके द्वारा तर्क दिया गया कि उनके अभियुक्त नामजद नहीं हैं। जो हिंसा की घटना में शामिल नहीं थे। पुलिस ने घर से उठा कर बिना तथ्यों के आधार पर जेल भेज दिया। जिसका विरोध करते हुए सहायक जिला शासकीय अधिवक्ता द्वारा न्यायालय को बताया कि सभी के नाम विवेचना में सामने आए हैं। जिसकी वीडियो फुटेज है। पुलिस पर पत्रावली पर साक्ष्य हैं।

सभी 50 आरोपियों के विरुद्ध पुख्ता सबूत हैं। ऐसे में इनका प्रार्थनापत्र निरस्त किया जाना आवश्यक है। सहायक जिला शासकीय अधिवक्ता ने बताया कि न्यायालय द्वारा दोनों पक्षों को सुन कर डिस्चार्ज प्रार्थना खारिज कर दिए गए। सभी 50 आरोपियों के विरुद्ध लगाए गए आरोपों के अनुसार लगाई गई धाराओं के अनुसार आरोप तय किए हैं। अब अभियोजन के द्वारा न्यायालय में साक्ष्यों की गवाही व जुटाए गए साक्ष्य न्यायालय के समक्ष प्रस्तुत किए जाएंगे। जिसके आधार पर न्यायालय अंतिम निर्णय लेगा। अब लग रहा है कि जल्दी ही संभल हिंसा मामले पर निर्णय सुनवाई पूरी होने पर जल्दी हो सकता है।

बिहार के बेतिया में भीषण आग से 100 से ज्यादा परिवार बेघर, लाखों का नुकसान

बेतिया, 17 मई (एजेंसियां)। बिहार के बेतिया जिले के बगहा अनुमंडल के बसवरिया पंचायत स्थित पड़री गांव में शाम को भीषण आग लग गई। इस आग ने पूरे गांव में भारी तबाही मचा दी। करीब 100 से ज्यादा घर जलकर राख हो गए। इस आगलगी में लाखों रुपये की संपत्ति का नुकसान हुआ है और लोग पूरी तरह बेघर हो गए हैं।

प्रत्यक्षदर्शियों के अनुसार, पहले गांव में धुएं का गुबार उठा और देखते ही देखते आग ने विकराल रूप ले लिया। तेज गर्मी और आंधी की वजह से आग इतनी तेजी से फैली कि लोग घर से सामान भी नहीं निकाल पाए। जब तक लोग कुछ समझ पाते, तब तक पूरा इलाका आग की चपेट में आ चुका था। पीड़ितों का रो-रोकर बुरा हाल है। कई परिवारों का सब कुछ जलकर खत्म हो गया-न कपड़े बचे, न राशन, न पैसे। लोगों के पास सिर छुपाने की भी जगह नहीं बची है।

राहत और बचाव जारी

घटना की सूचना मिलते ही फायर ब्रिगेड की कई गाड़ियां, पुलिस, प्रशासन, मेडिकल टीम, और स्थानीय जनप्रतिनिधि मौके पर पहुंचे। तेज आंधी और गांव की तंग गलियों की वजह से आग बुझाने में मुश्किल हुई, लेकिन काफी कोशिशों के बाद आग पर काबू पाया गया। मुखिया रौशन कुमार तिवारी ने बताया कि सैकड़ों घर जल चुके हैं। प्रशासन पीड़ित परिवारों की सूची बना रहा है और अस्थायी घर और खाना मुहैया कराने की तैयारी कर रहा है। जिला परिषद प्रतिनिधि सोनू यादव ने कहा कि वरीय अधिकारियों को सूचना दे दी गई है और राहत और मुआवजा देने की प्रक्रिया शुरू कर दी गई है।

फंस गए 'वकील साहब' कोर्ट ने फर्जी केस मामले में सुना दी 10 साल की सजा

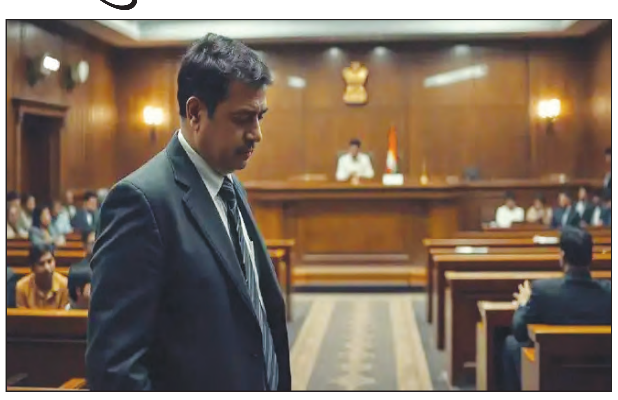

लखनऊ, 17 मई (एजेंसियां)। उत्तर प्रदेश की राजधानी लखनऊ से फर्जी केस में फैसले का मामला सामने आया है। दरअसल, जमीन विवाद में विरोधी को फंसाने के लिए फर्जी केस दर्ज कराने वाले एक वकील को अदालत ने कड़ी सजा सुनाई है। विशेष न्यायाधीश एससी-एसटी एक्ट विवेकानंद शरण त्रिपाठी की अदालत ने आरोपी वकील लाखन सिंह को 10 साल की कैद और 2.51 लाख रुपये के जुर्माने की सजा सुनाई है। अदालत ने अपने फैसले में स्पष्ट रूप से टिप्पणी की कि चतुर शिकारी शिकार करते समय ऐसी चालें चलता है कि खुद ही अपने जाल में फंस जाता है।

क्या है पूरा मामला?

विशेष लोक अभियोजक अरविंद मिश्रा के अनुसार, लाखन सिंह का सुनील दुबे से जमीन को लेकर लंबे समय से विवाद चल रहा था। इसी विवाद के कारण लाखन सिंह ने 15 फरवरी 2014 को कोर्ट के माध्यम से सुनील दुबे और उसके साथियों पर हत्या की कोशिश, जान से मारने की धमकी, गाली-गलौच, तोड़फोड़ और एससी-एसटी एक्ट के तहत केस दर्ज कराया। मामला विकास नगर थाने में दर्ज हुआ था। पुलिस जांच में सामने आया कि जिस घटना का जिक्र एफआईआर में किया गया है, वह वास्तव में कभी हुई ही नहीं। पूरी कहानी झूठ पर आधारित थी और केस पूरी तरह से फर्जी था। इसके बाद पुलिस ने मुकदमा झूठा पाए जाने पर कार्रवाई की अनुशंसा की थी।

कोर्ट ने की कड़ी टिप्पणी

कोर्ट ने अपने आदेश में न केवल लाखन सिंह को दोषी ठहराया, बल्कि यह भी कहा कि आरोपी ने वकील होने के बावजूद कानून का दुरुपयोग किया। कोर्ट ने यह भी पाया कि लाखन पहले भी कई फर्जी मामलों में लिप्त रहा है। वह अभी एक रेप के मामले में जेल में बंद है।

कोर्ट ने पुलिस कमिश्नर और जिलाधिकारी को निर्देश दिया कि यदि इस फर्जी दलित उत्पीड़न के मुकदमे के बाद कोई सरकारी मुआवजा या सहायता की राशि दी गई हो, तो उसे तत्काल वापस लिया जाए। साथ ही, कोर्ट ने यह भी कहा कि लाखन सिंह के कोर्ट परिसर में प्रवेश पर रोक लगाई जाए। लखनऊ कोर्ट के इस फैसले की चर्चा हो रही है। ऐसे मामलों में दोषियों पर कार्रवाई की भी बात हो रही है ताकि कानून का दुरुपयोग रुक सके।

नाबालिग आदिवासी लड़की से सामूहिक दुष्कर्म

चार आरोपियों ने की दरिंदगी पुलिस ने किया गिरफ्तार

कटिहार, 17 मई (एजेंसियां)। कटिहार में नाबालिक आदिवासी छात्र के साथ सामूहिक दुष्कर्म का सनसनीखेज मामला सामने आया है। मनिहारी थाना क्षेत्र के इस मामले को लेकर पुलिस ने चार आरोपियों को हिरासत में लेकर पूछताछ कर रही है। घटना के बारे में बताया जा रहा है कि नाबालिक लड़की कस्तूरबा विद्यालय में सातवीं की छात्रा है। जहां विद्यालय से छुट्टी लेकर अपने घर आई हुई थी। इसी दौरान मवेशी के लिए खेत में घास काटने गई नाबालिक को अकेला पाकर चार मनचलों ने मिलकर नाबालिक के साथ सामूहिक दुष्कर्म किया।

हेयर ट्रांसप्लांट करने वाली डॉ. अनुष्का का रोहतक में लगा सुराग

पुलिस टीम ने हरियाणा में डाला डेरा

कानपुर, 17 मई (एजेंसियां)। कल्याणपुर के केशवपुरम में हेयर ट्रांसप्लांट करने वाली डॉ. अनुष्का का हरियाणा के रोहतक जिले में सुराग लगा है। पुलिस की दो टीमों ने वहां डेरा डाल दिया है। उसकी आसपास के जिलों में भी तलाश की जा रही है। पुलिस डॉक्टर की बीडीएस डिग्री पर भी सवाल खड़े कर रही है। उसकी जानकारी के लिए रोहतक विश्वविद्यालय से पत्राचार किया गया है। हेयर ट्रांसप्लांट के बाद दो इंजीनियर की मौत हो गई, जबकि दो युवकों की हालत बिगड़ गई थी। घटना के बाद से डॉक्टर दंपत्ती फरार हैं।

केशवपुरम के इंपायर क्लीनिक के बाद पनकी पावर हाउस के इंजीनियर विनीत दुबे और फर्रुखाबाद के इंजीनियर मयंक कटियार की मौत हो गई थी। विनीत दुबे की पत्नी जया ने डॉ. अनुष्का के खिलाफ रावतपुर थाने में रिपोर्ट दर्ज कराई। पुलिस ने उनके घर में दबिश दी, लेकिन वहां ताला लगा हुआ है। डॉ.अनुष्का की डिग्री पर खड़े हो रहे सवाल डीसीपी पश्चिम दिनेश त्रिपाठी ने बताया कि डॉ.अनुष्का का मायका रोहतक में है। उनके पास सिर्फ बीडीएस की डिग्री है। यह डिग्री उन्होंने रोहतक के पंडित भगवत दयाल शर्मा स्वास्थ्य विज्ञान विश्वविद्यालय से हासिल की है। घटना के बाद से उनकी डिग्री पर सवाल खड़े हो रहे हैं। विवेचक ने सीएमओ के जरिए उनकी डिग्री सही है या नहीं यह जानने के लिए यूनिवर्सिटी से पत्राचार कराया है। डॉ दंपती के रोहतक में होने की सूचना मिली है। पुलिस की टीमें हरियाणा भेजी गई हैं। अन्य टीम डॉ. के रिश्तेदारों पड़ोसियों, बच्चों के स्कूल और अन्य माध्यमों से साक्ष्य एकत्रित करने में जुटी है। डॉ. अनुष्का पति डॉ. सौरभ तिवारी, ससुर डॉ. बृजेंद्र नाथ, सास सवित्री देवी और दो बच्चों के साथ कल्याणपुर में रहती रह रही थी। रिपोर्ट दर्ज होने के बाद पूरा परिवार घर में ताला बंद कर फरार हो गया।

पत्नी को छत से उल्टा लटकाने वाला पति गिरफ्तार, शराब के नशे में की थी हैवानियत

बरेली, 17 मई (एजेंसियां)। बरेली के आंवला में शराबी युवक ने अपनी पत्नी को बेरहमी से पीटा, फिर उसे छत से उल्टा लटका दिया। इस घटना का वीडियो वायरल हुआ है। मामले में पीड़िता के भाई ने पति समेत चार लोगों के खिलाफ रिपोर्ट दर्ज कराई है। पुलिस ने आरोपी पति को गिरफ्तार कर लिया है, जबकि तीन आरोपी फरार हैं। इन आरोपियों की तलाश में पुलिस दबिश दे रही है।

बदायूं के थाना वजीरगंज क्षेत्र के निवासी रघुनाथ सिंह ने बताया कि उन्होंने 12 साल पहले अपनी बहन डोली की शादी लठैता मोहल्ला निवासी नितिन सिंह के साथ की थी। बताया कि नितिन शराब पीने का आदी है। वह रोजाना डोली से मारपीट करता है। मायकेवालों ने उसे कई बार समझाया, लेकिन वह अपनी हरकतों से बाज नहीं आया। इस कारण मायका पक्ष के लोगों का यहां आना-जाना भी कम ही था।

आरोपी अक्सर मोहल्ले में भी लोगों से लड़ाई-झगड़ा करता रहता है। मंगलवार रात करीब 10 बजे नितिन सिंह ने किसी बात को लेकर शराब के नशे में डोली को बेरहमी से पीटा, फिर छत से उल्टा लटका दिया। जान से मारने की नीयत से उसे छोड़ दिया। गनीमत रही कि मोहल्ले के लोगों ने उसे बचा लिया। इस घटना के बाद लोगों ने सोशल मीडियो पर वीडियो वायरल कर दिया है। मामले में पुलिस ने सख्ती शुरू कर दी है।

घटना के बाद डरे-सहमे दिखे बच्चे

लोगों ने बताया कि विवाहिता को उसके ससुराल वाले मायके ले गए। इससे उसके तीनों बच्चे डरे-सहमे हैं। मायके पक्ष के लोगों ने बताया कि आरोपी पति शादी के बाद से ही विवाहिता को प्रताड़ित करता था। परिवार न टूटे।

इसके लिए वह सबकुछ सहती रहती थी। अपने मायके वालों से अपनी पीड़ा व्यक्त नहीं करती थी। पुलिस ने तहरीर के आधार पर आरोपी पति नितिन कुमार, अमित कुमार व दो महिलाओं के खिलाफ रिपोर्ट दर्ज कर ली है।

तीन आरोपियों की तलाश

इंस्पेक्टर कुंवर बहादुर सिंह ने बताया कि मुख्य आरोपी पति नितिन कुमार को गिरफ्तार कर लिया गया है। तीन आरोपियों की तलाश में पुलिस की टीम जुट गई है। जल्द ही तीनों को गिरफ्तार किया जाएगा।

दिनदहाड़े पिता-पुत्र को मार डाला

गयाजी, 17 मई (एजेंसियां)। बिहार के गया में बेखौफ अपराधियों ने पिता और पुत्र की गोली मारकर हत्या कर दी। शनिवार दोपहर सवा 12 बजे घटना को अंजाम देने के बाद अपराधी फरार हो गया।

हालांकि, वारदात की सूचना मिलते ही घटनास्थल पर स्थानीय पुलिस दलबल के पहुंच कर शव को अपने कब्जे में लेकर पोस्टमार्टम के लिए अस्पताल भेज दिया। वहीं अपराधियों की पहचान के लिए आस-पास के लोगों से पूछताछ कर रही है। साथ ही विभिन्न ठिकानों पर छापेमारी शुरू कर दी है। यह पूरा मामला गया जिले के वजीरगंज थाना क्षेत्र के दखिन गांव का है। मरने वालों की पहचान अशोक सिंह (65 वर्ष) और उनके पुत्र कुणाल कुमार (30 वर्ष)के रूप में हुई है।

पीलीभीत में तीन हजार सिखों का धर्मांतरण

नेपाल सीमा पर चल रहा बड़ा 'खेल'; घरों पर बना ये निशान

पीलीभीत, 17 मई (एजेंसियां)। पीलीभीत जिले में भारत-नेपाल सीमा के गांवों के करीब तीन हजार सिखों का पिछले कुछ समय में धर्मांतरण कराया जा चुका है। धर्मांतरण कराने वाले नेपाली पादरी क्षेत्र में बेहद सक्रिय हैं। यह जानकारी ऑल इंडिया सिख पंजाबी वेलफेयर काउंसिल के प्रदेश अध्यक्ष व लखनऊ गुरुद्वारा प्रबंध कमेटी के कार्यवाहक अध्यक्ष हरपाल सिंह जग्गी ने दी।

उन्होंने कहा कि लालच देकर जबरन लोगों का धर्मांतरण कराया गया है। ऐसे 160 परिवारों की सूची डीएम-एसपी को सौंपी गई है। उन्होंने कहा कि फरवरी में गांव बैल्हा में हुए गुरमत समागम में 180 परिवारों ने घर वापसी कर ली। हरपाल सिंह जग्गी ने शाम को नगर के गुरुद्वारा श्री सिंह सभा में प्रेसवार्ता के दौरान कहा कि नेपाल सीमा के गांवों में लगातार सिखों और हिंदुओं का धर्मांतरण कराया जा रहा है। गांव बैल्हा, टाटरगंज, बमनपुर भागीरथ में 20 हजार से अधिक आबादी है। नेपाल से आने वाले पादरी वर्ष 2020 से सिखों का जबरन धर्मांतरण करा रहे हैं। वे विभिन्न प्रकार के प्रलोभन, अंधविश्वास और रोग निवारण की बात कहकर धर्म बदलने को मजबूर कर रहे हैं। हरपाल सिंह जग्गी ने कहा कि मामले को लेकर मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ, उप मुख्यमंत्री बृजेश पाठक, विधायक और सेवानिवृत पुलिस अफसर राजेश्वर सिंह, सांसद बृजलाल को भी जानकारी देकर निष्पक्ष जांच की मांग की गई। इसको लेकर तीन दिन पहले हजारा थाने में आठ नामजद और तीन से चार दर्जन अज्ञात पर रिपोर्ट दर्ज की गई है।

उन्होंने कहा कि लगातार हो रहे धर्मांतरण को लेकर कमेटी बनाई गई है। कमेटी के अध्यक्ष गुरदयाल सिंह, उपाध्यक्ष जसवंत सिंह, सचिव छिंदर सिंह, उप सचिव परमजीत सिंह, कोषाध्यक्ष जरनैल सिंह, मक्खन सिंह, सतनाम सिंह, मेवा सिंह आदि संयुक्त रूप से जानकारी जुटाने में लगे हुए हैं। प्रेस वार्ता में गुरुद्वारा श्री सिंह सभा के अध्यक्ष रंजीत सिंह, बलजीत सिंह खैहरा, बाबा मावा सिंह, सुखदेव सिंह, हरपाल सिंह, विहिप के जिला महामंत्री रूम सिंह यादव आदि थे।

गरीबी और शिक्षा की कमी के कारण बदल रहे धर्म

स्थानीय सिख नेताओं ने क्षेत्र में शिक्षा की कमी और गरीबी को धर्मांतरण का प्रमुख कारण बताया है। उन्होंने सरकार से इस ओर विशेष ध्यान देने की मांग की है। कई सिख अब पादरी बन चुके हैं और वे भी दूसरों का धर्मांतरण करा रहे हैं।

सिख नेताओं का कहना है कि विदेशी एजेंसियां नेपाल के रास्ते यह काम करा रही हैं। इससे देश की आंतरिक सुरक्षा को खतरा हो सकता है। गांव सिंघाड़ा उर्फ टाटरगंज के दो पीड़ितों ने मार्च में पुलिस अधीक्षक को शपथपत्र देकर शिकायत की थी। बताया कि आरोपियों ने उन्हें दो लाख रुपये, आवास, शौचालय और अन्य सरकारी योजनाओं का लालच देकर धर्मांतरण कराया।

गोद लिए बच्चे के साथ ऐसा सलूक: टीचर ने निशान देखकर पूछा तो मासूम ने बता दिया पूरा सच

अमृतसर, 17 मई (एजेंसियां)। अमृतसर के शक्ति नगर में एक दंपती पर अपने गोद लिए बच्चे को रोजाना पीटने का आरोप लगा है। बच्चे ने ट्यूशन टीचर को पूरी बात बताई जिसने वीडियो बनाकर वायरल कर दिया। जब यह वीडियो जिला प्रशासन के अधिकारियों के पास पहुंचा तो तुरंत कार्रवाई की गई। डीसी दफ्तर के कर्मचारी बच्चे को घर से रेस्क्यू कर साथ ले गए। पुलिस और जिला प्रशासन के अधिकारियों की ओर से बच्चे का मेडिकल करवाया जाएगा। उसके बाद हीअगली कार्रवाई की जाएगी।

तुलबुल पर आमने-सामने उमर और महबूबा, देश के लिए क्यों जरूरी है ये प्रोजेक्ट

जम्मू, 17 मई (एजेंसियां)। महबूबा मुफ़्ती ने तुलबुल नौवहन परियोजना को फिर से शुरू करने के लिए जम्मू-कश्मीर के मुख्यमंत्री उमर अब्दुल्ला की आलोचना की है। विशेषज्ञों ने भी इस बात पर चिंता जताई है कि वहीं सीएम उमर ने इसके फिर से शुरू होने के लेकर भारत के दीर्घकालिक हितों को दोहराया है। उन्होंने बताया है कि कैसे इसके कार्यान्वयन से पूरे केंद्र शासित प्रदेश को सामाजिक-आर्थिक लाभ कैसे मिलेगा। तुलबुल परियोजना को वुलर बैराज के नाम से भी जाना जाता है। एक नौवहन लॉक-कम-कंट्रोल संरचना है जो जम्मू-कश्मीर में देश की सबसे बड़ी ताजे पानी की झील, वुलर झील के आउटलेट पर स्थित है। इसे सर्दियों के महीनों (अक्टूबर-फरवरी) के दौरान झेलम नदी पर नौवहन की सुविधा के लिए डिज़ाइन किया गया था। ये सिंधु जल संधि (आईडब्ल्यूटी) का हवाला देते हुए पाकिस्तान ने इसे रोक दिया गया था। हालांकि, पहलगाम आतंकी हमले के बाद आईडब्ल्यूटी को निलंबित कर दिया गया है, इसलिए 1987 में पाकिस्तान की ओर से परियोजना को रोके जाने के बाद से ही इसके विकास पर नज़र रखने वाले विशेषज्ञों का मानना है कि इसका क्रियान्वयन जम्मू-कश्मीर के लोगों के लाभ के लिए सबसे तात्कालिक कदम हो सकता है।

40 साल से कश्मीर के लोगों को है इसका इंतजार

मनोहर पर्रिकर रक्षा अध्ययन एवं विश्लेषण संस्थान के वरिष्ठ फेलो उत्तम सिन्हा ने कहा कि अब समय आ गया है कि भारत लंबे समय से रुकी हुई तुलबुल नौवहन परियोजना पर काम शुरू करे। उत्तम सिन्हा ने कहा कि अब समय आ गया है कि भारत अपनी लंबित तुलबुल जलमार्ग परियोजना पर काम शुरू करे। उन्होंने अफसोस जताया कि पिछले 40 सालों से कश्मीर के लोग इस परियोजना के जरिए विकास की उम्मीद लगाए बैठे हैं। इसके बावजूद भी इसे कूटनीतिक कारणों से इसे रोक दिया गया है, जबकि यह परियोजना सिंधु जल संधि के दायरे में आती है और इसे लागू किया जा सकता है।

जल की गहराई-बिजली उत्पादन सहित कई फायदे

उत्तम सिन्हा ने कहा कि भारत का लंबे समय से यह मानना रहा है कि नौवहन के उपयोग के लिए प्राकृतिक रूप से संग्रहीत जल की कमी को विनियमित करना है। केंद्रीय जल आयोग के पूर्व अध्यक्ष कुशविंदर वोहरा ने इस नजरिए को फिर से दोहराया और बताया कि कैसे यह परियोजना वुलर झील के जरिये से बाढ़ और जल प्रबंधन को बेहतर बनाने में मदद करेगी। साथ ही डाउनस्ट्रीम में जल निकासी की समस्या से निपटने में भी मदद करेगी। अध्यक्ष कुशविंदर ने कहा कि यह लीन पीरियड के दौरान वुलर झील के नीचे झेलम में अपेक्षित जल गहराई को बनाए रखने में मदद करेगी, ताकि पूरे साल नौवहन को बनाए रखा जा सके। उन्होंने कहा कि इसका अचानक से मिलने वाला फायदा जलविद्युत परियोजनाओं के माध्यम से बिजली उत्पादन को भी बढ़ाएगा।

शराब के ठेके के पास मिला ग्रेनेड, फटा नहीं
गैंगस्टर्स की वायरल हुई पोस्ट से जागी पुलिस; बताया डमी

बटाला, 17 मई (एजेंसियां)। बटाला शहर के फोकल प्वाइंट स्थित शराब के ठेके की एक नई ब्रांच के गेट के सामने शनिवार सुबह एक ग्रेनेड मिला। इस ग्रेनेड से कोई धमाका नहीं हुआ। पुलिस की टीम और बम डिफ्यूज टीम ने इसे कब्जे में लेकर जांच शुरू कर दी है। इस घटना का तब पता चला जब शनिवार सुबह गैंगस्टर्स मनु अगवान और गोपी नवांशहरिया की पोस्ट वायरल हुई। इसके बाद खुफिया एजेंसी और पुलिस में भगदड़ मच गई और मौके पर बटाला के तमाम उच्च अधिकारियों की टीम पहुंच गई। इस संबंध में डीसीपी संजीव कुमार का कहना है। विशेषज्ञ टीम जांच कर रही है कि यह कौन सी विस्फोटक चीज है। फिलहाल इसके डमी बम होने की संभावना बताई जा रही है। वहीं एसएसपी बटाला सुहेल कासिम मीर ने भी इसे डमी ग्रेनेड बताया है। एसएसपी का कहना है कि यह सोशल मीडिया पर एक पब्लिसिटी स्टंट है।

गुजरात से लाया गया जेब्रा का जोड़ा जंगल सफारी में सांप ने काटा, नर की मौत

रायपुर, 17 मई (एजेंसियां)। गुजरात से छत्तीसगढ़ की रायपुर लाए गए दो जेब्रा में एक की मौत हो गई। सांप के काटने से उसकी मौत होना बताया जा रहा है। दूसरा जेब्रा सुरक्षित है, इन्हें रेस्क्यू सेंटर में रखा गया था। इनमें एक नर और दूसरा मादा है। चर्चा है कि सांप के काटने से नर जेब्रा की मौत हुई है। इन्हें हाल ही में गुजरात के जामनगर के राधे कृष्णा टेम्पल एलिफेंट वेलफेयर ट्रस्ट से लिया गया था। जेब्रा की मौत की जांच की जा रही है। नया रायपुर स्थित नंदनवन जंगल सफारी में जेब्रा का जोड़ा लाया गया था। इसके बदले दुलर्भ प्रजाति के सफेद भालू राधे कृष्णा टेम्पल एलिफेंट वेलफेयर ट्रस्ट को दिए गए थे। जेब्रा के जोड़े का 21 मई को मुख्यमंत्री के जरिए डिस्प्ले होना था। लेकिन, इससे पहले नर जेब्रा की मौत हो गई। वन अधिकारियों के मुताबिक, जेब्रा के जोड़े को गुजरात से लाकर रेस्क्यू सेंटर में रखा गया था।

जेब्रा को जहरीले सांप ने काटा

जेब्रा की मौत के बारे में जंगल सफारी संचालन थेजस शेखर ने मीडिया को बताया कि जैसे ही जानकारी मिली, तभी जेब्रा की चिकित्सकीय मदद दी गई। उन्होंने बताया कि जेब्रा को जहरीले सांप ने काट लिया था, जिसके जहर का असर उसके पूरे शरीर में हो गया था। जहर फैलने की वजह से उसकी मौत हो गई। उन्होंने बताया कि घटना को गंभीरता से लेते हुए आवश्यक सुधार किए जा रहे हैं। ताकि भविष्य में ऐसी कोई घटना दोबारा न हो।

रखा गया था रेस्क्यू सेंटर में

वन अधिकरी ने बताया कि जामनगर से जेब्रा के जोड़े के अलावा मीर कैट और माउस डियर के जोड़े भी लाए गए थे। इन सभी को पहले रेस्क्यू सेंटर में रखा गया था। इनकी हर गतिविधियों पर नजर रखी जा रही थी। अचानक इनमें एक नर जेब्रा की हालत बिगड़ गई। लोगों का कहना है की उसे किसी जहरीले सांप ने डस लिया था, जिससे उसकी मौत हो गई।

मुंबई पुलिस की नई पहल
अब थाने में भी बच्चे महसूस करेंगे दोस्ताना माहौल

मुंबई, 17 मई (एजेंसियां)। पुलिस ने बच्चों की सुरक्षा और संवेदनशीलता को ध्यान में रखते हुए एक सराहनीय पहल की है। पहली बार मुंबई के 7 पुलिस स्टेशनों में चाइल्ड फ्रेंडली जोन की शुरुआत की गई है। यह ज़ोन विशेष रूप से उन बच्चों के लिए बनाए गए हैं जो किसी अपराध के शिकार हुए हैं या किसी जांच प्रक्रिया का हिस्सा हैं। मुंबई पुलिस लगातार बच्चों से जुड़े अपराधों के खिलाफ सख्त कदम उठा रही है। हालांकि, कई बार जांच के दौरान पीड़ित बच्चों को पुलिस स्टेशन बुलाना पड़ता है। पुलिस स्टेशन का गंभीर माहौल बच्चों में डर और असहजता पैदा करता है, जिससे वे खुलकर बात नहीं कर पाते और जांच में सहयोग भी कठिन हो जाता है। इस स्थिति को बदलने के लिए, पुलिस स्टेशनों में अब ऐसे कमरे बनाए गए हैं जो बच्चों के अनुकूल हैं। इन कमरों को कार्टून चित्रों, खिलौनों और गेम्स से सजाया गया है। यहां बच्चों को एक सुरक्षित और आरामदायक वातावरण मिलता है जिससे वे तनावमुक्त होकर पुलिस से बात कर सकें। प्रत्येक चाइल्ड फ्रेंडली ज़ोन में एक प्रशिक्षित अधिकारी तैनात किया गया है जो बच्चों से संवेदनशीलता से बात करेगा, उन्हें सहज महसूस कराएगा और जांच में मदद लेगा। इस ज़ोन की एंट्री भी अलग रखी गई है ताकि बच्चों को यह जगह किसी थाने जैसी न लगे। साथ ही, आपात स्थिति के लिए बाहर एम्बुलेंस की सुविधा भी उपलब्ध कराई गई है।

'कांग्रेस में होना और कांग्रेस का होना में जमीन आसमान का अंतर'
नाम लिए बिना शशि थरूर पर भड़के जयराम रमेश

नई दिल्ली, 17 मई (एजेंसियां)। आतंकवाद के मुद्दे पर पाकिस्तान को विदेशों में घेरने के लिए सरकार ने ऑल पार्टी डेलीगेशन को अलग-अलग देशों में भेजने का फैसला किया।

इसमें से एक डेलीगेशन का नेतृत्व कांग्रेस सांसद शशि थरूर को सौंपा गया है। मामले पर राजनीति चरम पर है। कांग्रेस नेता और राज्यसभा सांसद जयराम रमेश ने आज शनिवार (17 मई, 2025) को प्रेस कॉन्फ्रेंस के दौरान शशि थरूर पर हमला करते हुए कहा कि कांग्रेस में होना और कांग्रेस का होना में जमीन आसमान का फर्क है। हालांकि उन्होंने शशि थरूर का नाम नहीं लिया। शशि थरूर पर परोक्ष रूप से निशाना साधते हुए जयराम रमेश ने कहा, व्यक्तियों को लेकर टिप्पणी नहीं करूँगा लेकिन कांग्रेस में होना और कांग्रेस का होना में जमीन आसमान का अंतर है। उन्होंने कहा, सरकार ने चार नाम मांगे थे हमने दिए। लेकिन सरकारी प्रेस रिलीज से हैरानी हुई। सरकार का व्यवहार ईमानदारी नहीं दर्शाता, सरकार गंभीर मामले में खेल खेल रही है। सरकार की कूटनीति फेल हो चुकी है। ये अवसरवाद की राजनीति है। सरकार ट्रंप को सीधा जवाब नहीं देना चाहती, जिन्होंने एक बार फिर (सातवीं बार) भारत-पाक के बीच मध्यस्थता की बात दोहराई है। सरकार संसद का विशेष सत्र बुलाए। जयराम रमेश ने आगे कहा, सर्वदलीय प्रतिनिधिमंडल का स्वागत है लेकिन सरकार की ओर से नाम मांग कर उन नामों का एलान न करना बेईमानी है। हम चार नामों में कोई बदलाव नहीं करेंगे।

'खेल खेला जा रहा है'

उन्होंने सरकार को निशाने पर लेते हुए कहा, किरेन रिजिजू ने हमसे चार नाम मांगे थे और हमने चार नाम दिए थे और हम उम्मीद करते थे कि प्रतिनिधिमंडल में 4 नाम शामिल किए जाएंगे। अब क्या होगा मैं कुछ नहीं कह सकता, कांग्रेस ने अपना धर्म निभाया। हमने विश्वास के साथ नाम दिया कि सरकार ईमानदारी से नाम मांग रही है। सरकार का व्यवहार ईमानदारी नहीं दर्शाता है, खेल खेला जा रहा है। गंभीर मामले पर खेल खेला जा रहा है। हम सीधे बैट से खेल रहे हैं, लेकिन सरकार किस बैट से खेल रही है पता नहीं।

प्रेमिका के भाई की हत्या कर सांवरिया सेठ घूमने गए, फिर दोबारा निकलवाया शव

इंदौर, 17 मई (एजेंसियां)। इंदौर के खुड़ैल में दृश्यम फिल्म की तर्ज पर एक युवक की हत्या का मामला सामने आया है। आरोपी रोहित परमार ने एक मई को प्रेमिका के भाई विशाल पिता अजय की गोली मारकर हत्या कर दी। इसके बाद शव को छोटी खुड़ैल के तालाब के पास गाड़ दिया। बाद में उसी के मोबाइल से परिजन को सांवरिया सेठ जाने का मैसेज किया ताकि किसी को शक न हो, हालांकि पूरा भेद खुल गया और पुलिस ने आरोपी को पकड़ लिया। एसपी हितिका वासल के अनुसार, आरोपी रोहित विशाल की बहन से प्रेम करता था। विशाल को बहन से प्रेम संबंध का पता चल गया जिसके बाद रोहित ने विशाल को रास्ते से हटाने की योजना बनाई। वासल के मुताबिक रोहित ने बताया कि विशाल को उसकी बहन से मेरे प्रेम संबंध का पता लगने के बाद वह मुझे ब्लैकमेल करता था। वह मुझे धमकाकर ब्लैकमेल कर 80 हजार रुपए ले चुका था। इसके बाद मैंने उसकी हत्या का प्लान बनाया। मैंने दोस्त वीरेंद्र दायमा के साथ मिलकर उसकी हत्या कर दी। हत्या के दौरान हुए झगड़े में एक गोली वीरेंद्र के पैर में भी लगी थी। रोहित ने बताया कि विशाल की हत्या के बाद उसने विशाल का मोबाइल रख लिया था। दो मई को उसके मोबाइल से विशाल के परिजन को मैसेज किया कि सांवरिया सेठ जा रहा हूं। इसके बाद रोहित मोबाइल लेकर सांवरिया सेठ भी गया ताकि पुलिस गुमराह हो। छह दिन बाद फिर दोबारा लिखा कि मैं अपनी प्रेमिका से शादी करने जा रहा हूं। इसलिए मुझे ढूंढ़ा नहीं जाए। इस दौरान तेज बारिश हुई तो रोहित को लगा कि विशाल का शव गड्ढे में से ऊपर आ जाएगा। इसके बाद उसने दो लोगों को 40 हजार रुपए देकर फिर से शव को गहरे गड्ढे में दफनाया। बबलू खाड़वा और सोनू ने शव को और गहराई में दफनाया। इसके बाद डिकंपोज करने के लिए नमक डाल दिया। 15 दिन बाद खुलासा होने पर पुलिस ने शव निकाला और आरोपियों को पकड़ लिया।

'बीजेपी वालों के रगों में बलिदान का नहीं बल्कि मुखबिरी का खून है'
जगदीश देवड़ा के बयान पर भड़की कांग्रेस

भोपाल, 17 मई (एजेंसियां)। कांग्रेस ने मध्य प्रदेश के उपमुख्यमंत्री जगदीश देवड़ा के उस बयान पर कड़ी आपत्ति जताई है, जिसमें उन्होंने भारतीय सेना को प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के चरणों में नतमस्तक बताया था। कांग्रेस नेता सुप्रिया श्रीनेत ने राज्य के मंत्री विजय शाह द्वारा कर्नल सोफिया कुरैशी पर की गई शर्मनाक टिप्पणी की भी निंदा की और दोनों नेताओं को तत्काल बर्खास्त करने की मांग की। कांग्रेस प्रवक्ता सुप्रिया श्रीनेत ने कहा कि बीजेपी लगातार सेना का अपमान कर रही है, क्योंकि उसकी रगों में बलिदान का नहीं, मुखबिरी का खून है।

कांग्रेस नेता ने कहा कि भारतीय सेना ने हर बार दुश्मन को धूल चटाई है। जिस सेना के शौर्य और पराक्रम के आगे पूरा देश नतमस्तक है, उस सेना के लिए यह कहना कि वह किसी के चरणों में नतमस्तक है, अत्यंत आपत्तिजनक एवं असहनीय है। उन्होंने जोर देकर कहा कि देश भारतीय सेना का अपमान बर्दाश्त नहीं करेगा। सेना के लिए ऐसे निम्नस्तरीय विचार रखने वाला व्यक्ति किसी भी सार्वजनिक पद पर बने रहने के योग्य नहीं है। श्रीनेत ने प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी से दोनों नेताओं को तत्काल बर्खास्त करने की मांग की और कहा कि 'अगर ऐसा नहीं होता है, तो यह माना जाएगा कि सेना के नतमस्तक होने की बात नरेंद्र मोदी कह रहे हैं। मध्य प्रदेश के उपमुख्यमंत्री और मंत्री को प्रधानमंत्री का संरक्षण प्राप्त है।' श्रीनेत ने आगे कहा कि 'पूरी बीजेपी, केंद्र की मोदी सरकार और मध्य प्रदेश की सरकार जिस तरह पहले विजय शाह को बचाने में जुटी हुई थी, अब वो जगदीश देवड़ा को बचाने में लग जाएंगी।' सुप्रिया श्रीनेत ने आरोप लगाते हुए कहा कि मोदी सरकार ने गलवान में शहीद हुए 20 भारतीय सैनिकों की मौत का बदला लेने की बात तो दूर, चीन को क्लीन चिट दे दी थी। प्रधानमंत्री मोदी ने कहा था कि कोई घुसपैठ नहीं हुई। उन्होंने यह भी कहा कि सरकार ने चीन से आयात इतना बढ़ा दिया है कि भारत का व्यापार घाटा 100 अरब डॉलर तक पहुंच गया है। कांग्रेस नेता ने विजय शाह के कर्नल सोफिया कुरैशी पर दिए गए बयान की कड़ी निंदा करते हुए कहा कि यह सुनकर पूरा देश स्तब्ध रह गया।

उन्होंने कहा कि मध्य प्रदेश एचसी ने इस मामले में एफआईआर दर्ज करने का निर्देश दिया था, लेकिन राज्य सरकार और केंद्र सरकार दोनों ही विजय शाह को बचाने में जुटी रहीं। एचसी ने गुरुवार को सुनवाई के दौरान कहा कि जिस तरह की एफआईआर दर्ज हुई है, वह सिर्फ और सिर्फ दिखावा है। अदालत ने टिप्पणी की कि एफआईआर का ड्राफ्ट ही ऐसा बनाया गया है कि इसे रद्द किया जा सके। उसमें ऐसा कुछ नहीं है जो संज्ञेय अपराध दर्शा सके। उन्होंने कहा कि बीजेपी ने आजादी के आंदोलन में कोई भूमिका नहीं निभाई थी और भाजपा नेता प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी जी से सीख रहे हैं, जिन्होंने व्यापारी को सैनिक से ज्यादा साहसी बताया था।

'कर्मचारी भगवान को चढ़ाएं दो-दो मुट्ठी चावल'
सरकारी दफ्तर में जारी हुआ अजीबोगरीब फरमान

चंपावत, 17 मई (एजेंसियां)। उत्तराखंड के चंपावत जिले में एक हैरान कर देने वाला मामला सामने आया है। यहां के लोहाघाट में लोक निर्माण विभाग के राष्ट्रीय राजमार्ग खंड कार्यालय के अधिशासी अभियंता ने एक अजीबोगरीब फरमान जारी किया है। यह फरमान सोशल मीडिया पर जमकर वायरल हो रहा है। इसमें कर्मचारियों को निर्देश दिया गया है कि सभी कर्मचारी घर से दो-दो मुट्ठी चावल देवी-देवताओं को चढ़ाएं। दरअसल, यहां एक कर्मचारी की सेवा पुस्तिका खो गई है, जिसे खोजने का प्रयास किया जा रहा है। इसी संदर्भ में यह आदेश जारी किया गया है। अधिशासी अभियंता आशुतोष कुमार ने यह आदेश जारी है। इसमें खंड में काम कर रहे सभी अधिकारियों और कर्मचारियों से शनिवार को अपने घर से कार्यालय आते समय दो-दो मुट्ठी चावल लाने को कहा गया है। इस चावल को देवता को अर्पित किया जाएगा। जारी आदेश में कहा गया है कि खंड में कार्यरत अपर सहायक अभियंता जय प्रकाश की सेवा पुस्तिका अधिष्ठान सहायक प्रथम की अलमारी से खो गयी है। काफी खोजबीन के बावजूद यह नहीं मिल पा रही है, जिस कारण अधिष्ठान सहायक एवं जय प्रकाश दोनों मानसिक रूप से परेशान हो गए हैं। वहीं इस समस्या के समाधान के लिए अधिशासी अभियंता ने अनूठा सुझाव देते हुए कहा कि सभी अधिकारी व कर्मचारी अपने-अपने घर से दो-दो मुट्ठी चावल लेकर आएं जिन्हें देवता को अर्पित कर दिया जाएगा। इस दैवीय उपाय से गायब सेवा पुस्तिका की समस्या का समाधान निकल सकता है। पत्र में सभी अधिकारियों और कर्मचारियों से शनिवार को कार्यालय में दो-दो मुट्ठी चावल लेकर उपस्थित होने को कहा गया है, जिन्हें मंदिर में चढ़ाने की व्यवस्था की जाएगी।

'पाक को सबक नहीं सिखा पाए हम'
उदित राज ने ऑपरेशन सिंदूर पर उठाए सवाल; बोले- दुनिया भी हमारे साथ नहीं

नई दिल्ली, 17 मई (एजेंसियां)। पहलगाम में हुए आतंकी हमले के बाद भारत ने ऑपरेशन सिंदूर के तहत पाकिस्तान और गुलाम जम्मू-कश्मीर में स्थित आतंकी ठिकानों को तबाह कर दिया था। इस स्ट्राइक में 100 से ज्यादा आतंकी मारे गए थे। पूरे देश में सेना के पराक्रम की तारीफ हुई थी। लेकिन अब कांग्रेस नेता उदित राज ने इसे लेकर विवादित बयान दिया है। उदित राज ने कहा कि हम पाकिस्तान को सबक नहीं सिखा पाए। उन्होंने कहा कि दुनिया का कोई भी देश हमारे साथ नहीं खड़ा है। उदित राज ने कहा, 'पाकिस्तान के साथ अमेरिका है। पूरी दुनिया उसके साथ है। पाकिस्तान की अटॉमिक पावर भी अमेरिका की दी हुई है। पाकिस्तान में सब आईएसआई के कंट्रोल में है। वो टेररिस्ट एक्सपोर्ट करता रहता है।' उन्होंने कहा, 'मान लीजिए कि एक-दो जगह पर हमने बॉम्बिंग कर दी। एक-दो जगह पर आतंकी ठिकाने हमने नष्ट किए। बाकी जगह तो अब है ही। सबक तो सिखा ही नहीं पाए हम। जब दुनिया में कोई हमारे साथ नहीं है। अब डेलिगेशन भेज कर क्या करेंगे आप। जब ऐन वक्त पर कोई देश हमारे साथ खड़ा ही नहीं हुआ।'बता दें कि केंद्र सरकार ने ऑल पार्टी डेलिगेशन का एलान किया है। इसमें शशि थरूर और रविशंकर प्रसाद समेत कई पार्टियों के सांसद शामिल हैं। ये सभी अलग-अलग देशों में जाकर पाकिस्तान के झूठ और आतंकवाद के प्रति उसके प्रेम की पोल खोलेंगे और ऑपरेशन सिंदूर पर भारत का पक्ष दुनिया के सामने रखेंगे।

हाईकोर्ट ने दिल्ली-यूपी पुलिस को लगाई फटकार, कहा- 'लापरवाही से सबूत हो गए नष्ट'

नई दिल्ली, 17 मई (एजेंसियां)। दिल्ली हाईकोर्ट ने 20 साल के युवक की संदिग्ध परिस्थितियों में मौत के मामले में दिल्ली और यूपी पुलिस की लापरवाही पर नाराजगी जाहिर की है। दिल्ली हाईकोर्ट के जज ने यूपी और दिल्ली पुलिस द्वारा एक-दूसरे पर जिम्मेदारी डालने को लेकर कड़ी फटकार लगाते हुए कहा कि इस लापरवाही की वजह से फॉरेंसिक सबूत हमेशा के लिए खत्म हो गए। दिल्ली हाईकोर्ट के जस्टिस अनूप जयराम अंबानी ने कहा, युवक की संदिग्य परिस्थितियों में हुई मौत दिल्ली और यूपी पुलिस के द्वारा अपनी जिम्मेदारी को सही तरीके से पूरा न करने का बड़ा उदाहरण है। दिल्ली हाईकोर्ट ने इस मामले की सुनवाई के दौरान दिल्ली पुलिस को अहम निर्देश दिया कि वह भारतीय न्याय सहिंता की धारा 103 के तहत एक जीरो एफआईआर इस मामले में दर्ज करें। एक हफ्ते के भीतर इस मामले से जुड़े सभी साक्ष्य और सबूत यूपी पुलिस को सौंप दिया जाए। दिल्ली हाईकोर्ट ने यूपी पुलिस को आदेश देते हुए इस मामले में तुरंत एफआईआर दर्ज कर जांच शुरू करने का आदेश दिया। दरअसल, यह मामला हर्ष कुमार शर्मा नाम के युवक से जुड़ा है जो 3 दिसंबर 2024 को नोएडा में स्थित अपने कॉलेज से घर पर नहीं लौटा। हालांकि उसी रात वह ग्रेटर नोएडा के एक सुनसान जगह में अपनी कार में मरा हुआ मिला। उसके कार के अंदर कथित तौर पर एक कार्बन मोनो ऑक्साइड का एक सिलेंडर भी मिला था। इसके बाद पीड़ित की बहन ने मामले में यूपी और दिल्ली पुलिस में शिकायत दर्ज करवाई थी। जिसके बाद पीड़िता ने दिल्ली हाईकोर्ट का दरवाजा खटखटाया और अपनी याचिका में हत्या की जांच की मांग की थी। दिल्ली हाईकोर्ट में दाखिल याचिका में उन्होंने आरोप लगाया कि दिल्ली और यूपी पुलिस में शिकायत दर्ज करने के बावजूद भी किसी ने इस मामले में एफआईआर दर्ज नहीं की। दिल्ली हाई कोर्ट ने इस मामले में अहम सुनवाई करते हुए कहा की यह विश्वास करना बेहद मुश्किल है कि कोई भी पुलिस अधिकारी इस तरह की लापरवाही कैसे कर सकता है? बिना यह समझे कि कार में भारी मात्रा में फॉरेंसिक सबूत जैसे (डीएनए, फिंगरप्रिंट या फिर कोई अहम सबूत) हो सकते हैं, यूपी पुलिस ने कार को पीड़ित परिवार को लौटा दिया, जिससे सारे सबूत खत्म हो गए। दिल्ली हाईकोर्ट ने इस मामले की सुनवाई के दौरान यूपी पुलिस की उस दलील को खारिज कर दिया, जिसमें यूपी पुलिस ने कहा कि इस मामले में एफआईआर दर्ज करने के लिए मजिस्ट्रेट की जांच के खत्म होने का इंतजार किया जा रहा है। दिल्ली हाईकोर्ट ने कहा कि इस तरह के मामले में मजिस्ट्रेट के जांच की खत्म होने का इंतजार करना उचित नहीं है।

पाकिस्तानी सेना के पक्ष में शेयर किया वीडियो
4 दिन बाद ही महिला टीचर हो गई सस्पेंड

सीहोर, 17 मई (एजेंसियां)। मध्य प्रदेश के सीहोर में एक शिक्षिका ने सोशल मीडिया पर पाकिस्तानी सेना के पक्ष में एक वीडियो शेयर किया, जिसके बाद उसे निलंबित कर दिया गया। शिक्षिका को सस्पेंड किया गया। शिक्षिका का नाम शहनाज परवीन है। शासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालय मेहतवाड़ा की शिक्षिका शहनाज परवीन को जिला शिक्षा अधिकारी संजय सिंह तोमर ने सस्पेंड किया है। शहनाज परवीन ने चार दिन पहले अपने फेसबुक से पाकिस्तानी सेना के पक्ष में एक वीडियो शेयर किया था। शिक्षिका वीडियो में पाकिस्तानी सेना के सलामती की दुआ मांग रही थी। 13 मई को आष्टा एसडीएम स्वाति मिश्रा को जिला शिक्षा अधिकारी संजय सिंह तोमर ने जांच करने के लिए कहा था। इसके बाद एसडीएम स्वाति मिश्रा ने जांच करके शुक्रवार को को रिपोर्ट दी। उसके बाद यह कार्रवाई की गई। शिक्षिका शहनाज परवीन ने सोशल मीडिया पर पाकिस्तानी सेना के पक्ष में वीडियो पोस्ट कर भारतीय नागरिक सुरक्षा संहिता का उल्लंघन किया है। इसे कदाचार माना गया है। इसलिए शिक्षिका को धारा 163 और अन्य नियमों के तहत सस्पेंड किया गया है। बताया जा रहा है कि शिक्षिका शहनाज परवीन सिहोर के जावर की रहने वाली है। उसने पाकिस्तान के समर्थन में एक वीडियो शेयर किया। ये वीडियो वायरल हो गया। फिर लोगों ने इस पर प्रतिक्रिया देनी शुरू कर दी। इसके बाद इस मामले की चर्चा की जाने लगी। वीडियो शेयर करने के लिए शिक्षिका की जमकर आलोचना भी की गई। इसके बाद जैसे ही शिक्षा विभाग तक वीडियो शेयर करने मामला पहुंचा। जांच के बाद एक्शन लेते हुए शिक्षिका को सस्पेंड कर दिया गया।

विराट योगदान के योद्धा : विराट कोहली

अतुल कुमार

भारतीय क्रिकेट के कद्दावर खिलाडी विराट कोहली ने खेल के लंबे फार्मेट (पांच दिवसीय टेस्ट मैच) को अलविदा कह दिया .खेल प्रेमी अचानक लिये उनके फैसले से हैरान हैं क्यों कि दो साल और खेल सकते थे और टेस्ट क्रिकेट में 10000 रन बनाने का गौरव शाली ताज पहन सकते थे अभी उनके खाते में 123 टेस्ट मैचों में 9230 रन जमा हैं ,दस हज़ार के लिये सिर्फ फार्मालिटी बाकी थी जो टीम इंडिया के लिये यशस्वी उपलब्धि होती . आगामी 20 जून से इंग्लैंड में शुरु होने वाली पांच टेस्ट मैचों की श्रंखला में उनकी कमी खलेगी . उनके नाम भर से विपक्षी टीमों मे बेचैनी पसर जाती . यकायक उनका रिटाय्ररमेंट कई सवाल खडे करता है ? कोहली जैसे कैलीबर का बल्लेबाज़ किसी भी टीँम के लिये “ ऐसेट “होता है लेकिन उसकी वैल्यू को कौन समझेगा ? यह खेल की ट्रैजेडी है .

21 वी सदी में भारतीय क्रिकेट को जिन उंचाइयों पर ले गये वह खेल का गोल्डन चैप्टर है . ऐसे असाधारण खिलाडी हैं जिन्होंने कई सक्सेस स्टोरीस लिखी . खेल की रंगत ,फितरत और चाहत को नये रूप से नरेट कर दुनिया को चौंकाया . टीम इंडिया के धाकड बल्लेबाज़ जिन्होंने वर्ल्ड के मौजूदा बेस्ट बोलर्स की नींद हराम कर उनकी गेंदों का भुर्ता बनाया जिससे उनकी बोलिंग को रिडिफाइन करना पडा .आस्ट्रेलिया जैसी मज़बूत टीम को उन्हीं की ज़मीन पर पराजित कर सफलता के नये आयामों को हासिल किया . आज के कंपीटीटिव खेल के उम्दा खिलाडी हैं जो स्थितियों के अनुसार उम्मीदों पर खरे उतरते और हाथ से फिसलते मैच को अपने पाले में वापस ले आते जो उनकी खूबियों में से एक है .मिडिल आर्डर में चौथे स्थान पर बैटिंग करने आते तो खेल प्रेमियों में जोश की लहर दौड जाती . उनकी इमेज परफेक्शनिस्ट , पर्फामर और प्रोग्रेसिव के रूप में बनी . ऐसे अच्छे विशिष्ट रूप से कुशल खिलाडी के बारे में किसी ने खूब कहा “ वक्त से लड कर जो नसीब बदल दे / इंसान वही जो अपनी तकदीर बदल दे / हवाओं के भरोसे मत उड /चट्टानें तूफान का रुख मोड देती हैं / अपने पंखों पर भरोसा रख / हवाओं के भरोसे पतंगें उडा करती हैं// विराट कोहली ने अपने खेल कौशल से यही किया .

खेल इतिहास में यादगार ,बेमिसाल और ज़रूरत मंद ईनिंग्स खेलीं उनको इंस्पीरेशनल ईनिंग्स कहा जा सकता है जिससे युवा क्रिकेट खिलाडी बहुत कुछ सीख सकते हैं . खेल से इंटरटेन करना और बात है लेकिन उससे इतिहास लिखना और उनको अर्थ पूर्ण बनाना मायने रखता है . कोहली की बैटिंग ने विपक्षी टीमों को जम कर धोया और उनके लिये सिर दर्द बने जिससे खेल के महान योद्धा बने . प्रसिद्ध खिलाडी ग्रेग चैपल का कथन कि “ ऐसे महान खिलाडी दशकों में आते हैं जो मैदान पर अपनी हुकूमत कायम कर बोलरों को डिकटेट करते हैं “ विराट कोहली ने टीम इंडिया में भारतीय क्रिकेट में भगवान माने जाने वाले खिलाडी सचिन तेंदुलकर को उनके खेल से रिटायरमेंट के बाद रिप्लेस किया तब खेल प्रेमियों ने उनसे भी वैसी यादगार पहाड जैसी बडी पारियों की आस बांधी . विराट ने उसको लगभग पूरा किया और खेल के रियल लाइफ मेग़ा स्टार बने .कीर्तीमानों के निकट पहुंचे

स्वयं मास्टर ब्लास्टर सचिन तेंडुलकर ने एक बार कहा कि “मेरे रिकार्डों की बराबरी की उम्मीद विराट कोहली से की जा सकती है “ उस पर खरे उतरने की राह पर थे कि दास्तांन का रुख बदल गया . यही लाइफ़ है .

टीम इंडिया के कप्तान के रूप में 68 टेस्ट मैचों में से 40 में विजय हासिल कर “ टाइगर कैप्टन “ के रूप में सामने आये . बैटिंग ,फील्डिंग और बोलिंग के नये फसाने लिख अपने हुनर से कई हर्क्यूलियन कथाएं लिखीं जिसे कभी भुलाया नहीं जा सकता .मिडिल क्लास की बाधाओं , बंधनों और बेचारगियों का सामना किया जहां एक ही फंडा चलता है “ हार्ड वर्क – हार्ड वर्क और हार्ड वर्क “ इसी हार्ड वर्क से सितारा खिलाडी का उदय हुआ . मार्मिक प्रसंग है सन 2006 में जब जीवन का पहला रणजी ट्राफी मैच खेलने की तैयारी में थे तभी समाचार मिला कि पिता का देहांत हो गया है कुछ क्षण विचलित हो ठान लिया कि मैच में अच्छा खेल उनके सपने को पूरा करूंगा वही सच्ची श्रधांजलि होगी यही किया और 90 रन की धांसू पारी खेल पिता के अंतिम संस्कार के लिये गये “ 18 वर्षीय खिलाडी के इस अदम्य साहस को देख खेल आयोजक भी स्तब्ध हुए .

साल 2011 से 2025 तक क्रिकेट पर उनका राज जम कर चला जिसने घर घर में उनको चर्चा का विषय बनाया . उनको किंग कोहली कहा गया .जो वह हैं .हमेशा रनों की तलाश में रहने वाले आक्रामक बल्लेबाज़ के रूप में जाने गये उनके पास एक अच्छी तकनीक है जो गेंद की लंबाई का जल्द अंदाज़ा लगा लेती हैं और गेंद बाज़ों को हावी नहीं होने देती . रनों की प्यास इतनी कि कई बार न भेदने वाली दीवार बन पिच पर डटे रहते .बहुमुखी बल्लेबाज़ बनने में कोई कसर नहीं छोडी और यकीनन रनों का अंबार लगाते टेस्ट क्रिकेट में व्यक्तिगत सर्वाधिक स्कोर 254 रन बना रन मशीन कहे गये .दांए हाथ के इस बैटर के कवर ड्राइव , लेग साइड शोट्स और रिट्स शोट्स देखते बनते . क्रिकेट की साधना में कोई कमी नहीं छोडी और खेल इतिहास में अपने कौशल की सुपर हिट सक्सेस स्टोरी लिखी . शारीरिक फिटनेस को हमेशा खेल के लिये सबसे ज़रूरी माना ,उसी के अनुसार खान पान और अनुशासित जीवन यापन किया मानो क्रिकेट के लिये ही बने हों इसे साबित किया .

हंसमुख स्वभाव के साथ तुनुक मिज़ाज़ी भी रहे लेकिन मानसिक रूप से मज़बूत हैं तभी कई उतार चढाव , आलोचकों और शत्रुओं की चालों का मुंह तोड जवाब दिया . दर्शकों और खेल प्रेमियों के हमेशा फेवरिट प्लेयर रहे . हर स्थिति में चैंपियन बन उभरे और अपनी क्षमताओं को सिद्ध किया 14 साल के इंटर्नैशनल कैरीयर में विराट कोहली एक युग का नाम बने . क्रिकेट के खेल में कई नामी खिलाडी हुए लेकिन विराट के खेल को देख कई युवा खिलाडी खेल की ओर आकर्षित हुए.

आज टेलेंटेड खिलाडियों की लाइन लगी है जिसका श्रेय कोहली के वर्सटाइल खेल को है जिसमें सफलता की कहानियों का भंडार है . टी 20 क्रिकेट को पहले ही विदा कह चुके हैं .भारत के लिये डेब्यू करने वाले वह 269 वे खिलाडी थे हमेशा जर्सी नं 18 पहन अपार सफलता पायी .किसी शायर ने खूब लिखा “ वक्त की हो धूप या तेज़ हो आंधियां /कुछ कदमों के निशां कभी नहीं खोते / जिन्हें याद कर मुस्कुरा दें आंखें / वो लोग दूर हो कर भी दूर नहीं होते // क्रिकेट ,क्रिकेट प्रेमियों और विराट कोहली का यही रिश्ता है .

काव्य कुंज

मन

गजानन पाण्डेय

मन - एक दर्पण है
हमारा ही प्रतिबिम्ब
कोई लाख कोशिश करे
मन से भाग न पाते हैं ।
अपने बुने जाल में
फंसते चले जाते हैं
खुद की नजर में
गिरते हैं
आत्मा को भी छलते हैं
जो मन को जीत लेते हैं
वे दुनिया पे राज करते हैं ।

उलझन

डॉ डी डी देसाई

कोई तो पूछो...उलझन मेरी..
जो दिमाग़ में अँधेरा कर बैठी हैं।
प्रज्वालित हो स्वयं से कोई जुगनू...
अलोकित करे दिमागी संदूक को,
मिटाना चाहता हूँ...अँधेरा....
जो मेरी नींद भी खा गया हैं।
बिस्तर से अभी उठा नहीं...कि....
सोफे पर फैली पड़ी हैं एक और उलझन,
मेरी निद्राभंग के इंतजार में...
लालच भरी नेत्रों से ताकती खड़ी हैं..
पुनः मुझपर सवार होने के लिए...।
मैं बेबस.... लाचार...हतबल....
उसे रोक न सका...।
अब उलझने मुझपर हैं सवार,
मस्ती में धुत...अपनी ही धून में सवार।
बोझ तले दबी साँसे भी मेरी...
धड़कनें भी थरथरा रही हैं।
खुली हवा की चाहत में,
घर से बाहर निकला....।
दरवाजे पर खड़ी मेरे अतिथ्य में,
फिर एक उलझन दूसरी उलझन के बाद।
उलझनों की कतार बढ़ती ही गयी...
लंका दहन में हनुमान की पूँछ हो जैसे।
मैं बेबस...असमर्थ...असहाय...।
सवारी पर सवारी बैठती गयी।
मैं जीवन रथ खिंचता रहा...।
साँसे भी दबी...आवाज़ भी दबी,
कदम भी लड़खड़ाने लगे।
खुद को घसीटते ले जा रहा हूँ।
मैं ठहरा आम आदमी...
अब निभाह भी मुश्किल हैं।
फिर भी ढ़ो रहा हूँ.... बोझ उलझनों का......।

भाषा व्यथित मन की

गीता अग्रवाल
हैदराबाद

समझ सके नहीं तनिक ,
भाषा व्यथित मन की।
कभी नहीं पढ़ सके भाषा,
कही नयन की।।
कुछ कहने से पहले ही,
अंजाम देख लिए,
जुबां पर लग गया ताला और लब सिल लिए,
किसी को आजमा कर उन्होंने जो रुख किए
खुदा कसम अब वो मेरे दिल से रुखसत हुए,
कभी नापने चले थे वो तो ऊंचाईयाँ गगन की।
तनिक समझ नहीं सके,भाषा व्यथित मन की।
खामोशी पढ़ ले ऐसा दिलदार नहीं मिला,
दिल से हारे को सच्चा प्यार नहीं मिला,
तसल्ली देते रहे अपनों से क्या शिकवा गिला,
पर आ गया समय खत्म कर दें सिलसिला,
कैसे समझे प्रेमी दुनिया सात जनम की।
जो टिक नहीं पाई मेरी तो एक जनम भी।।
समझ सके नहीं तनिक ,भाषा व्यथित मन की।
कभी नहीं पढ़ सके भाषा, कही नयन की।।

रिश्ता

रेणुका अग्रवाल
हैदराबाद

किसी का किसी पे
अधिकार नहीं होता।
जब तक रिश्ता,
दिल से स्वीकार नहीं होता।
ख़ून के रिश्ते भी तब,
बेगाने हो जाते हैं।

दुनियादारी में अपने,जब सयाने हो जाते हैं।
मेरा मेरी करता रहा। मर्म कभी नहीं जाना।
जीता रहा सच भूलकर। मौत को नहीं पहचाना।
ज़िंदगी है जबतक सब सांठ गांठ है।
कुछ साथ नहीं जाएगा,असली नहीं ये ठाठ बाट है।
माया के चक्कर में पड़े। इंसान सब बड़े बड़े।
दौलत भी काम नहीं आई। सोंचे खाट पे पड़े पड़े।
राम राम रट लीजिये।बची ज़िंदगी जी लीजिये।
बंदगी हमेशा काम आती है। ख़ुदा को पहचान लीजिये।
ये जलन ये आवारगी। छोड़ो भी ये बेचारगी।
ख़ुद में ख़ुद जीना सीखो,ग़म ख़ुद के पीना सीखो।
अपने,अपने ही सगे नहीं। उम्र के साथ कौन भागे नहीं।
चुप रहकर जी लो सदा,कोई हमेशा रहे नहीं।
तन्हा तू है कहाँ। साथ ख़ुदा है वहाँ।
दिल तेरा भी तो है। तू रहता है ख़ुद जहाँ।
बिन कपड़ों के आया है। ऐसे ही चला जायेगा।
कफ़न का ब्रांड नहीं होता, ये तब कैसे जान पायेगा।

मातृदेवो भवः

टी तारासिंह
हैदराबाद

विधाता ने मां की रचना
प्रेम-अपनापन से रची
मां तो सर्वगुण संपन्न ,
स्वाभिमानी ,अर्धांगिनी है
मां की गोद मे सूकून की नींद आ जाती
न गोली की जरूरत पड़ती न सिरप की
उसकी मधुर लोरी से नींद आगोश मे चले जाते
जनम दिया बच्चो को पालन-पोषण किया
यही नही अच्छी सिख भी देने की प्रयत्न करती
अच्छी पढाई लिखाई कराके दीक्षांत बनाया
बच्चो को समाज मे रहने काबिल बनाया
मां की जिम्मेदारियाँ कभी खत्म नही होती
वो तो अपने दर्द को सिने मे छुपाये रखती
अपने आँसू आंखो मे ही छुपाये रखती
मां ही है वो जो सब की सूनती आखिर मे
अपनी सलाह देती आशीर्वाद देती
अपने घर के लिए , परिवार के लिए
सुख शान्ति के लिए हमेशा प्रयत्न करती रहती
वो तो गृहलक्ष्मी है आस्तिक है
मां के संघर्ष के लिए नमन ओर
मातृदेव के चरणो मे नमन ।।

पारितोषिक

डॉ शोभा भंडारी
हैदराबाद

अनगिनत तोहफे बख्शे हैं ख़ुदा ने,
बेशुमार दौलत का खज़ाना दिया कायनात ने,
नित नये संसाधन दिये दयावान ने,
नित नये पुरस्कारों से नवाजा.भगवान ने।
हम भी कुछ नया जोड़ें इस विधान में,
हर श्रेष्ठ कृत्य का पारितोषिक देने का,
संकल्प रहे मन-मस्तिष्क और दिलो जान में।
हौसलाअफजाई हो हर नेक इंसान की,
पीठ थपथपाते रहें हर ईमानदार
और मेहनतकश के ईमान की।
हर उस जज्बे को हो सलाम,
जिसने देश की सीमा की अस्मिता बचाई है।
आजीवन निंदा ही करते रहे,
अब प्रशंसा करने की बारी आई है।
क्यूँ स्वार्थ के वशीभूत होकर,हम,
भ्रष्टाचार को,अपराध को पन्हा देते हैं?
क्यूँ व्यभिचार देखकर भी,
हम सब खामोश रहते हैं?
अब समय की दरकार है,यही,
सदाचार,सदव्यवहार और नैतिकता को सराहा जाए,
युवावर्ग में नूतन ऊर्जा व उत्साह भरा जाये,
प्रोत्साहन और प्रेरणा का 'पारितोषिक' देकर,
उमंग की एक अलख,एक ज्योति प्रज्जवलित की जाए!

विज्ञान समझना चाहिए

डॉ विजय पांढरीपांडे
हैदराबाद

पढते पढाते न जाने कितने सयाने हो गये
चलो अब गुस्ताखी करे बदनाम हो जाए
हम बोलते गये वो सुनते रहे बोर हो गये
जाने कब बुझ गये टीम टिमाते जलते दिये
पढते पढाते जमा किये
कितने कागज के टूकडे
आया बुढापा किस कामके, बचोने जला दिये
आसान नही पढना समझना अंदर बरसना
दिल दिमाग के दरवाजे खुले रहना चाहिए
किताबो मे नहीं बाहर है असली जिंदगी
देखने के लिए आख खुली रहना चाहिए
सही गलत के फैसले मे उलझी शिक्षा हमारी
गणित कोई नही सही विज्ञान समझना चाहिए।

दहेज

हेमंत सुराना,
उदयपुर

अच्छी परवरिश,अच्छी शिक्षा,
फिर भी यह बात सदा सताती
गरीब बाप दहेज कहां से लाये,
प्यारी बेटी को विदा कैसे करवाए
दुनिया के सामने इज्जत कैसे बचाएं,
बढ़ती मांगों को कैसे पूरी कर पाए
मां-बाप को चैन ना आए,
मुस्कुराहटें चुरा ले जाए
दहेज के भार से दबा जा रहा,
लाचार पिता किस्मत को रो रहा
दहेज की भूख में, इंसान हैवान हो रहा,
बन के लाइलाज बीमारी, समाज को खा रहा
दहेज की बर्बरता,दुनिया को समझना होगा,
खोखली प्रथा को, जड़ से मिटाना होगा
सब को मिलकर आवाज उठानी होगी,
सब को मिलकर आवाज उठानी होगी ।

दीप्तिमान

दर्शन सिंह
हैदराबाद

जीवन की आपाधापी से थक जाते हैं
बहारों को जीवित रखने के लिए
पहलगाम में जुट जाते हैं
यह क्या आतंकी हमला
देखते ही देखते रिंकी , टिंकी,
पिंकी जैसी 26 निर्दोष का
सिंदूर मसल दिया जाता है
सिरफिरों ने धर्म पूछ पूछ कर,
जीवित कब्र तले दबा दिया जाता है
इस घिनौनी कुकृत्य के चलते
युद्ध की स्थिति उत्पन्न हो जाती है
खुशगवार जिंदगी में तनाव भर देती है
पाकिस्तान के अंदर सौ किलोमीटर जाकर
आतंकवादियों के ठिकानों को
7 मई को मिसाइलों से नेस्तनाबूद किया जाता है
सिंदूर का हिसाब किताब चूकता किया जाता है
दिल खुश तभी होगा
जब पूरा पाकिस्तान जमींदोज कर देंगे
उसके टुकड़े कर झेलम,चेनाब,इंदु दरिया में बहा देंगे
लेकिन हां अवश्य
भंग हुई तंद्रा, चीखों चिल्लाहटों ने छुआ जब आसमान
₹ कलेजा मुंह को आया₹ पढ़कर हर चेहरे की थकान
यह क्या!
धर्म, भाषा , जाति के बनने लगे ऊंचे ऊंचे मचान
जाता है बन कोई भी वतन इन मवादों से शमशान
रहेगा जिस दिन ध्यान , सिर्फ़ अपना अपना खलियान
इतिहास है साक्षी अकेला रह जाएगा रेगिस्तान
सिसकती आहों से बनेगा ऐसा कब्रिस्तान
सदियां बीतेगी नहीं कर पाएगा कोई पहचान
अरे! इसी धरणी ने पाया था श्री राम कृष्ण नानक का सम्मान
रहते थे जुबां पर सर्वे भवन्तु सुखिनः का गौरवान
कबीर रहीम बिहारी जैसे संतों के थे यहां प्रतिष्ठान
वसुधैव कुटुंबकम् का होता था दिन रात अनुष्ठान
खैर! जब तक दर्शन का अंतिम लम्हा रहेगा जवान
माते! आंचल को पुष्पों से भर दूंगा, ओ रहमान
भूल गए एक ही दूध के पूत हो प्रतिभावान
रक्त है लाल सभी का , नहीं तुझको भान
जियो और जीने दो यही है इस धरा की पहचान
बनेगी इसीसे वसुंधरा हमारी दीप्तिमान ।।

मैं नदी मूसी हूँ

कुमुद बाला,
हैदराबाद

मुझे आपत्ति है --
जब तुम यह कहते हो कि मैं मैली हो गयी हूँ
कभी सोचा है--
मुझे मैला तो तुम सबने किया
फिर क्यों मुझे कोसते हो ?
मुझे आपत्ति है---
जब तुम यह कहते हो कि
मेरी देह से दुर्गंध आती है
एक वह भी ज़माना था जब मेरे तट के दोनों ओर
प्रेमकहनियों का जन्म होता था
घुँघरुओं की छनछनाहट पर
दिल मचलता था , धड़कता था
मेरे ही तट के किनारे थे फूलों - फलों के बाग
तब यह शहर भागमती का था
और नाम था भाग्यनगर
अब मेरे तट टूट चुके हैं
मैली - कुचैली देह के अंदर कीचड़ ही कीचड़ है
मैं भी हूँ इंतज़ार में
शायद यह कीचड़ बदले और कोई फूल खिले
तुम्हारी करनी पर मुझे भी गुस्सा आया था
पिछले वर्ष मैंने भी कहर बरपाया था
मगर तुम सुधरे नहीं
जी भरकर कोसा मुझे , मुझे भी ताज़ी हवा चाहिए
मैं भी साँस लेना चाहती हूँ
तो क्या गलत किया ?
तुम पर्यावरण का ध्यान रखो
मैं अपने जल से तृप्त करती रहूँगी
किसी कवि की निगाहें मुझसे भी मिलेंगी
और एक नई गीतांजलि लिखी जायेगी।।

सपने

संजीव ठाकुर,
रायपुर

देकर सपने वो रंगीन ढेर गया।
जिंदगी में मेरी मुझे बिखेर गया,
कर दिल के टुकड़े कई ढेर गया।
भावनाओं में बहकर मचलते रहे,
तमन्नाओं को कई बिखेर गया।
आरजू करते रहे उसकी चाहत की,
वो वायदे खुदके कई बिखेर गया।
लौट कर फिर आएगा अगली शाम,
कहकर वो खूबसूरत कई शेर गया।
अपना था या बेहद अजनबी वो,
देकर सपने वो रंगीन कई ढेर गया।
मेरे अरमानों को पूरा किया बर्बाद,
जिंदगी की सरसो,राई बिखेर गया।
जब था तो बहुत अपना वो संजीव
जब गया लगा जैसे कोई गैर गया।

ऑपरेशन सिंदूर

कमलेश झा

वो आया था काली छाया बन,
हथियारों से आग लगाया था ।
मासूमों की चीखों पर हँसा,
धर्म इंसानियत को भुलाया था।।
धर्म के नाम पर ढाया कहर,
न जाने कितने किए बेघर।
पर न भूला वो यह बात,
हर असुर का होता हिसाब ।।
धरती माँ की गोदी में जो, खून बहाकर हँसता था।
कहर बरपा अब उसके जीवन पर, मांद बना वो छुपता है।।
शंख बजे है सीमा पर अब ,रण का स्वर लहराया है।
धरती माँ के वीर सपूतों ने ,ऑपरेशन सिंदूर₹ चलाया है।।
हर सिर पर कफ़न बंधा है, पर आंखों में जाली है आग ।
एक हाथ में बंदूक थामी है,
दूजे में माँ भारती की बलिदानी छाप ।।
नफरत के बीज जो बोए थे, अब फसल काटने का वक्त ,
हर गोली के संग वचन बंधा है, करना अब आतंक का अंत ।।
धधक उठी है रणभूमि अब, तोप मिसाइल की गर्जन आई।
गर्जे वीर जवान ऐसे की जैसे,आकाश भी थर्राई ।
सेना के सपूतों ने,उसका चेहरा पहचान लिया ।
एक-एक आँसू का बदला,उसकी साँसों से खींच लिया।।
गिरा वो कायर ज़मीं पे जब,आकाश तक एक स्वर गूंजा।
ये अंत है अंधकार का, अब आतंकी तेरा निकलेगा जनाजा ।।

उन्हें पहुंचाना श्मशान चाहिए

जय महलवाल,
बिलासपुर

न गोला चाहिए ,
न बारूद चाहिए,
हम हैं चैनों –अमन के पुजारी,
हमको विश्व में शांति ही शांति चाहिए।
न किसी की ज़मीन चाहिए,
न किसी का ज़मीर चाहिए,
जो देखेगा हमारे देश की ओर गंदी नज़र से,
वो हमें निस्तेनाबूद चाहिए।
न हमको किसी की झूठी सहानुभूति चाहिए,
न हमको किसी के प्राणों की आहुति चाहिए,
अगर किसी ने आंख उठाई हमारे देश पर,
हमको उनकी नोची हुई आंख चाहिए।
हम अपनी सुरक्षा करने में हैं सक्षम,
हमें न कोई मिडिएटर चाहिए,
जो छुरा घोंपे हर बार हमारी पीठ पर,
हमें वो दुश्मन अपना गुलाम चाहिए।
जब कदम बढ़ा ही दिए युद्ध में,
फिर पीछे हटते कदम नहीं चाहिए,
जो मारे हमारे निर्दोषों को,
हमको उन्हें पहुंचना श्मशान चाहिए।
हमें नाज़ है अपने वीर जवानों पर,
हमें उनका हौंसला बढ़ाना चाहिए,
करते जो देश की रक्षा परिवार अपना छोड़कर,
हमको ऐसे देश की शान चाहिए।।।

सिंदूर

जे गंगाधर 'गंध'
हैदराबाद

सिंदूर की ये आन,
भारतीयता की शान,
महिलामणियों का मान,
सुहागिनों की है पहचान ।
मिटाने आए आतंकी शैतान,
उजाड़ने उतरे थे क्रूर ये हैवान,
कट्टरता का लेकर घुसे फरमान,
पापिस्तान की रही यह दास्तान ।
अब शुरु होगया है सिंदूर ऑपरेशन,
इस सिंदूर से ही कांपेगा पपिस्तान,
मिट्टी में मिटने जा रहा पाकिस्तान,
कहीं का नहीं रहेगा नामोनिशान।
सिंदूर केवल प्रतीक चिह्न नहीं है,
सिंदूर भारतीयता का अस्तित्व है,
सिंदूर वीर नारीशक्ति का गौरव है,
सिंदूर मात्र मांग का मान ही नहीं,
सिंदूर विधर्मी नराधमों का काल है।
सिंदूर की भनक से ही थरथर्रायेगा,
सिंदूर के नाम से ही अब चरमरायेगा,
सिंदूर की रौनक है सोफिया खुरेशी,
सिंदूर की चमक है व्योमिका शेरनी,
सिंदूर की गूंज अब दूर-दूर तक गूंजेगी।

ओ मेरे कान्हा

नीलम सिंह

ओ मेरे कान्हा
कान्हा तेरी छवि निराली,
मैंने दिल से लगाली।
तेरे चेहरे पर बारी जाऊं,
तेरी मुस्कान पर न्यारी जाऊं ,
तेरी बांसुरी की धुन मुझे मधहोश करें,
तेरी बातों की गुन मुझे खामोश करें,
कान्हा तेरी छवि निराली,
मैंने दिल से लगाली।
तू न दिखे तो मैं आकाश निहारुं,
सब कुछ तुझ पर ही बारुं,
तेरी आवाज़ न सुनू तो तड़प जाऊं,
देख तुझे मैं सारा जग पाऊं,
कान्हा तेरी छवि निराली,
मैंने दिल से लगाली।।

स्वतंत्र वार्ता
काव्य कुंज ब्लॉग
AGA, Publications, Ltd.
396, Lower Tankbund,
Hyderabad-500080

पाकिस्तान को बेनकाब करेगा भारत का प्रतिनिधिमंडल

भारत सरकार पहलगाम की घटना पर दुनिया को जानकारी देने के लिए सांसदों के आठ समूह भेज रही है। हर समूह में अलग-अलग पार्टियों के कम से कम पांच सांसद होंगे। उनके साथ एक सीनियर राजनयिक भी होगा। ये समूह अमेरिका, ब्रिटेन, यूरोपीय संघ (EU), रूस, जापान, दक्षिण अफ्रीका और खाड़ी देशों जैसे अहम शहरों में जाएंगे। सूत्रों के मुताबिक ये प्रतिनिधिमंडल 21-22 मई को रवाना होंगे। ये सांसद पहलगाम में हुए आतंकी हमले और ऑपरेशन सिंदूर के बारे में दुनिया को बताएंगे। कुछ ऐसे लोग भी शामिल हैं जो सांसद नहीं हैं। सीनियर राजनयिक इन सांसदों की मदद करेंगे। इस लिस्ट में पूर्व विदेश सचिव एच.वी. श्रृंगला, फ्रांस में भारत के पूर्व राजदूत जावेद अशरफ और मोहन कुमार, और जापान में पूर्व राजदूत सुजान चिनॉय जैसे बड़े नाम शामिल हैं।

सलमान खुर्शीद दक्षिण और दक्षिण-पूर्व एशिया जाएंगे

कांग्रेस के सांसद सलमान खुर्शीद दक्षिण और दक्षिण-पूर्व एशिया जाएंगे। वे दक्षिण कोरिया, जापान और सिंगापुर जैसे देशों में बात करेंगे। जेडीयू के सांसद संजय झा और श्रृंगला भी एक समूह का नेतृत्व करेंगे। सुप्रिया सुले (एनसीएसपी), और श्रीकांत शिंदे (शिवसेना) भी एक-एक समूह का नेतृत्व कर रहे हैं। सुले के समूह में राजीव प्रताप रूडी (बीजेपी), अनुराग ठाकुर (बीजेपी), मनीष तिवारी (कांग्रेस), बृज लाल (बीजेपी) और तेजस्वी सूर्या (बीजेपी) शामिल हैं। असदुद्दीन ओवैसी (एआईएमआईएम) भी एक प्रतिनिधिमंडल का हिस्सा होंगे। डीएमके नेता कनिमोझी रूस जाने वाले समूह का नेतृत्व करेंगी। आरजेडी सांसद प्रेम चंद गुप्ता उनकी टीम में हैं।

शशि थरूर अमेरिका में सांसदों की संभालेंगे कमान

कांग्रेस सांसद शशि थरूर अमेरिका जाएंगे। रिपोर्ट के मुताबिक जम्मू-कश्मीर के पूर्व मुख्यमंत्री गुलाम नबी आजाद ब्रिटेन, फ्रांस, जर्मनी और ब्रुसेल्स में EU के मुख्यालय का दौरा करने वाले समूह का नेतृत्व कर सकते हैं। बीजेडी के राज्यसभा सांसद सस्मित पात्रा, टीडीपी के लोकसभा सांसद लावु श्री कृष्णदेवराय और बीजेपी सांसद जय पांडा भी इन समूहों में शामिल हो सकते हैं।बीजेपी के आर.एस. प्रसाद के पश्चिम एशिया जाने की संभावना है, जिसमें सऊदी अरब भी शामिल है। समाजवादी पार्टी के सांसद राजीव कुमार राय भी एक प्रतिनिधिमंडल का हिस्सा हैं। तृणमूल कांग्रेस के सांसद सुदीप बंद्योपाध्याय को भी बुलाया गया है, लेकिन उन्होंने बताया है कि वे इतनी लंबी यात्रा करने के लिए ठीक नहीं हैं।

इन समूहों को भेजने का मकसद है कि भारत सरकार दुनिया को पहलगाम की घटना और ₹ऑपरेशन सिंदूर₹ के बारे में सही जानकारी दे। सरकार चाहती है कि दुनिया को पता चले कि असल में क्या हुआ था और भारत इस मामले में क्या कर रहा है। अलग-अलग पार्टियों के सांसदों को भेजने से यह भी पता चलता है कि इस मुद्दे पर पूरा देश एक साथ है। सरकार यह भी सुनिश्चित कर रही है कि दुनिया के बड़े देशों को इस बारे में सही जानकारी मिले, ताकि कोई गलतफहमी न हो।

सरकार ने विपक्षी दलों के सांसदों को विदेश भेजने की योजना बनाई है। कांग्रेस और कई अन्य विपक्षी दलों ने इस योजना को स्वीकार कर लिया है। यह योजना, पहलगाम में हुए आतंकी हमले के बाद भारत का पक्ष रखने के लिए है। सरकार अलग-अलग देशों में सर्वदलीय संसदीय

सांसदों का 8 ग्रुप दुनिया को बताएगा सच

प्रतिनिधिमंडल भेजेगी। बताया जा रहा है कि संसदीय कार्य मंत्री किरण रिजिजू ने कांग्रेस अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खड़गे को फोन किया। उन्होंने खड़गे से इस योजना में उनकी पार्टी की भागीदारी का अनुरोध किया। कांग्रेस सांसद जयराम रमेश ने ट्वीट किया, ₹कल सुबह संसदीय कार्य मंत्री किरेन रिजिजू ने कांग्रेस अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खड़गे और लोकसभा में विपक्ष के नेता राहुल गांधी से बात की और पाकिस्तान से आतंकवाद पर भारत का रुख स्पष्ट करने के लिए विदेश भेजे जाने वाले प्रतिनिधिमंडल के लिए 4 सांसदों के नाम प्रस्तुत करने को कहा। कांग्रेस ने आनंद शर्मा, गौरव गोगोई, डॉ. सैयद नसीर हुसैन और राजा बरार का नाम आगे बढ़ाया है।

सरकार ने अपने सांसदों, कुछ पूर्व मंत्रियों और राजनयिकों से भी बात की है। सरकार चाहती है कि वे भी प्रतिनिधिमंडल का हिस्सा बनें। सूत्रों के अनुसार, सरकार ने विपक्ष के कई सांसदों और पूर्व मंत्रियों से संपर्क किया है। इनमें शशि थरूर, मनीष तिवारी, अमर सिंह, सलमान खुर्शीद (कांग्रेस) शामिल हैं। जम्मू-कश्मीर के पूर्व मुख्यमंत्री गुलाम नबी आजाद (डीपीएपी), जॉन ब्रिटास (CPI-M), असदुद्दीन ओवैसी (AIMIM) और प्रियंका चतुर्वेदी (UBT) को भी संपर्क किया गया है।

कांग्रेस के प्रवक्ता जयराम रमेश ने कहा, अब अचानक, पीएम ने पाकिस्तान से आतंकवाद पर भारत का रुख समझाने के लिए बहु-दलीय प्रतिनिधिमंडल को विदेश भेजने का फैसला किया है। भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस हमेशा सर्वोच्च राष्ट्रीय हित में खड़ी रहती है और बीजेपी की तरह राष्ट्रीय सुरक्षा के मुद्दों का राजनीतिकरण नहीं करती है। इसलिए, आईएनसी निश्चित रूप से इन प्रतिनिधिमंडलों का हिस्सा होगा।

मोदी सरकार की नरसिम्हा राव वाली कूटनीति

सरकार पहलगाम में आतंकवादी हमले के जवाब में चलाए गए 'ऑपरेशन सिंदूर' के बाद आक्रामक राजनयिक अभियान शुरू करने का फैसला किया है। इसके तहत वैश्विक मंच पर भारत के पक्ष को मजबूती से रखने और पाकिस्तान प्रायोजित आतंकवाद को बेनकाब किया जाएगा। खास बात है कि इस काम के लिए मोदी सरकार ने नरसिम्हा राव की कूटनीति के रास्ते पर चलने का फैसला लिया है। अगले सप्ताह से विभिन्न देशों में कई बहुदलीय प्रतिनिधिमंडल भेजेगी। यह ठीक उसी तर्ज पर जब नरसिम्हा राव ने यूएन में कश्मीर मुद्दे पर भारत का पक्ष रखने के लिए विपक्ष के नेता अटल बिहारी वाजयपेयी के नेतृत्व में प्रतिनिधिमंडल भेजा था।

1994 में तत्कालीन प्रधानमंत्री नरसिंह राव ने जिनेवा में संयुक्त राष्ट्र के मानवाधिकार से जुड़े सत्र में एक प्रतिनिधि मंडल भेजने का फैसला किया था। इसका उद्देश्य कश्मीर समस्या पर भारत का पक्ष रखना और पाकिस्तान द्वारा समर्थित एक प्रस्ताव को विफल करना था, जिसमें नई दिल्ली की निंदा की जाती। उस समय यह प्रयास बहुत सफल रहा था। वाजपेयी के नेतृत्व वाले प्रतिनिधिमंडल के हस्तक्षेप के कारण पाकिस्तान का प्रस्ताव गिर गया था।

पीवी नरसिम्हाराव ने विदेश नीति के धुरंधर माने जाने वाले विपक्ष के नेता अटल बिहारी वाजपेयी को प्रतिनिधि मंडल का प्रमुख नियुक्त किया था। उनके साथ कश्मीर के फारूक अब्दुल्ला और राव सरकार के विदेश राज्य मंत्री सलमान खुर्शीद भी थे। संयुक्त राष्ट्र के बारे में गहन जानकारी के साथ प्रतिनिधिमंडल को मजबूत करने के लिए, संयुक्त राष्ट्र में भारत के तत्कालीन राजदूत हामिद अंसारी को भी शामिल किया गया था।

राव के कदम से परेशान थे खुर्शीद?

अटल बिहारी वाजपेयी ने अपने छह दशक से अधिक के राजनीतिक करियर में हमेशा व्यक्तिगत समीकरणों पर भरोसा किया। उन्होंने पार्टी लाइन से हटकर मैत्रीपूर्ण संबंध बनाए। पूर्व प्रधानमंत्री पीवी नरसिम्हा राव के साथ उनकी नजदीकी हमेशा उनके संबंधित राजनीतिक दलों में उत्सुकता भरी चर्चा का विषय रही। राव की तरफ से वाजपेयी को यूएन में भेजने के कदम को उनकी पार्टी के भीतर अच्छी प्रतिक्रिया नहीं मिली। तत्कालीन विदेश राज्य मंत्री सलमान खुर्शीद जिनेवा में वाजपेयी के अधीन काम करने से विशेष रूप से परेशान थे।

गहमर गांव से आर्मी में 15000 लोग

मां खाती हैं बच्चों को फौजी बनाने की कसम

8 मई, रात के 10 बज रहे होंगे। कश्मीर से मेरे बेटे नीरज का फोन आया। वो उरी सेक्टर में बॉर्डर पर तैनात है। उसने बताया- पापा यहां फायरिंग तेज हो गई है। ड्यूटी बढ़ाई जा रही है। कुछ दिनों तक फोन नहीं कर पाऊंगा। आप सब परेशान मत होना। 3 दिन तक कोई फोन नहीं आया। 11 मई को गोलीबारी थमी। तब बेटे का दोबारा फोन आया। जब पता चला कि सब ठीक है। तब थोड़ा सुकून मिला।'

फौजी बेटे की बात करते हुए 56 साल के दिनेश सिंह का दिल गर्व से भर जाता है। वो कहते हैं- खुशी होती है जब किसी को बताता हूं कि मेरा बेटा सेना में है। वो देश की रक्षा के लिए सरहद पर ड्यूटी कर रहा है। नीरज, यूपी के गाजीपुर में गहमर गांव के रहने वाले है। उनकी ही तरह गांव के 90 घरों के 200 से ज्यादा बच्चे इस वक्त जम्मू-कश्मीर में ड्यूटी पर तैनात हैं।

ये सभी परिवार गांव की 100 साल पुरानी उस परंपरा को निभा रहे हैं, जिसमें मां बच्चों को जन्म देने के बाद उन्हें 'फौजी' बनाने की कसम खाती हैं। गांववालों के मुताबिक, ब्रिगेडियर से लेकर सिपाही तक गांव में 5 हजार से ज्यादा रिटायर्ड फौजी और करीब 10 हजार लोग सेना में ड्यूटी कर रहे हैं।

15 हजार से ज्यादा सैनिक देने वाले गांव की कहानी...

यूपी में गाजीपुर से 40 किमी दूर पड़ता है गहमर गांव। आबादी के लिहाज से ये एशिया का सबसे बड़ा गांव है, लेकिन ये इसकी पहचान नहीं है। इसकी पहचान है देशभक्ति का जुनून। यहां हर घर में कोई न कोई व्यक्ति सेना में है या रह चुका है। इस गांव ने भारतीय सेना को अब तक 15 हजार से ज्यादा सैनिक दिए हैं। इसी वजह से लोग गहमर को 'फौजियों वाला गांव' भी कहते हैं।

गहमर में सेना में जाने की तैयारी में जुटे युवाओं से भारत-पाकिस्तान के बीच बने हालात पर बात की। 90 साल के बंशीधर सिंह 1971 की जंग लड़ चुके हैं। वे कहते हैं कि सरकार अगर इजाजत दे तो वे आज भी बॉर्डर पर जाकर पाकिस्तान से युद्ध लड़ सकते हैं। गांव में घुसते ही हर गेट पर सैनिकों के नाम लिखे मिले। हर घर में फौजियों की तस्वीरें, वर्दियां और सेना के मेडल अलमारियों में सजे हैं। यहां के 50 से ज्यादा लोग पाकिस्तान के खिलाफ 1965 की जंग से लेकर कारगिल तक की लड़ाई लड़ चुके हैं।

72 साल के पूर्व सूबेदार मेजर वीरबहादुर सिंह 1977 से लेकर 2008 तक इंडियन आर्मी में रह चुके हैं। भारत-पाकिस्तान के बीच मौजूदा हालात को लेकर वे कहते हैं, 'भारत ने पाकिस्तान के खिलाफ निर्णायक लड़ाई लड़ी। 4 से 5 दिन में ही दुश्मन देश के होश फाख्ता हो गए। उसके पास अब रोने के अलावा कुछ नहीं बचा। भारतीय सेना और पाकिस्तानी सेना का कोई मुकाबला ही नहीं है। बीते 10 साल में आर्मी में जो नए हथियार और तकनीकें शामिल हुई हैं, उसका फायदा ये हुआ कि हफ्ते भर में ही पाकिस्तान ने हमारे आगे घुटने टेक दिए और संघर्ष विराम जैसी स्थिति बन गई। हमारी सेना ने जबरदस्त पराक्रम दिखाया।'

हालांकि, वीर बहादुर को एक बात का मलाल भी है। वे कहते हैं, 'ये वक्त था कि इस बार हम पीओके को भारत में मिला सकते थे। अगर ऐसा हो गया होता, तो सीमापार से होने वाली आतंकी घटनाएं हमेशा के लिए खत्म हो सकती थीं। चलिए जो हुआ अच्छा ही हुआ है। मैं भारतीय जवानों से यही कहूंगा कि आप लोग इसी तरह डटे रहो और दुश्मन को जवाब देते रहो। जय हिंद की सेना।'

गहमर गांव से भारतीय सेना में 42 लेफ्टिनेंट से लेकर 23 ब्रिगेडियर रैंक तक के अधिकारी रहे हैं। मौजूदा समय में भी 45 कर्नल रैंक के अधिकारी सेना में एक्टिव हैं। गांव 22 छोटे टोलों में बंटा हुआ है। हर टोले का नाम किसी न किसी सैनिक के नाम पर रखा गया है, जो गांव के सैन्य इतिहास को दिखाता है।

गांव के चंदन सिंह 2006 से लेकर 2015 तक लेह और जम्मू-कश्मीर के रियासी जिले में पोस्टेड थे। वे सीजफायर पर असहमति जताते हुए कहते हैं, 'आज पाकिस्तान जितना बोल पा रहा है, कहीं न कहीं उसकी वजह चीन का उसके साथ खड़े होना है। आज हमने अमेरिका के दबाव में आकर युद्ध विराम कर लिया।

ये बहुत दुखद है। एक भूतपूर्व सैनिक होने के नाते उस रात मुझे नींद नहीं आई।'

16 मार्च 2021 को लोकसभा में बताया गया कि देश में कुल 11 लाख 51 हजार 726 जवान सीमा पर तैनात थे। इसमें से 14.5%, यानी 1 लाख 67 हजार 557 सैनिक अकेले यूपी के हैं। दूसरे नंबर पर 7.7%, यानी 89 हजार 88 जवानों के साथ पंजाब है। तीसरे नंबर पर 87 हजार 835 जवानों के साथ महाराष्ट्र है। यूपी के गाजीपुर जिले से मौजूदा समय में 10,350 सैनिक सेना के अलग-अलग हिस्सों में तैनात हैं। इसमें सबसे ज्यादा भागीदारी गहमर गांव से है।

गांव में किसी भी परिवार से मिलिए, एक बात कॉमन है। दादा रिटायर होकर खेती बाड़ी कर रहे हैं और उनका बेटा या पोता बॉर्डर पर ड्यूटी में तैनात है। गहमर के लोग 1914 से लेकर 1919 में पहले विश्व युद्ध में भी शामिल हुए। उस वक्त अंग्रेजों के खिलाफ गांव के 228 लोगों ने जंग लड़ी थी, जिसमें से 21 शहीद हो गए।

तबाही के बाद केदारनाथ अब कितना सेफ

मंदिर की सुरक्षा के लिए 3 लेयर की सेफ्टी वॉल और चौड़े रास्ते; कितना कुछ बदला

'2013 में बाढ़ वाले दिन रामबाड़ा में था। हर तरफ सिर्फ पानी और मलबा दिख रहा था। मेरी आंखों के सामने ऐसा सैलाब आया कि सब कुछ बहा ले गया। कुछ ही सेकेंड में होटल, दुकानें, लोग और जानवर सब बह गए। लगने लगा था कि अब कभी यहां लोग नहीं आएंगे, लेकिन 13 साल बाद देखो...सड़कें चौड़ी हो गई, रास्ता चकाचक है। बुजुर्गों को पालकी में बैठाकर गौरीकुंड से केदारनाथ धाम की यात्रा कराने वाले राकेश थापा खुश हैं कि सरकार ने पूरा सिस्टम ठीक कर दिया है। इससे उन्हें भी सुकून हो गया है। 2 मई से केदारनाथ धाम के कपाट खोल दिए गए है। 17 मई तक लगभग चार लाख लोग दर्शन कर चुके हैं। अनुमान है कि इस साल चारधाम यात्रा में 25 लाख लोग सिर्फ केदारनाथ दर्शन के लिए पहुंचेंगे।

गढ़वाल कमिश्नर के मुताबिक, मंदिर तक पहुंचने का रास्ता चौड़ा किया जा रहा है। मंदिर के पीछे और मंदाकिनी-सरस्वती नदियों के किनारे 3 लेयर सेफ्टी वॉल बनाई गई है। इससे बाढ़ के हालात में मंदिर सेफ रहेगा। इतने श्रद्धालुओं को उत्तराखंड सरकार और मंदिर समिति कैसे संभाल रही है? डेवलपमेंट किस स्टेज पर है? सुरक्षा के इंतजाम कैसे हैं? 2013 में पूरी तरह तबाह हो चुकी केदार घाटी अब पहले की तुलना में यात्रियों के लिए कितनी सेफ है? इसकी पडताल करती रिपोर्ट....।

उत्तराखंड सरकार के ऑफिशियल आंकड़ों के मुताबिक, 2 मई को कपाट खुलने के बाद पहले दिन करीब 31 हजार श्रद्धालु केदारनाथ धाम पहुंचे। 15 मई तक करीब 3.34 लाख श्रद्धालु धाम पहुंच चुके हैं। उत्तराखंड सरकार के मुताबिक, चारधाम यात्रा में सबसे ज्यादा फुटफॉल केदारनाथ में ही होता है। पिछले साल यात्रा में शामिल हुए 46 लाख लोगों में से 16 लाख यात्रियों ने अकेले केदारनाथ के दर्शन किए। ऐसे में जून से अगस्त के बीच अगर मौसम सही रहता है, तो इस बार 25 लाख से ज्यादा लोगों के केदारनाथ धाम पहुंचने का अनुमान है। धाम में 7 हजार लोगों के ठहरने का इंतजाम है।

गढ़वाल कमिश्नर विनय शंकर पांडे का मानना है कि केदारनाथ आपदा के बाद धाम में हुए रीडेवलपमेंट ने तीर्थ यात्रियों का भरोसा पहले से दोगुना कर दिया है। रीडेवलपमेंट प्रोजेक्ट का 80% काम पूरा हो चुका है। इसमें 21 करोड़ की लागत से 18 किमी का गौरीकुंड-केदारनाथ पैदल मार्ग, आपदा में तबाह हुए हिस्सों की मरम्मत और मंदाकिनी-सरस्वती नदियों के किनारे नए घाट बनाना शामिल है। तीर्थयात्रियों का लोड मैनेज करने के लिए रामबाड़ा से गरुड़चट्टी तक 5.35 किमी लंबा और 1.8 मीटर

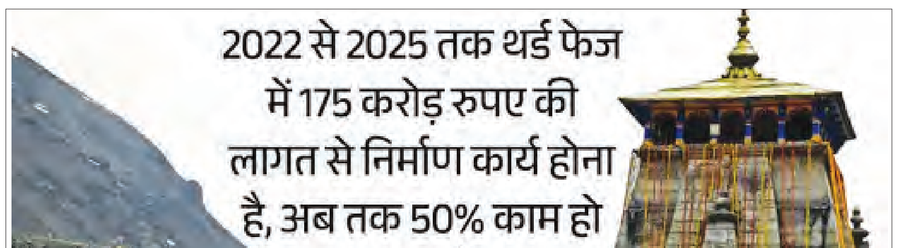

चौड़ा रास्ता बनाया जा रहा है। विनय शंकर पांडे कहते हैं, '4,081 करोड़ रुपए की लागत से बनने वाले इस रोपवे को पब्लिक-प्राइवेट पार्टनरशिप यानी पीपीपी मॉडल के जरिए डेवलप कर रहे हैं। अभी ये प्रोजेक्ट टेंडर स्टेज पर है। प्रक्रिया पूरी होते ही कंस्ट्रक्शन शुरू हो जाएगा।'

21 अक्टूबर 2022 को प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने केदारनाथ रोप-वे परियोजना का शिलान्यास किया था। सोनप्रयाग से केदारनाथ जाने के लिए यात्रियों को 18 किमी पैदल चलना पड़ता है। इसमें करीब 8 से 9 घंटे लगते हैं। रोप-वे बन जाने के बाद केदारनाथ यात्रा बहुत आसान हो जाएगी। सोनप्रयाग से केदारनाथ की दूरी सिर्फ 36 मिनट में पूरी हो सकेगी। करीब 1800 यात्री 1 घंटे में केदारनाथ धाम पहुंच सकेंगे।

उत्तराखंड के तीर्थ पुरोहित, टूर एंड ट्रैवल एजेंट, होटल बिजनेस, पिट्ठू और छोटे दुकानदारों को मिलाकर करीब 2 लाख परिवारों की रोजी-रोटी केदारनाथ यात्रा पर निर्भर हैं। आपदा के बाद और कोरोना काल में केदारनाथ धाम के कपाट बंद रहे। उस दौरान यहां के छोटे दुकानदारों को आर्थिक तंगी झेलनी पड़ी। 2022 से लगातार केदारनाथ आने वाले यात्रियों का आंकड़ा 15 लाख से ऊपर पहुंच रहा है। इस बार ये आंकड़ा बढ़ सकता है। केदारनाथ मंदिर में बीते 40 साल से पूजा-पाठ करा रहे राम प्रकाश पुरोहित का घर और दुकान 2013 में आई बाढ़ में बह गए थे। सरकार से मिली राहत राशि से उन्होंने दोबारा दुकान शुरू की है। राम प्रकाश कहते हैं, '2013 में आई बाढ़ में मेरे सामने ही 2-3 मिनट में सब कुछ बर्बाद हो गया। उस वक्त ये लग रहा था कि शायद अब हम कभी यहां दोबारा नहीं बस पाएंगे। सरकार ने यहां तेजी से रीडेवलपमेंट करवाया है। धाम तक जाने वाला आस्था पथ पूरा बन चुका है।'

'पहले गौरीकुंड से यात्रा छोटी थी, लेकिन यात्रियों को बहुत परेशानी होती थी। छोटे-छोटे रास्तों पर खच्चर और लोग साथ चलते थे। इसमें जानवरों से टक्कर लगकर गिरने का खतरा रहता है। कई बार खच्चर खुद फिसल कर गिर जाते थे। अब मंदिर तक जाने के लिए नया रास्ता बन गया है। ये पहले से 4 किमी लंबा जरूर है, लेकिन काफी चौड़ा है। इसमें खच्चर और यात्री आसानी से साथ-साथ चल सकते हैं।'

पिछले साल केदारनाथ यात्रा लोकल बिजनेस के लिहाज से भी काफी अच्छी रही। घोड़े-खच्चरों, हेलिकॉप्टर से यात्रा और पैदल यात्रियों की बढ़ी संख्या से लगभग 190 करोड़ का कारोबार हुआ। 2022 में केदारनाथ धाम में अकेले खच्चर और पालकी-पिट्ठू व्यवसायियों ने करीब 109 करोड़ रुपए का रिकॉर्ड कारोबार किया था। इस साल इससे ज्यादा कमाई का अनुमान है।

चार धामों में सबसे मुश्किल पैदल यात्रा केदारनाथ की है। यहां हमेशा खतरा बना रहता है। 16-17 जून 2013 की त्रासदी के बाद भी यहां समय-समय पर रुकावटें आती रही हैं। पिछले साल 31 जुलाई को केदारनाथ रूट पर भारी बारिश के कारण यात्रा रोक दी गई थी। इसके तुरंत बाद 4 अगस्त को यहां भयानक लैंडस्लाइड हुई, इसमें 15 हजार यात्री फंस गए और 5 यात्रियों की मौत हो गई थी। ऐसी स्थिति से निपटने के लिए इस बार केदारनाथ में क्या अरेंजमेंट हैं? इस पर गढ़वाल कमिश्नर विनय शंकर पांडे कहते हैं, 'पिछले साल केदारनाथ में भारी बारिश के कारण जो रूट बह गए थे, उन्हें यात्रा शुरू होने से पहले सही कर दिया गया है।'

पिछली यात्राओं से सबक लेते हुए यात्रा में कई होलडिंग पॉइंट भी बनाए हैं। यात्रा के दौरान कई बार मौसम खराब होता है। कई बार लैंडस्लाइड भी होती है। इसे देखते हुए लिमिटेड यात्रियों के जत्थे धाम तक भेजे जाएंगे। जब एक जत्था दर्शन कर लौट आएगा, तब दूसरे को रवाना किया जाएगा। इससे न सिर्फ दर्शन आसान होंगे बल्कि केदारघाटी पर दबाव भी कम पडेग़ा।'

बद्रीनाथ-केदारनाथ मंदिर समिति के पूर्व चेयरमैन अजेंद्र अजय कहते हैं, '2013 की आपदा के बाद लोग केदारनाथ आने से घबराने लगे थे। दहशत ऐसी थी कि 2014 में महज 39 हजार यात्री धाम पहुंचे। इसके बाद 2017 तक केदारनाथ आने वाले यात्रियों की संख्या 5 लाख तक भी नहीं पहुंची। केदारनाथ धाम आने में लोगों का भरोसा बढ़े, इसके लिए खुद पीएम मोदी ने यहां आकर रात बिताई। वो आपदा के बाद से 6 बार यहां के डेवलपमेंट प्रोजेक्ट को देखने आ चुके हैं।

'केंद्र सरकार के केदारनाथ रीडेवलपमेंट प्रोजेक्ट की मदद से यहां चौड़े यात्रा मार्ग, अस्पताल और ठहरने की अच्छी व्यवस्था बनाई गई है। इसका असर अब पर्यटकों की बढ़ती संख्या में देखने को मिल रहा है।'

केदारनाथ मंदिर समिति के मुताबिक, इस बार यात्रियों को केदारनाथ के दर्शन के लिए लंबी लाइन में नहीं लगना पड़ेगा। इसके लिए टोकन सिस्टम लागू किया गया है। यात्री टोकन में दिए गए समय के हिसाब से दर्शन कर रहे हैं। यात्रा रूट पर किसी भी यात्री की तबीयत बिगड़ने पर तुरंत इलाज मिल रहा है।

यात्रियों के तुरंत ट्रीटमेंट के लिए केदारनाथ, केदारनाथ बेस कैम्प, लिंचोली, छोटी लिंचोली, रामबाड़ा, भीमबली, जंगल चट्टी, गौरीकुंड और सोनप्रयाग में मेडिकल सेंटर बनाए गए हैं। यहां 24 घंटे डॉक्टर और फार्मासिस्ट रहते हैं। जरूरी दवाइयां भी हर वक्त उपलब्ध रहती हैं। सभी मेडिकल सेंटरों पर ऑक्सीजन की सुविधा भी रहती। केदारघाटी में अचानक मौसम बदल जाता है। ऐसे में ट्रैकिंग करते समय कोई भी घटना होने पर यात्री इंट्रानेट नेटवर्क की मदद से अपनी परेशानी बता सकेंगे और उन्हें तुरंत मदद मुहैया कराई जाएगी।

चारधाम यात्रा शुरू होने से पहले 28 अप्रैल को उत्तराखंड के सीएम पुष्कर सिंह धामी ने सभी जिलाधिकारियों के साथ बैठक की थी। अब भी वे लगातार इंतजामों की समीक्षा कर रहे हैं। उन्होंने कहा है कि चारधाम यात्रा बिना किसी बाधा के चल रही है।

33 करोड़ नहीं 33 प्रकार के हैं देवता

कौन-कौन शामिल हैं 33 कोटि देवताओं में

हिन्दू धर्मग्रंथों में 33 करोड़ नहीं, बल्कि 33 कोटि देवताओं का जिक्र है। यहां कोटि शब्द का अर्थ करोड़ नहीं, बल्कि प्रकार या श्रेणी है। संस्कृत शब्द कोटि के दो अर्थ हैं — करोड़ और प्रकार। इसी वजह से शब्द का गलत अनुवाद करके लोगों ने यह समझ लिया कि हिन्दू धर्म में 33 करोड़ देवता हैं।

ग्रंथों में 33 देवताओं के बारे में लिखा है। ये 33 देवता अलग-अलग कोटियों या श्रेणियों में बताए हैं-

आठ वसु (अष्ट वसु)
ग्यारह रुद्र (एकादश रुद्र)
बारह आदित्य
इंद्र,प्रजापति

इनकी कुल संख्या मिलाकर 33 होती है। कुछ ग्रंथों में इंद्र और प्रजापति के स्थान पर अश्विनी कुमारों को शामिल किया गया है, जो आयुर्वेद और चिकित्सा के देवता माने जाते हैं।

अष्ट वसु (8 वसु): वसु शब्द का अर्थ है — जो सृष्टि में विद्यमान और उसे चलाने वाले तत्त्व हैं। ये हैं: आप (जल), ध्रुव (ध्रुव तारा या स्थिरता का प्रतीक), सोम (चंद्रमा), धर (पृथ्वी), अनिल (वायु), अनल (अग्नि), प्रत्यूष (प्रातः काल), प्रभास (प्रकाश)

एकादश रुद्र (11 रुद्र): रुद्र शिव के स्वरूप माने जाते हैं, जो सृजन, संहार और परिवर्तन के प्रतीक हैं: मनु, मन्यु, शिव, महत, ऋतुध्वज, महिनस, उम्रतेरस, काल, वामदेव, भव, धृतध्वज

द्वादश आदित्य (12 आदित्य): आदित्य सूर्य के विभिन्न रूप हैं, जो वर्ष के बारह महीनों से भी जुड़े हुए माने जाते हैं- अंशुमान, आर्यमन, इंद्र, त्वष्टा, धातु, पर्जन्य, पूषा, भग, मित्र, वरुण, वैवस्वत, विष्णु

इंद्र और प्रजापति या अश्विनी कुमार)

इंद्र देवताओं के राजा माने जाते हैं, जो मेघ, वर्षा और युद्ध के देवता हैं। प्रजापति ब्रह्मा का एक रूप माने जाते हैं, जो सृष्टि के रचयिता हैं।

कई शास्त्रों में इनके स्थान पर अश्विनी कुमारों को 33 कोटि देवताओं में शामिल किया गया है। ये दोनों जुड़वां देवता हैं और आयुर्वेद से जुड़े हैं।

श्रीकृष्ण की सीख: रिश्तों में वाद-विवाद हो जाए तो धैर्य से काम लें

क्रोध और जल्दबाजी से रिश्ते टूट सकते हैं

जीवन में रिश्ते निभाना जितना आवश्यक है, उतना ही चुनौतीपूर्ण भी है। जब अपनों के बीच विवाद हो, तब किसी का पक्ष न लेना ही सबसे बड़ी समझदारी हो सकती है। श्रीकृष्ण केवल परिवार, रिश्ते और व्यवहार के भी मार्गदर्शक भी हैं। उनकी एक कथा से हम सीख सकते हैं कि रिश्तों में विवाद हो जाए तो उस समय हमें किन बातों का ध्यान रखना चाहिए?

पौराणिक कथा है कि श्रीकृष्ण के यदुवंश के एक राजकुमार अनिरुद्ध का विवाह हो रहा था। श्रीकृष्ण पूरे यदुवंश के साथ भोजकट नगर में बारात लेकर पहुंचे थे, तब विवाह की खुशियां हर ओर थीं।

विवाह में श्रीकृष्ण की पत्नी रुक्मिणी के भाई रुक्मी ने बलराम को चौसर खेलने के लिए आमंत्रित कर लिया। बलराम को ये खेल अधिक नहीं आता था, लेकिन खेलना उन्हें पसंद था। इसलिए वे खेलने बैठ गए। शुरू में बलराम खेल में हारते रहे और हर बार रुक्मी उनकी हार का उपहास उड़ाता रहा।

बलराम ने अंत में खेल में जीत हासिल की तो रुक्मी ने उन्हें अपमानजनक शब्द कहे और बोला कि तुम ग्वाले क्या जीतोगे? वहां मौजूद अधिकतर राजा रुक्मी का ही साथ दे रहे थे और बलराम का उपहार उड़ा रहे थे।

ये बात बलराम को चुभ गई। उनका गुस्सा फूट पड़ा और उन्होंने अपने मुद्गर से रुक्मी को मार डाला। पलभर में विवाह का उत्सव शोक में बदल गया। हर्ष का माहौल पलभर में भय, संकोच और चिंता में परिवर्तित हो गया।

वह समय श्रीकृष्ण के लिए सबसे कठिन था। एक ओर पत्नी रुक्मिणी थीं, जिनका भाई मारा गया था, और दूसरी ओर भाई बलराम थे, जो अपमानित होकर उग्र हो गए थे।

श्रीकृष्ण जानते थे कि किसी एक का पक्ष लेने से परिवार में दरार पड़ सकती है। उन्होंने तत्काल कुछ भी नहीं कहा, उन्होंने न किसी का समर्थन किया और न ही विरोध। वे मौन रह गए। कुछ समय बीता और जब रुक्मिणी और बलराम का मन शांत हुआ, तब श्रीकृष्ण ने एक-एक करके दोनों से बात की। उन्होंने बलराम से कहा कि विवाह जैसे शुभ अवसर पर आपको जुए जैसे कर्म से दूर रहना था।

श्रीकृष्ण ने रुक्मिणी से कहा कि हम आपके भाई के घर मेहमान बनकर आए थे, पर उन्होंने हमारे सम्मान का ध्यान नहीं रखा। मेहमानों का अपमान नहीं होना चाहिए।

श्रीकृष्ण की सीख

इस तरह श्रीकृष्ण ने अपने भाई और पत्नी के बीच की स्थिति को शांत किया। इस प्रसंग से श्रीकृष्ण हमें यह सिखाते हैं कि रिश्तों में जब टकराव हो जाए तो तुरंत प्रतिक्रिया देने की जगह मौन और धैर्य से काम लेना चाहिए। समय बीतने के बाद ही सही बात कही जाए, ताकि किसी का अहंकार नहीं टूटे और संबंधों की डोर भी न कटे।

घर-परिवार में विवाद हो जाना स्वाभाविक है, लेकिन उन्हें सुलझाने के लिए भावनाओं से ज्यादा विवेक की आवश्यकता होती है। समय के साथ घाव भरते हैं और समझदारी से रिश्ते बचाए जाते हैं।

सीढ़ियों के नीचे भूलकर भी न रखें ये चीजें, गले पड़ जाएगी गरीबी

वास्तु शास्त्र में घर के हर स्थान और दिशा के लिए कुछ खास नियम बनाए गए हैं। इनका ध्यान रखने से घर में हमेशा सुख-शांति और खुशहाली बनी रहती है। शास्त्रों में सीढ़ियों के नीचे के स्थान को भी खास महत्व दिया गया है। ऐसे में अगर जाने-अनजाने में आप इसके नीचे कुछ गलत वस्तुएं रख दें तो इससे घर में दरिद्रता आ सकती है।

घर में हमेशा सुख-शांति और खुशहाली बनाए रखना हर किसी के मन की इच्छा होती है। लेकिन अगर घर में वास्तु दोष हो तो व्यक्ति कितना भी प्रयास कर ले जीवन की समस्याएं उसका पीछा नहीं छोड़ती हैं। वास्तुशास्त्र के अनुसार, घर के हर कोने का खास महत्व होता है और वास्तुदोष को दूर रखने के लिए हर स्थान के नियमों का ख्याल रखना जरूरी होता है। ऐसा न करने से घर में दरिद्रता दस्तक दे सकती है और व्यक्ति के बनते हुए काम भी बिगड़ने लगते हैं। शास्त्रों की मानें तो इसकी एक महत्वपूर्ण वजह घर में वास्तुदोष को होना है। माना जाता है कि घर में सीढ़ियों के नीचे का स्थान भी बहुत खास महत्व रखता है। लेकिन अगर वहां कुछ गलत चीजें रख दी जाएं तो इससे परिवार के सदस्यों को कई परेशानियों का सामना करना पड़ सकता है। ऐसे में सीढ़ियों के नीचे कोई भी वस्तु रखने से पहले वास्तु के ये विशेष नियम जरूर जान लें

सीढ़ियों के नीचे टॉयलेट बनवाने से आती है नकारात्मकता

माना जाता है कि सीढ़ियों के नीचे भूलकर भी टॉयलेट नहीं बनवाना चाहिए। ऐसा करना शुभ नहीं माना जाता है। शास्त्रों में बताया गया है कि टॉयलेट से सबसे ज्यादा नकारात्मक ऊर्जा का संचार होता है। ऐसे में इसे सीढ़ियों के नीचे बनवाने से यह नकारात्मक ऊर्जा पूरे घर में फैल सकती है और वास्तु दोष भी लग सकता है। माना जाता है कि सीढ़ियों के नीचे टॉयलेट बनवाने से परिवार के सदस्यों की सेहत पर भी बुरा प्रभाव पड़ता है और इससे घर में समस्याओं का सामना करना पड़ सकता है।

सीढ़ियों के नीचे कूड़ेदान रखने से लगता है भारी दोष

वास्तु शास्त्र के अनुसार सीढ़ियों के नीचे कूड़ेदान रखना शुभ नहीं होता है। ऐसा करने से घर में भारी वास्तु दोष लग सकता है जिससे परिवार के सदस्यों को कई समस्याओं का सामना करना पड़ सकता है। माना जाता है कि सीढ़ियों के नीचे कूड़ेदान रखने से घर में नकारात्मक ऊर्जा का संचार बढ़ सकता है और सकारात्मकता दूर होने लगती है। ऐसे में यह गृह क्लेश का कारण भी बन सकती है। अगर आप सीढ़ियों के नीचे कचरा रखने का स्थान बनाते हैं तो इससे घर की आर्थिक तंगी भी बिगड़ सकती है और जरूरी कार्यों में रुकावटें आ सकती हैं।

सीढ़ियों के नीचे मंदिर बनवाने से भगवान हो सकते हैं नाराज

अगर आप घर में सीढ़ियों के नीचे पूजा घर बनवाने का विचार कर रहे हैं, तो ऐसी गलती बिल्कुल भी न करें। माना जाता है कि सीढ़ियों के नीचे मंदिर लगवाना शुभ नहीं होता है। ऐसा करने से भगवान नाराज हो सकते हैं। सीढ़ियों के ऊपर हम पैर रखकर चढ़ते-उतरते हैं। ऐसे में उसके ठीक नीचे पूजा घर होने से इसे भगवान का अपमान भी माना जा सकता है। यही कारण है कि भूलकर भी मंदिर को सीढ़ियों के नीचे नहीं बनवाना चाहिए। साथ ही, सीढ़ियों के ऊपर गतिविधि होती रहती है और उस स्थान पर शोर भी बहुत होता है। इसके चलते पूजा करते समय व्यक्ति ध्यान नहीं लगा पाता है। यह भी एक कारण है कि सीढ़ियों के नीचे मंदिर नहीं बनवाना चाहिए।

सीढ़ियों के नीचे नल लगवाने से घर में आ सकती है दरिद्रता

वास्तु शास्त्र के अनुसार, सीढ़ियों के नीचे नल कभी नहीं लगवाना चाहिए। ऐसा करने से घर में वास्तु दोष उत्पन्न हो सकता है। अगर सीढ़ियों के नीचे लगे नल से पानी बहता है तो इससे व्यक्ति को आर्थिक समस्याओं का सामना करना पड़ सकता है और कितनी भी अच्छी कमाई होने के बावजूद हाथ में पैसा नहीं टिकता है। ऐसा माना जाता है कि सीढ़ियों के नीचे नल लगवाने से परिवार के सदस्यों की तरक्की पर भी बुरा प्रभाव पड़ता है और घर में दरिद्रता आ सकती है। ऐसे में घर बनवाते समय कभी भी नल सीढ़ियों के नीचे नहीं लगाना चाहिए।

विचारशील व्यक्ति और नियमित आहार से जीवन में आती है सफलता

हमें अपने आहार और विचार पर ध्यान देना चाहिए। जो लोग विचारशील हैं, अपने खान-पान का ध्यान रखते हैं, नियमों और परंपराओं का पालन करते हैं, महापुरुषों के उपदेश हमेशा याद रखते हैं, उनके जीवन में संघर्ष नहीं रहता है। इन बातों का ध्यान रखने वाले लोगों के लिए प्रकृति हमेशा सहायक रहती है। **स्वामी अवधेशानंद**

राहु गोचर कुंभ में मेष सहित इन राशियों को छप्पर फाड़ मिलेगा लाभ

राहु गोचर कुंभ राशि में होने जा रहा है। ज्योतिष में छाया ग्रह माने जाने वाले राहु अभी मीन राशि में हैं और 18 मई 2025 को शाम 7.35 बजे वक्री चाल चलते हुए कुंभ राशि में प्रवेश करेंगे। इस राशि में वह 18 महीने रहेंगे। राहु का गोचर प्रत्येक राशि पर शुभ और अशुभ प्रभाव डालता है। ऐसे में आइये जानते हैं कि किस राशि के लिए राहु का गोचर कैसा रहने वाला है।

राहु गोचर कुंभ राशि में 18 मई 2025 यानी शनिवार को होने जा रहा है। राहु करीब डेढ़ साल तक एक राशि में रहते हैं और वक्री चाल चलते हैं। इन्हें वैदिक ज्योतिष में छाया ग्रह का दर्जा दिया गया है। अभी राहु मीन राशि में हैं और अब कुंभ राशि में गोचर करने के बाद अलग-अलग राशियों पर अलग-अलग असर डालेंगे। कहा जाता है कि राहु गोचर का असर जल्दी दिखने लगता है। ऐसे में आइये जानते हैं कि राहु गोचर का प्रभाव मेष से मीन राशि पर कैसा रहेगा और साथ ही जानिए राहु के उपाय भी।

मेष राशि, आय के नए स्रोत मिलने के आसार

मेष राशि, आय के नए स्रोत मिलने के आसार

मेष राशि वालों को राहु गोचर से अनुकूल परिणाम मिल सकते हैं। आय के नए स्रोत हासिल हो सकते हैं। खासकर आपको करीबी दोस्तों का भरपूर साथ मिलेगा। समाज में मान सम्मान में इजाफा होगा। आपको कार्यक्षेत्र से लेकर परिवार तक में तालमेल बैठाकर काम करने का फायदा मिलेगा। धैर्य से काम लें। आपकी इच्छाएं पूरी होंगी। मानसिक तनाव लेने से बचें। छोटी अवधि के निवेश से बचें।

मेष राशि के लिए राहु के उपायः बुधवार शाम को किसी मंदिर में काले तिल का दान करें।

वृषभ राशि, चुनौतियों का करना पड़ेगा सामना

राहु गोचर वृषभ राशि वालों के लिए चुनौतियां लेकर आ सकता है। आपको कार्यक्षेत्र में सावधान रहना होगा। विरोधी पद प्रतिष्ठा को नुकसान पहुंचाने के प्रयास करेंगे। कारोबार में अतिरिक्त सावधानी बरतनी पड़ेगी। नई जिम्मेदारियों मिलेंगी। नौकरीपेशा जातकों को अचानक बदलावों का सामना करना पड़ सकता है। घर में चिंता का माहौल हो सकता है। मां के स्वास्थ्य को लेकर सावधान रहना होगा।

वृषभ राशि के लिए राहु के उपायः नियमित रूप से राहु बीज मंत्र ऊं भ्रां भ्रीं भ्रौं सः राहवे नमः का जप करें।

मिथुन राशि, राहु गोचर का असर रहेगा मिलाजुला

मिथुन राशि वालों के राहु गोचर का मिलाजुला असर दिखेगा। आपको कभी किस्मत का साथ मिलता दिखेगा और कभी अचानक से झटका लगेगा। पिता और गुरुओं के साथ तालमेल बनाए रखें। धार्मिक और आध्यात्मिक कार्यक्रम में हिस्सा ले सकते हैं। मन को शांति मिलेगी। कार्यक्षेत्र में जोश में होश न खो बैठे। नपा तुला रहने से लाभ होगा। परिवार में भाई बहनों से मदभेद की स्थिति हो सकती है। संयम बरतें।

मिथुन राशि के लिए राहु के उपायः नागकेसर का पौधा लगाने से लाभ होगा।

कर्क राशि, आर्थिक मामलों में सावधानी बरतें

कर्क राशि, आर्थिक मामलों में सावधानी बरतें

राहु गोचर कर्क राशि के जातकों के मन में असमंजस और अनिश्चितताएं पैदा कर सकता है। सेहत का खास ख्याल रखें। वरना अस्पताल के चक्कर काटने पड़ सकते हैं। जीवनसाथी के साथ मनमुटाव हो सकता है। ससुराल से परेशानियों का सामना करना पड़ सकता है। आर्थिक मामलों में सावधानी बरतें। वाणी पर कंट्रोल रखें वरना परिवार में हालात और बिगड़ जाएंगे। सतर्क रहें।

कर्क राशि के लिए राहु के उपायः भोलेनाथ का जलाभिषेक करें। फायदा होगा।

सिंह राशि, मतभेदों को मनभेद में न बदलने दें

सिंह राशि के जातकों को राहु गोचर के दौरान थोड़ी सावधानी बरतनी होगी। कारोबार और परिवार दोनों में तनाव के हालात पैदा हो सकते हैं। मतभेदों को मनभेद में बदलने से बचें। सेहत का ख्याल रखें। इसके साथ ही मशीनों से जुड़े काम करते हुए या वाहन चलाते समय अतिरिक्त सावधानी बरतें। इस दौरान आत्मनिरीक्षण करें और ध्यान करने से लाभ होगा। कुछ नया पढ़ें, जिससे आपकी रचनाशीलता बढ़ेगी।

सिंह राशि के लिए राहु के उपायः किसी मंदिर में जाकर काले तिल का दान करें।

नए घर में शिफ्ट होने से पहले कर लें ये उपाय

जब कोई परिवार नए घर में जाता है, तो वह सिर्फ एक इमारत में नहीं जाता। वे नई उम्मीदों और सपनों के साथ एक नई शुरुआत करते हैं। लेकिन कई बार, नए घर में जाने के बाद कुछ परेशानियां आने लगती हैं। ऐसा बुरी नजर, वास्तु दोष या नकारात्मक ऊर्जा के कारण हो सकता है। परिवार के बीच में एक अजीब सा खालीपन, तनाव और दुख समा जाता है। ऐसा उस घर पर अशुभ प्रभाव के कारण हो सकता है।

नया घर जीवन की एक नई शुरुआत का प्रतीक होता है। यह न केवल एक ठिकाना होता है, बल्कि वह स्थान होता है जहां परिवार के सपने, रिश्ते और भावनाएं फलती-फूलती हैं। लेकिन नए घर में शिफ्ट होने से पहले कुछ विशेष उपाय कर लिए जाएं, तो नकारात्मक ऊर्जा और बुरी नजर से सुरक्षा मिलती है और घर में शांति, समृद्धि और सकारात्मकता बनी रहती है। कर्इ बार लोग अपना नया घर खरीदकर शिफ्ट होते हैं, लेकिन कई बार लोग किराए के दूसरे घर में शिफ्ट होते हैं। आप जब भी घर में शिफ्ट करें तो कुछ उपाय जरूर करें।

नए घर में जाने से पहले करें ये उपाय

किसी भी नए घर में प्रवेश करते समय शुभ मुहूर्त जरूर देखना चाहिए। सोमवार, गुरुवार या शुक्रवार जैसे शुभ दिन और अमृत या लाभ की चोघड़िया में प्रवेश करना सर्वोत्तम माना जाता है। किसी अनुभवी पंडित से शुभ लग्न और नक्षत्र देखकर गृह प्रवेश की तारीख तय करें।

घर की नकारात्मक ऊर्जा को दूर करने के लिए सबसे पहले समुद्री नमक मिलाकर पूरे घर में पोंछा लगवाएं। यह पुरानी नकारात्मकता को समाप्त करता है और घर को ऊर्जावान बनाता है।

पूरे घर के हर कोने में गंगाजल या गौमूत्र का छिड़काव करें। इससे घर शुद्ध और पवित्र होता है और सकारात्मक ऊर्जा का संचार होता है। पूजा घर, रसोई और मुख्य द्वार पर विशेष ध्यान दें।

पहली बार घर में प्रवेश करते समय एक मिट्टी का दीपक जलाएं और उसमें देशी घी डालकर रखें। साथ ही घर के वातावरण को पवित्र करने के लिए ॐ नमः शिवाय या गायत्री मंत्र का उच्चारण करें।

तुलसी को घर में उत्तर-पूर्व दिशा में लगाना बेहद शुभ माना जाता है। यह सकारात्मकता का प्रतीक है और घर को रोग और बुरी शक्तियों से बचाती है।

मुख्य द्वार पर एक नींबू और सात मिर्चियों को धागे में पिरोकर टांग दें। यह बुरी नजर से सुरक्षा प्रदान करता है। इसे हर शनिवार को बदलते रहें।

घर में प्रवेश से पहले हवन या वास्तु शांति पूजा ज़रूर करवाएं। इससे पितृदोष, वास्तु दोष या राहु-केतु के प्रभाव को कम किया जा सकता है। खासतौर पर नवग्रह शांति और गणपति पूजन अत्यंत लाभकारी होते हैं।

गृह प्रवेश वाले दिन किसी काले कुत्ते को रोटी और गाय को गुड़ और चना खिलाना शुभ माना गया है। इससे राहु-केतु के दोष दूर होते हैं और घर में शांति बनी रहती है।

नए घर में पहली रात घर में दीपक जलाकर, भजन-कीर्तन या मंत्रजाप करते हुए जागरण करना अत्यंत शुभ माना गया है। यह सभी प्रकार की नकारात्मकता को समाप्त करता है और घर में दिव्य ऊर्जा का प्रवेश कराता है।

खुशकिस्मत हूँ मैं कि फिल्मों की शुरुआत सलमान खान जैसे सुपरस्टार के साथ की : पलक तिवारी

'बिजली बिजली' गाने से अपने करियर की शुरुआत करने वाली पलक तिवारी मानती हैं कि जानी-मानी अभिनेत्री श्वेता तिवारी की बेटी होने से उन्हें पहचान जरूर मिली, मगर रोल के मामले में उन्हें अपनी प्रतिभा का जलवा दिखाना होगा। सलमान खान के साथ किसी का भाई किसी की जान में दिखीं पलक हालिया रिलीज भूतनी के बाद चर्चा में हैं अपनी नई फिल्म रोमियो एस 3 से।

पलक तिवारी खुद को बहुत खुशकिस्मत मानती हैं कि फिल्मों में उनकी शुरुआत सलमान खान जैसे सुपरस्टार के साथ किसी का भाई किसी की जान से से हुई। वे कहती हैं, 'आपको एक मजेदार बात बताऊं, मेरी मम्मी (अभिनेत्री श्वेता तिवारी) के दो ही क्रश हुए थे, एक सलमान सर और दूसरे रितिक रोशन सर। मेरी मम्मी स्कूल-कॉलेज में रही होंगी, जब उनकी कुछ कुछ होता है रिलीज हुई थी। मम्मी बताती हैं कि जब सलमान सर की एंट्री होती, मम्मी समेत सभी लड़कियां सीटी मारा करती थीं, तो आप समझ सकते हैं कि जिन स्टार की मामी फैन थीं, उनके साथ मैं काम करने का कैसे सोच सकती थी। जाहिर है मेरी उम्र के कारण ये तो सिर्फ ख्वाब ही हो सकता था, तो जब मुझे किसी का भाई किसी की जान के लिए सलमान सर के साथ काम करने का मौका मिला, तो मैंने कहानी के बारे में एक पल भी नहीं सोचा। मेरे लिए ये बहुत बड़ी बात थी कि पूरे तीन महीने तक मैं उनके इर्द-गिर्द रहूंगी। मैंने उनसे बहुत कुछ सीखा। वे बहुत ही नरमदिल और अच्छे इंसान हैं। मैं बहुत भाग्यवान हूं कि उनके अनुभवों से मैं ग्रो हो पाई।'

अपने भाई की हीरो हूं मैं

पलक तिवारी की मां श्वेता तिवारी और उनके पिता राजा चौधरी का सालों पहले अलगाव हो गया था। उसके बाद पलक अपनी मां और भाई रेयांश के साथ पली-बढ़ी हैं। अपनी जिंदगी के प्राउड मोमेंट के बारे में वे कहती हैं, 'हम हमेशा सोचते हैं कि बच्चों के लिए उनके सुपर हीरो उनके पिता या कोई मर्द हो सकते है, मगर अपने छोटे भाई रेयांश के लिए असली हीरो मैं हूं। उसने हमारी मां और नानी के स्ट्रगल को भी देखा है और मुझे भी काफी छुटपन से देखा है, तो उसके लिए मैं बहुत अहमियत रखती हूं। मैं यही चाहती हूं कि मैं और स्ट्रॉन्ग बनूं और मेहनत से काम करूं और उसे और ज्यादा गर्व महसूस करें। आखिरकार मेरा भाई मेरे जिगर का टुकड़ा है।' वे आगे कहती हैं, 'लोग अक्सर लड़कियों के साथ होने वाली हीनता की बातें करते हैं, तो मैं खुद को उस स्थिति में आने ही नहीं देती। असल में मैं मर्दों से किसी तरह की उम्मीद ही नहीं रखती। वे हमें क्या ही समझ पाएंगे। हां, मैं औरतों से जरूर एक्सपेक्ट करती हूं। औरतें, मर्दों की तुलना में ज्यादा इंटेलिजेंट होती हैं। मगर जब कोई महिला, महिला के बारे में गलत बोलती हैं, तब बुरा लगता है।'

मम्मी से सुनीं हैं भूत-प्रेत की कहानियां

बीते दिनों पलक अपनी हॉरर फिल्म द भूतनी से चर्चा में रहीं पलक भूत-प्रेत में यकीन नहीं करतीं। वे कहती हैं, 'मेरे साथ भगवान की दया से कोई भूतिया अनुभव तो नहीं हुआ है और कामना करती हूं कि आगे भी न हो, मगर मैंने अपनी मम्मी (अभिनेत्री श्वेता तिवारी) से भूतों की बहुत-सी बाते सुनी है, जैसे मुकेश मिल्स (शूटिंग स्टूडियो) हॉन्टेड है। मम्मी बताती थीं कि अक्सर वहां की लाइट चली जाया करती थी। रात के 2-3 बजे कुछ न कुछ डरावना ज़रूर होता था। मम्मी कमालिस्तान स्टूडियो के बारे में भी बताती थीं अपने डरावने अनुभवों को लेकर। मधुबाला जी के बंगले को लेकर भी अफवाहें थी वहां कुछ डरावना था। मगर मैं इस बात पर यकीन करती हूं कि भगवान है, तो शायद शैतान न हो। अगर कोई भूत-प्रेत है भी, तो हो सकता है वो यहां थोड़ा समय बिता कर चला जाए। भूत अच्छे भी हो सकते हैं।'

कान के रेड कारपेट पर वॉक करने वाली सबसे युवा भारतीय एक्ट्रेस बनीं नितांशी

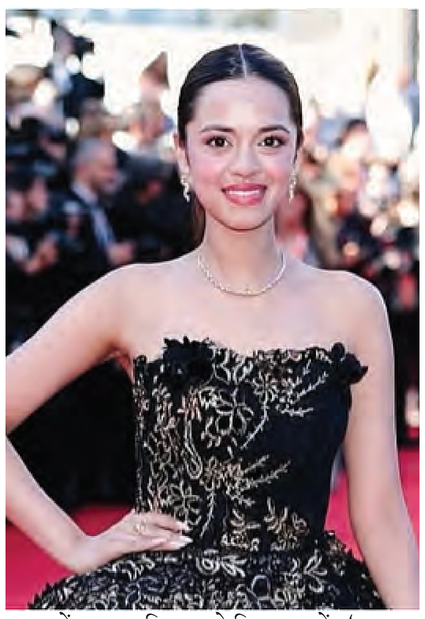

78वें कान फिल्म फेस्टिवल में 'लापता लेडीज' फेम एक्ट्रेस नितांशी गोयल रेड कार्पेट पर उतर चुकी हैं। इसके साथ ही वो सिर्फ 17 साल की उम्र में कान के रेड कार्पेट पर उतरने वाली पहली बॉलीवुड अभिनेत्री भी बन गईं। ब्लैक ऑफ शोल्डर गाउन में नीतांशी का लुक काफी वायरल हो रहा है। नीतांशी ने कान में अपने डेब्यू पर खुशी जताते हुए अपनी तस्वीरों के साथ एक पोस्ट भी सोशल मीडिया पर साझा की है।

नितांशी ने इंस्टाग्राम पर जाहिर की खुशी

कान की रेड कार्पेट पर अपने डेब्यू से उत्साहित नीतांशी ने अपने इंस्टाग्राम पर एक पोस्ट साझा की है। इस पोस्ट में नितांशी ने लिखा, "मैंने कान्स में रेड कार्पेट पर वॉक किया। यह कहना अभी भी एक सपना लगता है। इस मंच पर भारतीय सिनेमा का प्रतिनिधित्व करना एक सम्मान है, जिसे मैं हमेशा संभालकर रखूंगी। मेरे परिवार, मेरी टीम, मेरे दर्शकों को - मुझे प्यार करने, मेरा मार्गदर्शन करने और मेरे साथ खड़े रहने के लिए धन्यवाद। यह सिर्फ मेरा पल नहीं है, यह हमारा है।"

ब्लैक गाउन में बिखेरा जलवा

नितांशी गोयल कान में फिल्म डोजियर 137 की स्क्रीनिंग के लिए पहुंची थीं। कान के अपने डेब्यू में नितांशी मोनिका और करिश्मा के डिजाइन किए हुए ब्लैक कलर के ऑफ शोल्डर गाउन में नजर आईं। जिसमें भारी गोल्डन एम्ब्रॉइडरी थी। कान के लिए उन्हें श्रे और ऊर्जा ने स्टाइल किया था। नितांशी ने अपने लुक को चोकर नेकलेस, स्टड ईयरिंग्स और एक सटल हेयरस्टाइल के साथ बेहद खूबसूरती से कंप्लीट किया।

बॉलीवुड की दिग्गज अभिनेत्रियों को दिया ट्रिब्यूट

नितांशी के रेड कार्पेट लुक के अलावा उनका ट्रेडिशनल इंडियन लुक भी सोशल मीडिया पर वायरल हुआ। उन्होंने आइवरी साड़ी पहनकर इंडियन सिनेमा की दिग्गज अभिनेत्रियों को ट्रिब्यूट दिया। दरअसल, एक्ट्रेस ने अपने बालों में एक खूबसूरत हेयर एक्सेसरी लगा रखी थी। जिसमें मोतियों की माला लगी हुई थी और इसमें छोटे-छोटे फ्रेम लगे हुए थे। इन फ्रेम में मधुबाला, रेखा, श्रीदेवी, वैजयंती माला, हेमा मालिनी, वहीदा रहमान और नूतन जैसी मशहूर बॉलीवुड अभिनेत्रियों की तस्वीरें लगी हुई थीं। नितांशी का यह लुक काफी वायरल हुआ और लोगों ने इसे खूब पसंद किया।

नेहा मलिक ने कान से शेयर की हॉट तस्वीरें, यूजर बोले- फ्रेंच बार्बी डॉल

78वें कान फिल्म फेस्टिवल में दुनिया भर से कलाकार भाग ले रहे हैं। भोजपुरी एक्ट्रेस नेहा मलिक भी इसका हिस्सा बनने वहां पहुंची, जिसकी तस्वीरें इंस्टाग्राम पर शेयर की है। शेयर की गयी तस्वीर में नेहा कोट-पैंट पहने हॉट नजर आ रही है। नेहा ने कैप्शन में लिखा कि काट में इस लुक को दिखाना वहां के सूरज से ज्यादा हॉट है। नेहा की तस्वीरों को उनके फैंस काफी पंसद कर रहे है। एक यूजर बोले- फ्रेंच बार्बी डॉल, तो दूसरे ने कहा लूकिंग सो हॉट।

विक्की कौशल, उनके पापा शाम कौशल या कटरीना कैफ... तीनों में किसके पास है सबसे अधिक नेट वर्थ

इंडस्ट्री के फेमस सितारों में शामिल विक्की कौशल के पिता भले इस इंडस्ट्री से जुड़े थे, लेकिन एक्टर बनने का ये सफर उनके लिए इतना आसान नहीं था। 'मसान', 'उरी', 'सैम बहादुर' और 'छावा' दैसी फिल्मों से अपनी अलग पहचान बनाने वाले विक्की कौशल ने कभी अपने पिता और स्टंट डायरेक्टर शाम कौशल से अपने लिए कहीं सिफारिश करने की मांग नहीं की। यहां तक के सफर में उन्हें कई बार रिजेक्शन और शर्मिंदगी का भी सामना करना पड़ा। आइए, आज उनके 37वें जन्मदिन पर जानते हैं कि विक्की कौशल, वाइफ कटरीना कैफ और पिता शाम कौशल में कौन हैं सबसे ज्यादा अमीर।

विक्की कौशल, पिता शाम कौशल और कटरीना में से किनके पास अधिक सम्पत्ति

वैसे तो विक्की कौशल की मां को छोड़ दें तो उनका पूरा परिवार फिल्म इंडस्ट्री का हिस्सा है। वाइफ कटरीना से लेकर भाई सनी कौशल ही नहीं मशहूर स्टंट डायरेक्टर पिता शाम कौशल बरसों से इस इंडस्ट्री का हिस्सा रहे हैं। आइए आज जानते हैं विक्की कौशल, पिता शाम कौशल और वाइफ कटरीना कैफ में से किनके पास है सबसे अधिक सम्पत्ति।

अपने दोनों बेटों को पढ़ाई पर ध्यान देने की सलाह दी

एक बार विक्की कौशल के पिता ने बेटे के स्ट्रगल की कहानी सुनाई थी। 'फ्राइडे टॉकीज' से बातचीत में शाम कौशल ने कहा था, 'मैंने हमेशा अपने दोनों बेटों को पढ़ाई पर ध्यान देने की सलाह दी, उन्हें आम स्कूलों में भेजा ताकि उनके अंदर अनुशासन और मेहनत करने की लगन जगे।'

शाम कौशल ने कहा था, 'मैं दोनों को मना नहीं कर सकता था, क्योंकि मैं भी उसी इंडस्ट्री से कमा रहा था। मैंने सोचा था कि लोग मेरे सम्मान में दोनों को चाय पिला देंगे, लेकिन कोई भी उनके साथ किसी फिल्म को बनाने में करोड़ों रुपये नहीं लगाएगा।'

उन्होंने आगे कहा था, 'एक एक्शन डायरेक्टर के तौर पर मैंने कभी किसी से उन्हें काम देने के लिए नहीं कहा। कभी-कभी लोग विक्की का ऑडिशन लेने से मना कर देते थे और कहते थे विक्की का क्या ऑडिशन लेना? लेकिन मैंने हमेशा अपने बेटों को यह सिखाया कि जो भी अपमान वे झेलते हैं उसे अपनी ताकत बनाएं, क्योंकि अगर आप अपमान नहीं सहेंगे तो असल में आप आगे नहीं बढ़ सकते।'

करियर की शुरुआत में उन्हें छोटे-मोटे रोल मिले थे और करीब 4-5 सालों तक मेहनत करने के बाद विक्की को पहला बड़ा मौका मिला था। विक्की ने साल 2015 में नीरज घेवान के डायरेक्शन में बनी फिल्म 'मसान' से डेब्यू किया था। आज विक्की बॉलीवुड के टॉप एक्टर्स की लिस्ट में शामिल हो चुके हैं।

विक्की कौशल की नेट वर्थ करीब 140 करोड़ रुपये

रिपोर्ट्स के मुताबिक, विक्की कौशल की नेट वर्थ करीब 140 करोड़ रुपये के आसपास बताई जाती है। वहीं एक प्रॉजेक्ट के लिए उनकी फीस की बात करें तो चर्चा है कि वो अपनी एक फिल्म के लिए करीब 10-12 करोड़ है। वहीं किसी ऐड के लिए मिलने वाली फीस की बात की जाए तो ये करीब 2 से 3 करोड़ रुपये बताया जाता है।

कटरीना की नेटवर्थ 224 करोड़ रुपए

कटरीना कैफ एक फिल्म के लिए करीब 15 से 20 करोड़ रुपए की फीस लेती हैं। रिपोर्टों के मुताबिक, कटरीना यहां एक पोस्ट करने के लिए ब्रांड्स और कंपनियों से करीब 1 करोड़ रुपए लेती हैं। वहीं कहा जाता है कि एक ऐड के लिए वो करीब 6 करोड़ और इवेंट में परफॉर्म करने के लिए 3.5 करोड़ चार्ज करती हैं। कटरीना के नेटवर्थ की बात करें तो रिपोर्ट्स के मुताबिक उनके पास 224 करोड़ रुपए की संपत्ति है।

बेटे से ज्यादा पिता की नेट वर्थ

वहीं विक्की कौशल के पिता शाम कौशल के नेट वर्थ की बात करें तो ये आकड़े करीब 167 करोड़ रुपये के आसपास बताई जाती है। यानी साफ है कि सम्पत्ति के मामले में आज भी पिता अपने बेटे से कहीं ऊपर हैं। हालांकि, इन तीनों की तुलना में सबसे अधिक अमीर कटरीना कैफ नजर आ रही हैं।

भारत-पाक तनाव पर अब जाकर बोले कुणाल खेमू नेटिजंस कर रहे ट्रोल; बोले- 'बड़े जल्दी जाग गए'

पहलगाम आतंकी हमले के बाद से भारत और पाकिस्तान के बीच तनाव है, जिसका जवाब भारतीय सेना ने बड़ी कड़ाई से दिया।

हालांकि, अब हालात सामान्य हो रहे हैं, लेकिन कुछ एक्टर्स इसे लेकर अब अपने दुख बयां कर रहे हैं। इसी कड़ी में अभिनेता कुणाल खेमू ने भी भारत-पाक संघर्ष को लेकर अपनी पीड़ा व्यक्त की है। इसके बाद से ही एक्टर को नेटिजंस ट्रोल कर रहे हैं।

कुणाल खेमू ने क्या कहा?

अभिनेता कुणाल खेमू ने अपने इंस्टाग्राम पर एक नोट शेयर किया है। इसमें उन्होंने लिखा कि डर, चिंता, क्रोध, दुख, जीत, वीरता की भावना आदि ये सब धीरे-धारे सामान्य स्थिति में आ जाते हैं।

उन्होंने कहा कि इस समय पूरा देश एक कठिन परीक्षा से गुजर रहा है। इस संघर्ष ने अधिकांश लोगों को सीधे तौर पर प्रभावित नहीं किया, लेकिन इससे सभी किसी ना किसी तौर पर प्रभावित हुए। सभी ने इस संघर्ष को अपने तरीके से निपटाया है।

कुणाल ने ऑपरेशन सिंदूर की सराहना की

आगे अभिनेता ने लिखा कि इस संघर्ष के दौरान गई जानों की भरपाई कोई नहीं कर सकता। कुणाल ने कहा, 'इस दुनिया में आतंक के लिए कोई जगह नहीं होनी चाहिए और ऑपरेशन सिंदूर के रूप में जवाबी कार्रवाई ही इसका हकदार है। मैं भारत के नागरिक के रूप में देश के नेताओं और इसकी सशस्त्र सेनाओं की शक्ति का आभारी हूं, जिन्होंने न केवल इस देश के लोगों और मूल्यों की रक्षा की।

इसके अलावा पूरी दुनिया को यह भी दिखाया कि अगर हम सम्मान में अपना सिर झुका सकते हैं तो हम किसी को भी अपने ऊपर कदम रखने की अनुमति नहीं देंगे। हमारे पास उन लोगों के पैर कुचलने की शक्ति और संकल्प है जो हमें या हमारे परिवारों और साथी नागरिकों के जीवन को खतरा पहुंचाते हैं।'

नेटिजंस ने किया ट्रोल

इतने दिनों बाद कुणाल खेमू के इस पोस्ट को देख नेटिजंस उन्हें ट्रोल कर रहे हैं। एक इंस्टाग्राम यूजर ने उनके पोस्ट पर कमेंट किया कि आप बहुत लेट हैं सर। वहीं दूसरे यूजर ने कहा कि बड़ी जल्दी जाग गए। इसके अलावा एक और यूजर ने लिखा कि सब हो गया भाई, अब तक क्या सोचकर चुप थे। चलो देर आए दुरुस्त आए।

हेमा मालिनी के कारण बहा था परवीन बाबी का खून, 'क्रांति' के सेट पर हुआ था हादसा, बोलीं- तब अंधविश्वास फैल गया था

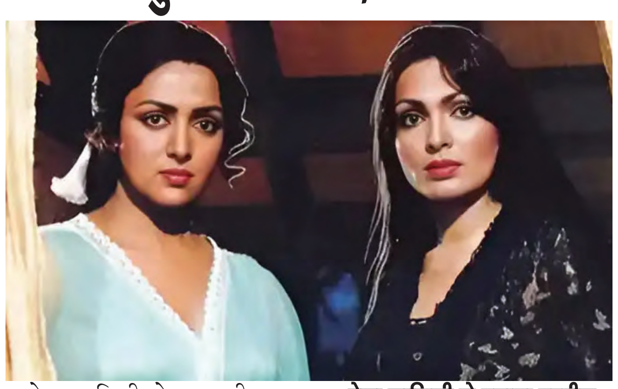

हेमा मालिनी ने हाल ही एक इंटरव्यू में फिल्म 'क्रांति' के सेट पर हुए एक हादसे के बारे में बताया, जिसमें परवीन बाबी को चोट लग गई थी। हेमा मालिनी की वजह से एक सीन में परवीन बाबी को तलवार से चोट लग गई थी। खून बहने लगा था, जिसके कारण सेट पर अफरा-तफरी मच गई थी।

साल 1981 में आई इस फिल्म में मनोज कुमार, दिलीप कुमार और शशि कपूर थे। हेमा मालिनी ने 'एचटी सिटी' से बातचीत में पहले दिन का शूट याद किया और बताया कि कैसे गलती से उनकी तलवार परवीन को लग गई थी। हेमा मालिनी ने बताया कि परवीन के हाथ से खून बहने लगा था, जिसका मतलब था कि फिल्म सुपरहिट होगी। उस दौर में यह अंधविश्वास प्रचलित था।

हेमा मालिनी ने बताया परवीन बाबी संग तलवारबाजी सीन का वाकया

हेमा मालिनी बोलीं, ''क्रांति' में परवीन बॉबी थी। यह शूटिंग का पहला दिन था। मेरा उसके साथ एक सीन था, जिसमें हम तलवारों से लड़ रहे थे। वह बहुत अच्छी, प्यारी लड़की थी। लेकिन, फाइट मास्टर हौसता बढ़ाते रहते हैं क्योंकि उन्हें आक्रामक एक्टिंग चाहिए होती है। तो जब परवीन ने तलवार वाला सीन किया तो उसके हाथ में लगा। उसकी उंगली पर कट लग गया। मुझे बहुत बुरा लगा। इतना डर गई थी मैं कि पता नहीं क्या हो गया।'

परवीन की उंगली में कट लगा, हेमा मालिनी डर गईं

हेमा मालिनी ने फिर बताया कि वह असली तलवार नहीं थी, जिससे परवीन बाबी घायल हुई थीं। वह बोलीं, 'परवीन बाबी एक नाजुक लड़की थी। तलवार की सिर्फ धार तेज थी, वह नकली थी। उसको लगा तो मैं परेशान हो गई, सब मुझे संभालने लगे। इसलिए मैं और परवीन बाबी अच्छी दोस्त बन गईं।'

सेट पर खून बहा तो फैल गया अंधविश्वास- फिल्म हिट होगी

हेमा मालिनी ने यह भी बताया कि इस घटना के बाद सेट पर हर किसी ने मान लिया कि फिल्म 'क्रांति' अब हिट होगी क्योंकि खून बहा है। वह बोलीं, 'खून बहा, खून बह गया तो पिक्चर हिट है, ऐसा बोलते थे वहां। मैंने जानबूझकर ऐसा नहीं किया, यह बस हो गया। ये सब छोटी-छोटी घटनाएं थीं, जो मुझे अब याद हैं। मैंने लगभग 200 फिल्मों में काम किया है। हर फिल्म में बहुत ही खूबसूरत गाने हैं। अगर आप मुझसे बात करें तो आपको बताने के लिए मेरे पास बहुत सी कहानियां होंगी।'

सुपरहिट रही थी 'क्रांति', मनोज कुमार थे डायरेक्टर

'क्रांति' को मनोज कुमार ने डायरेक्ट किया था, और एक्टिंग भी की थी। यह साल 1981 की सबसे बड़ी हिट फिल्मों में से एक रही थी। फिल्म की कहानी सलीम-जावेद ने लिखी थी।

ट्रंप के बर्थडे पर परेड से लेकर केक तक अकूत धन खर्च होगा

नई दिल्ली, 17 मई (एजेंसियां)। अमेरिका के राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप के 14 जून को अपना 79वां जन्मदिन मना रहे हैं. इसी दिन यूएस आर्मी डे भी मनाया जाता है. ऐसे में 14 जून को परेड डे और अमेरिकी राष्ट्रपति के जन्मदिन के मौके पर अमेरिका में एक ग्रैंड आर्मी परेड का आयोजन किया जाएगा. ये अमेरिकी सेना की 250वीं वर्षगांठ का भी प्रतीक होगा. ऐसे में आइए जानते हैं ट्रंप के बर्थडे पर केक से लेकर परेड इस परेड पर कितना खर्च होने वाला है? डोनाल्ड ट्रंप के जन्मदिन और यूएस आर्मी परेड डे पर पर अनुमानित खर्च 25 मिलियन डॉलर से 45 मिलियन डॉलर के बीच हो सकता है. इस भव्य आयोजन में 100 से अधिक सैन्य वाहन शामिल होंगे, जिनमें एम1 अब्राम टैंक, स्ट्राइकर और ब्रैडली लड़ाकू वाहन, हॉवित्जर तोपें और 50 हेलीकॉप्टर शामिल होंगे. इसके लिए संघीय उड्डयन प्रशासन के साथ व्यापक समन्वय की आवश्यकता होगी.हजारों सैनिक लेफ्टिनेंट कर्नल रूथ कास्त्रो के अनुसार, लगभग 6,600 से 7,500 सैनिक इस परेड का हिस्सा बनेंगे. ये सैनिक कार्यक्रम से कुछ दिन पहले पहुंचेंगे और वाशिंगटन डीसी के संघीय भवनों में ठहराए जाएंगे. सैनिकों को प्रतिदिन एक गर्म भोजन, दो तैयार भोजन और 50 डॉलर का अतिरिक्त वेतन मिलेगा. यह परेड केवल आधुनिक सैन्य शक्ति का प्रदर्शन नहीं होगी, बल्कि इसमें द्वितीय विश्व युद्ध के समय की बी-17 और पी-51 मस्टैंग विमानों की ऐतिहासिक वर्दियां और विंटेज विमानों का फ्लाईओवर भी शामिल होगा. हालांकि, सेना अभी भी 1812 के युद्ध और स्पेनिश-अमेरिकी युद्ध से संबंधित सटीक ऐतिहासिक वर्दियां प्राप्त करने के लिए संघर्ष कर रही है.ट्रंप ने जोर देकर कहा कि यह आयोजन उनके जन्मदिन से संबंधित नहीं है, बल्कि अमेरिकी सेना की विरासत का जश्न मनाने के लिए है. उन्होंने लागत पर चिंता को खारिज करते हुए कहा, "इसे करने की कीमत इसके मूल्य से बहुत कम होगी." उनका सैन्य परेड के प्रति यह जुनून 2017 में फ्रांस के बैस्टिल दिवस समारोह में भाग लेने के बाद शुरू हुआ था. परेड की लागत को लेकर आलोचनाएं भी हो रही हैं. 2018 में ट्रंप ने इसी तरह की एक परेड की योजना बनाई थी, लेकिन 92 मिलियन डॉलर की अनुमानित लागत के कारण इसे रद्द कर दिया गया था. डेमोक्रेटिक सांसद स्टीव कोहेन ने इसे "अहंकारी नेता की मांग" बताते हुए आलोचना की है.

एक हफ्ते तक चलेगा सेलिब्रेशन

नेशनल पार्क सर्विस को परेड और संभावित विरोध प्रदर्शन दोनों के लिए परमिट अनुरोध प्राप्त हुए हैं. एक आवेदन में परेड को "अमेरिकी लोगों का अपमान" बताया गया है, और अनुमान है कि इसमें 20,000 से अधिक प्रदर्शनकारी शामिल हो सकते हैं. इस भव्य परेड के अलावा, पूरे सप्ताह संगीत कार्यक्रम, पैराशूट जंप, सैन्य प्रदर्शन और देशी संगीत सितारों की प्रस्तुतियां भी होंगी, जो इसे अमेरिकी सेना की 250वीं वर्षगांठ का एक यादगार आयोजन बनाएंगी.

भारत को सिर्फ पाकिस्तान से ही नहीं

तुर्की से भी रहना चाहिए सावधान, एर्दोगन को इंडिया से क्यों है नफरत

इस्तांबुल, 17 मई (एजेंसियां)। भारत और पाकिस्तान में सैन्य झड़पों के बाद अब अस्थिर संघर्ष विराम जारी है। दोनों देशों ने संघर्ष विराम को लगातार बनाए रखने की बात की है। हालांकि, भारत ने ऑपरेशन सिंदूर के जरिए बता दिया है कि उसके दुश्मन पाकिस्तान में कहीं भी सुरक्षित नहीं हैं। इतना ही नहीं, पाकिस्तानी सेना और उसकी खुफिया एजेंसी आईएसआई उन्हें चाहकर भी बचा नहीं सकती है। भारत के सटीक हमलों से न केवल आतंकी ढांचे मिट्टी में मिल गए, बल्कि पाकिस्तान के मददगारों को भी इसकी कीमत चुकानी पड़ी। भारत की कार्रवाई इतनी प्रभावी थी कि पाकिस्तान को संघर्ष विराम के लिए हाथ-पैर जोड़ने पड़े। इसके बावजूद भारत ने सिंधु जल संधि का निलंबन वापस नहीं लिया है।

हालांकि, भारत-पाकिस्तान संघर्ष में तुर्की की भूमिका काफी चर्चा में रही। तुर्की ने 22 अप्रैल को पहलगाम आतंकी हमले के बाद ही पाकिस्तान की सैन्य सहायता करनी शुरू कर दी थी। तुर्की की वायुसेना के ट्रांसपोर्ट एयरक्राफ्ट ने पाकिस्तान पहुंचकर ड्रोन और दूसरे सैन्य संसाधनों की डिलीवरी की थी। इसके अलावा तुर्की ने इन ड्रोन को चलाने के लिए अपने सैन्य ऑपरेटरों को भी पाकिस्तान में तैनात किया था। हालांकि, ऐसी रिपोर्ट्स हैं कि भारत के हमलों में तुर्की के सिर्फ ड्रोन ही धुआं-धुआं नहीं हुए, बल्कि उसके दो सैन्य ऑपरेटर भी मारे गए।

इस घटना से पूरी दुनिया को यह मालूम चला कि पाकिस्तान किस तरह से चीन और तुर्की निर्मित हथियारों पर काफी हद तक निर्भर है। भारत में, तुर्की का बहिष्कार करने की मांग बढ़ रही है, जो पहले से ही डंवाडोल उसकी अर्थव्यवस्था के लिए बुरा है। भारत के निजी क्षेत्र ने भी तुर्की से खुद को दूर करना शुरू कर दिया है। प्राइवेट यूनिवर्सिटी से लेकर व्यापारिक कंपनियों ने तुर्की से अपने संबंधों को तोड़ने का ऐलान किया है। इतना ही नहीं, भारत ने तुर्की की कंपनियों की स्क्रूटनी भी शुरू कर दी है, जो देश में संवेदनशील क्षेत्र में काम कर रही हैं। इसी कड़ी में तुर्की की एक कंपनी को मुंबई एयरपोर्ट पर ग्राउंड ऑपरेशन करने से रोक दिया गया है।

तुर्की ने सिर्फ हथियारों और सैन्य ऑपरेटरों से ही पाकिस्तान की मदद नहीं की, बल्कि उसके प्रॉपगैंडा को प्रचारित करने के लिए भी अपनी मशीनरी के इस्तेमाल की इजाजत दी। तुर्की की सरकारी और सरकार के प्रभाव वाले प्राइवेट मीडिया ने पाकिस्तान के बिना सिर-पैर के दावों को प्रचारित करना शुरू कर दिया था। इस दौरान तुर्की के मीडिया ने सामान्य बुद्धिमत्ता तक का इस्तेमाल नहीं किया। उन्होंने आंख मूंदकर पाकिस्तान के झूठ में साथ दिया। सिर्फ इसलिए, क्योंकि उनके देश का पाकिस्तान के साथ अच्छे संबंध हैं। ऐसे में तुर्की की मीडिया ने जानबूझकर भारत के खिलाफ काम किया। भारत में तुर्की के बहिष्कार की बढ़ती आवाज के बाद रेसेप तैयप एर्दोगन ने उकसावे की कार्रवाई की। उन्होंने हाल में ही एक ट्वीट किया, जिसमें लिखा, पाकिस्तान-तुर्की दोस्ती अमर रहे। पाकिस्तानी प्रधानमंत्री शहबाज शरीफ के संदेश का जवाब देते हुए एर्दोगान ने कहा, अतीत की तरह, हम भविष्य में भी अच्छे और बुरे समय में आपके साथ खड़े रहेंगे। एर्दोगन के इस ट्वीट को भारत को उकसाने के लिए किए गए कार्य के रूप में देखा गया। हालांकि, एर्दोगन यह जानते हैं कि पाकिस्तान से दोस्ती में तुर्की का कोई फायदा नहीं है, जबकि भारत के साथ संबंधों को मजबूत करने में ही उनकी भलाई है।

भारत ने पाकिस्तान के मददगार तुर्की के राष्ट्रपति रेसेप तैयप एर्दोगन को जोर का झटका दिया है।

दरअसल केंद्र सरकार ने राष्ट्रीय हित का हवाला देते हुए भारत भर में नौ प्रमुख हवाई अड्डों पर सेवाएँ संभालने वाली तुर्की की बहुराष्ट्रीय कंपनी सेलेबी एविएशन का लाइसेंस रद्द कर दिया है।

एलपीजी पर तेल कंपनियों का घाटा लगभग 45% तक कम होने की उम्मीद, रिपोर्ट में बताया गया कारण

नई दिल्ली, 17 मई (एजेंसियां)। अगर कच्चे तेल की कीमतें 65 डॉलर प्रति बैरल पर स्थिर रहती हैं, तो तेल विपणन कंपनियों (ओएमसी) को एलपीजी से होने वाले घाटे में वित्त वर्ष 26 में लगभग 45 प्रतिशत की कमी आ सकती है। केयरएज रेटिंग्स की एक रिपोर्ट में दावा किया गया है। रिपोर्ट के अनुसार अगले वित्त वर्ष में संचयी एलपीजी अंडर-रिकवरी में काफी कमी आने की संभावना है, जिसका मुख्य कारण उच्च खुदरा कीमतों और कम अंतरराष्ट्रीय एलपीजी कीमतों का मिश्रण है। रिपोर्ट में कहा गया है, अगर कच्चे तेल की कीमतें 65 डॉलर प्रति बैरल के आसपास रहती हैं, तो संचयी रूप से, वित्त वर्ष 26 में एलपीजी अंडर-रिकवरी में 45% की कमी आने की उम्मीद है। अंडर-रिकवरी तेल कंपनियों को होने वाले घाटे के बारे में बताती है। ये कंपनियां एलपीजी सिलेंडर को उनकी लागत मूल्य से कम पर बेचती हैं, ऐसा घरों में खाना पकाने की गैस को किफायती रखने के लिए किया जाता है। भारत में, लगभग 90 प्रतिशत एलपीजी खपत घरेलू खाना पकाने के लिए उपयोग की जाती है, जबकि शेष 10 प्रतिशत का उपयोग औद्योगिक, वाणिज्यिक और मोटर वाहन क्षेत्रों में किया जाता है। पिछले दस वर्षों में, घरेलू एलपीजी उपभोक्ताओं की संख्या दोगुनी हो गई है, जो 1 अप्रैल 2025 तक लगभग 33 करोड़ तक पहुंच गई है। रिपोर्ट के अनुसार घरेलू उत्पादन की तुलना में एलपीजी की खपत तेजी से बढ़ी है। दूसरी ओर, भारतीय रिफाइनर ने मांग को पूरा करने के लिए एलपीजी उत्पादन में पर्याप्त वृद्धि नहीं की है, जिससे आयात पर निर्भरता बढ़ गई है। वित्त वर्ष 25 में, घरेलू एलपीजी की लगभग 60 प्रतिशत जरूरत आयात के जरिए पूरी की गई, जबकि एक दशक पहले यह लगभग 46 प्रतिशत थी। वित्त वर्ष 25 में, तेल विपणन कंपनियों को 14.2 किलोग्राम प्रति सिलेंडर लगभग 220 रुपये की महत्वपूर्ण एलपीजी अंडर-रिकवरी का सामना करना पड़ा। इसके परिणामस्वरूप तीन प्रमुख ओएमसी को कुल मिलाकर 41,270 करोड़ रुपये का नुकसान हुआ, जिससे उनकी लाभप्रदता पर दबाव पड़ा। हालांकि, खुदरा एलपीजी की कीमतों में हाल ही में 8 अप्रैल, 2025 से प्रभावी 50 रुपये प्रति सिलेंडर की बढ़ोतरी से वित्त वर्ष 26 में अंडर-रिकवरी में 25 प्रतिशत की कमी आने की उम्मीद है।

सीजफायर ने कैसे बदली अंबानी-अडानी की किस्मत, 5 दिनों में कमा डाला 6 करोड डालर

नई दिल्ली, 17 मई (एजेंसियां)। भारत और पाकिस्तान के बीच हुए संघर्ष विराम के बाद तो जैसे एशिया के दो सबसे अमीर कारोबारियों मुकेश अंबानी और गौतम अडानी की किस्मत ही बदल गई है. खास बात तो ये है कि जहां मुकेश अंबानी उन अबरपतियों के ग्रुप में शामिल हो गए हैं, जिनके पास 100 अरब या उससे ज्यादा दौलत है. वहीं दूसरी ओर गौतम अडानी दुनिया के टॉप 20 अमीरों की लिस्ट में शुमार हो गए हैं. ब्लूमबर्ग के आंकड़ों को देखें तो एशिया के सबसे अमीर कारोबारी मुकेश अंबानी की नेटवर्थ में 5 दिनों में 6 अरब डॉलर का इजाफा हुआ है. जबकि एशिया के दूसरे सबसे अमीर कारोबारी गौतम अडानी की नेटवर्थ में 9.2 अरब डॉलर की बढ़ोतरी देखने को मिली है. आइए आपको भी बताते हैं कि आखिर दोनों अरबपतियों की नेटवर्थ अब कितनी हो गई है.

कितनी हो गई मुकेश अंबानी की दौलत?

अगर बात पहले मुकेश अंबानी की करें तो बीते पांच कारोबारी दिनों में उनकी नेटवर्थ में जबरदस्त इजाफा देखने को मिला है. ब्लूमबर्ग बिलेनियर्स इंडेक्स के अनुसार 9 मई को मुकेश अंबानी की कुल नेटवर्थ 99 अरब डॉलर थी, जो 16 मई को बढ़कर 105 अरब डॉलर हो गई है. इसका मतलब है कि 5 कारोबारी दिनों में मुकेश अंबानी की नेटवर्थ में 6 अरब डॉलर यानी 51 हजार करोड़ रुपए से ज्यादा का इजाफा देखने को मिला है. ऐसे में मुकेश अंबानी 100 अरब डॉलर नेटवर्थ की एलीट ग्रुप में शामिल हो गए हैं. जानकारों की मानें सीजफायर होने के बाद रिलायंस इंडस्ट्रीज के शेयरों में अच्छी तेजी देखने को मिली है. जिसके बाद उनकी नेटवर्थ में बढ़ोतरी देखने को मिली है.

अडानी की नेटवर्थ में भी बढ़ोतरी

वहीं दूसरी ओर गौतम अडानी की नेटवर्थ में भी अच्छी बढ़ोतरी देखने को मिली है. खास बात तो ये है कि पांच कारोबारी दिनों में अडानी की नेटवर्थ में अंबानी से ज्यादा इजाफा देखने को मिला है. ब्लूमबर्ग बिलेनियर्स इंडेक्स के अनुसार 9 मई को गौतम अडानी की नेटवर्थ 74.4 अरब डॉलर थी, जो 16 मई को बढ़कार 83.6 अरब डॉलर हो गई. इसका मतलब है कि गौतम अडानी की नेटवर्थ में 9.2 अरब डॉलर यानी करीब 79 हजार करोड़ रुपए का इजाफा देखने को मिला. साथ ही वह दुनिया के टॉप 20 अरबपतियों की लिस्ट में भी शामिल हो गए. अगर वह इसी रफ्तार के साथ आगे बढ़ते रहे तो वो 100 अरब डॉलर के करीब भी पहुंच जाएंगे.

हर साल अमेरिका से भारत के लोगों के अकाउंट में आते हैं 32 अरब डालर

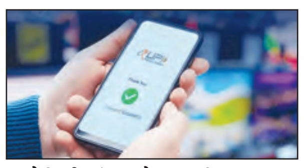

नई दिल्ली, 17 मई (एजेंसियां)। अमेरिका से हर साल इंडियंस के अकाउंट के करोड़ों रुपए आते हैं. दुनिया में सबसे ज्यादा रेमिटेंस प्राप्त करने वाला देश भारत ही है. हर साल यहां 83 बिलियन डॉलर विदेश से प्राप्त करता है, जिसमें अधिकांश हिस्सा अमेरिका से आता है. 2023 में $129 अरब आया था. दरअसल, अमेरिका में रह रहे भारतीय जो वहां पर काम करते हैं और नियमित तौर पर वहां से अपने घर पैसे भेजते रहते हैं. ऐसे में आइए जानते हैं इंडियंस के अकाउंट में कितने रुपए हर साल आते हैं? अकेले अमेरिका से $32 अरब भारत भेजे गए थे. अगर अब इस पर 5 फीसदी टैक्स लगता है तो करीब 14000 करोड़ रुपये का सालाना घाटा होगा. 5% टैक्स से भारतीय परिवारों को 1.7 अरब डॉलर (14,000 करोड़ से ज्यादा) का नुकसान हो सकता है. दरअसल, अमेरिकी संसद में प्रस्तावित 'द वन बिग ब्यूटीफुल बिल' के तहत, अमेरिका में रहने वाले गैर-नागरिकों (जैसे एच-1बी वीजा धारक और ग्रीन कार्ड होल्डर) द्वारा विदेश भेजी जाने वाली रेमिटेंस पर 5% टैक्स लगाने का प्रस्ताव है. यदि यह कानून बनता है, तो भारतीय प्रवासी हर 1 लाख भेजने पर 5,000 अतिरिक्त टैक्स देंगे. यदि यह टैक्स लागू होता है, तो भारत को अमेरिका से आने वाली रेमिटेंस में कमी आ सकती है, जिससे विदेशी मुद्रा भंडार और घरेलू खपत पर असर पड़ सकता है. विशेषज्ञों का मानना है कि इससे रियल एस्टेट, शिक्षा और पारिवारिक खर्चों पर भी प्रभाव पड़ेगा.

सरकार की लगने वाली है लॉटरी

आरबीआई देगा 3 लाख करोड़ का चेक

नई दिल्ली, 17 मई (एजेंसियां)। केंद्र सरकार को रिजर्व बैंक ऑफ इंडिया से जल्द ही 3 लाख करोड़ रुपए का चेक मिल सकता है। अनुमान है कि आरबीआई अपनी बोर्ड बैठक में भारत सरकार को 3 लाख करोड़ रुपए के डिविडेंड देने पर मुहर लगा सकती है। अगर ऐसा होता है तो भारत सरकार को कैपेक्स में काफी सहूलियत होगी। वो भी ऐसे समय पर जब भारत सरकार ने 12 लाख तक की कमाई को टैक्स फ्री कर दिया है और टैक्स रेवेन्यू में कमी आने का अनुमान है। इस डिविडेंड से भारत सरकार को कैसे राहत मिलेगी। आइए आपको भी बताते हैं कि आखिर आरबीआई और बाजार से डिविडेंड को लेकर किस तरह की खबर सामने आ रही है।

मिल सकता है 3 लाख करोड़ रुपए का चेक

भारतीय रिजर्व बैंक के केंद्रीय निदेशक मंडल की 23 मई को बैठक होने की संभावना है, जिसमें केंद्रीय बैंक की बैलेंस शीट की वार्षिक समीक्षा की जाएगी और वित्त वर्ष 2025 का सरप्लस फंड सरकार को ट्रांसफर किया जाएगा। ये फंड 3 लाख करोड़ रुपए तक हो सकता है, जो पिछले साल के डिविडेंड से लगभग 50 फीसदी अधिक है। आईडीएफसी फर्स्ट बैंक की मुख्य अर्थशास्त्री गौरा सेन गुप्ता ने कहा कि हमारा अनुमान है कि आरबीआई का डिविडेंड 2.6 लाख रुपए से 3 लाख करोड़ रुपये तक हो सकता है, जो प्रावधान के स्तर पर निर्भर करता है।

कैसे तय होता है डिविडेंड

आरबीआई बोर्ड ने 15 मई को आर्थिक पूंजी ढांचे (ईसीएफ) की समीक्षा के लिए भी बैठक की। सरप्लस या डिविडेंड निर्धारित करने में एक महत्वपूर्ण कारक ईसीएफ है, जिसे आरबीआई ने 2019 में अपनाया था। संबंधित समिति ने कॉन्टीजेंट रिस्क बफर के तहत रिस्क प्रोविजन को आरबीआई की बैलेंस शीट के 6.5-5.5 फीसदी की सीमा के भीतर बनाए रखने की सिफारिश की थी। इसके अलावा, भुगतान केंद्रीय बैंक द्वारा विभिन्न घरेलू स्रोतों से अर्जित आय पर भी निर्भर करता है। बोर्ड सीआरबी के स्तर पर निर्णय लेता है जिसे केंद्रीय बैंक समीक्षाधीन अवधि के दौरान अर्थव्यवस्था के प्रदर्शन के आधार पर बनाए रखता है और यह सीधे तौर पर एक वर्ष के दौरान अर्थव्यवस्था की वृद्धि से जुड़ा होता है। सीएसबी बैंक के ग्रुप ट्रेजरी हेड आलोक सिंह ने कहा कि बाजार ने मोटे तौर पर लगभग 2.5 लाख करोड़ रुपए के डिविडेंड को ध्यान में रखा है। इस संख्या में किसी भी वृद्धि का बॉन्ड यील्ड पर असर पड़ेगा। कॉन्टीजेंट प्रोविजन पिछले साल के समान या उससे अधिक होने की उम्मीद है। आईडीएफसी फर्स्ट बैंक के अनुसार प्रावधान 42,800 करोड़ रुपए था और इसके 40,000 करोड़ रुपए से 80,000 करोड़ रुपए के बीच रहने की उम्मीद है।

इस हफ्ते सोना 3,425 सस्ता चांदी 1,120 रुपए तक फिसली

नई दिल्ली, 17 मई (एजेंसियां)। इस हफ्ते सोने-चांदी के दामों में गिरावट रही। इंडिया बुलियन एंड ज्वैलर्स एसोसिएशन की वेबसाइट के अनुसार पिछले शनिवार यानी 9 मई को सोना 95,726 रुपए पर था, जो अब (17 मई) को 92,301 रुपए प्रति 10 ग्राम पर पहुंच गया है। यानी इस हफ्ते इसकी कीमत 3,425 रुपए गिरी है। वहीं, चांदी की बात करें तो ये पिछले शनिवार को 95,726 रुपए पर थी, जो अब 94,606 रुपए प्रति किलोग्राम पर पहुंच गई है। इस तरह इस हफ्ते इसकी कीमत 1,120 रुपए बढ़ी है। इससे पहले सोने ने 21 अप्रैल को 99,100 और 28 मार्च को चांदी ने 1,00,934 का ऑल टाइम हाई बनाया था। **दिल्ली** :10 ग्राम 22 कैरेट सोने की कीमत 87,350 रुपए और 10 ग्राम 24 कैरेट सोने की कीमत 95,280 रुपए है। **मुंबई** : 10 ग्राम 22 कैरेट सोने की कीमत 87,200 रुपए और 10 ग्राम 24 कैरेट सोने की कीमत 95,130 रुपए है। **कोलकाता** :10 ग्राम 22 कैरेट गोल्ड की कीमत 87,200 रुपए और 24 कैरेट 10 ग्राम सोने की कीमत 95,130 रुपए है। **चेन्नई** :10 ग्राम 22 कैरेट सोने की कीमत 87,200 रुपए और 10 ग्राम 24 कैरेट सोने की कीमत 95,130 रुपए है।**भोपाल** : 10 ग्राम 22 कैरेट सोने की कीमत 87,250 रुपए और 10 ग्राम 24 कैरेट सोने की कीमत 95,180 रुपए है। **हैदराबाद** : सोने(गोल्ड) का रेट 24 कैरेट के लिए 95,130 रुपये प्रति 10 ग्राम और 22 कैरेट के लिए 87,200 रुपये है।

कहीं पाकिस्तान 'खेल' न कर दे...! खाड़ी देशों से आने वाले सामान पर भारत की नजर, सख्ती से हो रही जांच

नई दिल्ली, 17 मई (एजेंसियां)। भारत सरकार यूएई, ईरान और कुछ अन्य खाड़ी देशों से आने वाले सामान की जांच कर रही है। कुछ ट्रांसशिपमेंट हब पर भी नजर रखी जा रही है। सरकार यह सुनिश्चित करना चाहती है कि पाकिस्तान से कोई भी सामान इन रास्तों से भारत में न आए। इकोनॉमिक टाइम्स के अनुसार अधिकारियों का कहना है कि आयातित सामान पर लगे लेबल और सामान की उत्पत्ति के नियमों की सख्ती से जांच की जा रही है। पहले भारत ने यूएई के साथ चिंता जताई थी कि पाकिस्तान से आने वाली खजूर यूएई के रास्ते भारत में आ रही है। अधिकारियों ने कहा कि यह भारत-यूएई कॉम्प्रिहेंसिव इकोनॉमिक पार्टनरशिप एग्रीमेंट का गलत इस्तेमाल है। पहलगाम में 22 अप्रैल को हुए आतंकवादी हमले के बाद भारत ने पाकिस्तान से आने वाले सभी सामानों पर पूरी तरह से प्रतिबंध लगा दिया। इस हमले में 26 लोग मारे गए थे। बैन में वह सामान भी शामिल है जो तीसरे देशों के माध्यम से आ रहा था। पाकिस्तान ने भी भारत के साथ सभी व्यापारिक संबंध तोड़ दिए हैं, जिसमें तीसरे देशों के माध्यम से होने वाला व्यापार भी शामिल है।एक अधिकारी ने बताया कि यूएई और कुछ अन्य देशों जैसे ट्रांसशिपमेंट हब से आने वाले सामानों की जांच की जा रही है ताकि यह पता चल सके कि उनमें पाकिस्तानी सामान तो नहीं है। रूल्स ऑफ ओरिजिन वो नियम हैं जो यह तय करते हैं कि किसी उत्पाद का राष्ट्रीय स्रोत क्या है और उस पर ड्यूटी में कितनी छूट मिलेगी। साथ ही इससे पता चलता है कि कोई सामान किस देश में बना है। इससे ड्यूटी में छूट मिलती है। वित्त वर्ष 2025 में भारत का यूएई को वस्तुओं का निर्यात 36.63 अरब डॉलर था, जबकि उस देश से आयात 63.42 अरब डॉलर था। वित्त वर्ष 25 के अप्रैल-फरवरी अवधि में भारत ने 270.4 मिलियन डॉलर की खजूर का आयात किया। इसमें से 123.82 मिलियन डॉलर का खजूर यूएई से आया था। वहीं दूसरी ओर कुछ रिपोर्ट्स के अनुसार, जुलाई 2024 और फरवरी 2025 के बीच पाकिस्तान का यूएई को निर्यात 28% बढ़कर 1.2 बिलियन डॉलर हो गया।

दैनिक पंचांग

ग्रह गोचर

श्री सिद्धार्थी नामक संवत्सर-विक्रम संवत्- **2082**
शक संवत् **-1947,** सूर्य उत्तरायणे, ऋतु- ग्रीष्म
महावीर निर्वाण संवत् **-2551**
कलियुग अवधि-**432000** सूर्योदय - 05-47 सूर्यास्त - 18-38
भोग्य कलि वर्ष-**426874**
कलियुग संवत् **-5126** वर्ष,
कल्पारंभ संवत् **-1972949126**
सृष्टि ग्रहारंभ संवत्-**1955885126**

ग्रह स्थिति		लग्नारंभ समय
सूर्य-	वृष मे	वृष--- 05-36 बजे
चंद्र-	मकर मे	मिथुन..07-36 बजे
मंगल	कर्क मे	कर्क-- 09-48 बजे
बुध-	मेष मे	सिंह--- 11-59 बजे
गुरु-	मिथुन मे	कन्या...14-06 बजे
शुक्र-	मीन मे	तुला....16-12 बजे
शनि-	मीन मे	वृश्चिक.18-22 बजे
राहु-	मीन मे	धनु..... 20-35 बजे
केतु-	कन्या मे	मकर...22-42 बजे
		कुंभ... 00-32 बजे
		मीन.... 02-14 बजे
		मेष..... 03-47 बजे

दिशाशूल -- पश्चिम - पान खाकर घर से निकले
तिथि- षष्ठी **05-57** अहोरात्र तक सप्तमी
मास - ज्येष्ठ कृष्ण , रविवार **18 May**
नक्षत्र - उत्तराषाढ़ा **18-52** तक उपरान्त श्रवण
योग - शुभ **06-42** तक उप शुभ
करण- तैतिल **05-57** तक गर
विशेष:- कुंभ मे राहु प्रवेश
व्रत -त्योहार - सिंह मे केतु - **19-30** से

विशेष:- राशिफल गृहों के गोचर के आधार पर लिखा गया है।सूक्ष्म फलादेश क लिए जन्म पत्रिका की सूक्ष्म स्थिति जानने के लिए जन्म कुण्डली दिखाना चाहिए।

राहुकाल 17:04 से 18:41 तक

पं महेशचन्द्र शर्मा मो. 9247132654, 9167555710

दिन का चौघड़िया	रात का चौघड़िया
उत्पात 05:47 - 07:22 अशुभ	शुभ 18:38 - 20:04 शुभ
चंचल 07:22 - 08:59 शुभ	अमृत 20:04 - 21:27 शुभ
लाभ 08:59 - 10:36 शुभ	चंचल 21:27 - 22:50 शुभ
अमृत 10:36 - 12:13 शुभ	रोग 22:50 - 00:13 अशुभ
काल 12:13 - 13:50 अशुभ	काल 00:13 - 01:35 अशुभ
शुभ 13:50 - 15:27 शुभ	लाभ 01:35 - 02:58 शुभ
रोग 15:27 - 17:04 अशुभ	उत्पात 02:58 - 04:21 अशुभ
उत्पात 17:04 - 18:38 अशुभ	शुभ 04:21 - 05:47 शुभ

आपका राशिफल

मेष (चू,चे, चो, ला, ली, लू , ले, लो, अ,) आपके कार्य क्षेत्र का भाग्य आपके साथ चल रहा है और आपके पास काफी परियोजनायें है , फिर भी आज एक नया अवसर आपको मिल सकता है जो की आपके करियर के लिए काफी अच्छा रह सकता है । ये आपके कार्य क्षेत्र में आप पर अधिक जिम्मेदारी डालेगा । आप थोड़ा बदलाव चाहेंगे ।

वृष (ई, उ, ए, जो, वा, वी, वू, वे, वो,) आज आपको अपने कार्यालय पर संचार और बातचीत कौशल का विशेष उपयोग करने की जरूरत है। आपको सावधान रहना होगा की जोर से शिकायत या किसी के पैरो में गिरने की जरुरत नहीं है , इसके बजाय आपको कूटनीति और कुशलता से दबाव के समय में कार्य करने की आवश्यकता होगी ।

मिथुन (का, की, कू, घ, ड, छ, के, को, ह,) आपके कार्य क्षेत्र या करियर में परिवर्तन आने के संकेत हैं। अगर आप अपनी नौकरी बदलने के बारे में सोच रहे है, तो आज आपके अंतिम कदम उठाने की संभावना है। हो सकता है की आप अपना प्रशिक्षण संस्थान भी खोले जो की आप लंबे समय से करना चाहते थे । इस प्रक्रिया में, आपको कुछ जोखिम भी लेने पड़ सकते है।

कर्क (ही, हू ,हे , हो, डा , डी, डू, डे, डो,) हालाँकि आप अपने कार्य क्षेत्र से संतुष्ट है और आगे की तरफ जा रहे है लेकिन ये समय अपना हुनर , रचनात्मकता एवं प्रतिबद्धता को दिखाने का है और हो सकता है की आपको अपनी परिवार की प्रतिबद्धता को पीछे छोड़ना पड़े लेकिन ये आपके करियर को आगे ले जाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकता है ।

सिंह (मा, मी ,मू ,मे, मो, टा, टी ,टू ,टे,) आप कुछ समय से अपनी विलम्ब परियोजनाओं के लिए धन संचित कर रहे थे और अब अपनी योजनाओ के क्रियान्वयन का ये सही समय है । जब आप कुछ वस्तु खरीदने जायेंगे तो हो सकता है की आप कुछ बड़ी एवं सुव्यस्थित चीज को देखकर उसे खरीदने की सोचे परन्तु आपको अपने बजट के भीतर रहकर ही काम करना है।

कन्या (टो पा पी पू ष ण ठ पे पो) अगर आप अपने कार्यक्षेत्र या अपने आर्थिक लक्ष्यों के लिए किसी पारंगत व्यक्ति या अपने निकट जानने वाले व्यक्ति से परामर्श लेते है तो ये सुझाव आपको काफी लाभ दे सकता है । आज का दिन इंजीनियरों और कंप्यूटर में प्रवीण व्यक्तियों के लिए काफी अछा रहेगा । आपको दूसरी नौकरी का प्रस्ताव भी मिल सकता है या उसी नौकरी में स्थान परिवर्तन के संकेत भी आपको मिल सकते है।

तुला (रा, री, रू ,रे ,रो , ता, ती, तू ,ते,) शोध विधार्थियों को आज के दिन शुभ सन्देश मिल सकता है । जो विद्यार्थी आज के दिन प्रतियोगिता परीक्षा में भाग ले रहे है वे भी अपनी आशा से ज्यादा अछी परीक्षा देंगे परन्तु समय के अनुसार निर्णय और काम करना काफी महत्वपूर्ण होगा । इन घटनाओं से आपको जो अवसर मिल रहे है आपको शीघ्र अतिशीघ्र इनका उपयोग करना होगा अन्यथा अवसर हाथ से निकल सकता है ।

वृश्चिक (तो,ना,नी, ने,नू, नो, या, यी ,यू,) आज के दिन आपको अपनी आर्थिक समस्याओ से निजात पाने के लिए एक व्यवहार्य समाधान मिल सकता है और उसे लागू करने के लिए उचित दिशा में आप पहला कदम उठायेंगे । पिछले कुछ समय से धन की समस्याओं ने आप की नाक में दम किया हुए था परन्तु अब आप काफी हद तक इस पर काबू पा पाएंगे हालाँकि ये कदम कुछ मुशिकल हो सकता है।

धनु (ये, यो,भा, भी, भू धा ,फा, ढा, भे) आज किसी भी परीक्षा में उतरने के लिए अच्छा दिन नहीं है, हालांकि अगर आप परीक्षा में बेठ रहे है तो किसी नकारात्मक विचारों को अपने पास न आने दे । आप आगे बढे और आपकी शक्ति और सकारात्मकता आपकी कुण्डली से किसी भी नकारात्मक प्रभाव से लड़ सकती है।

मकर (भो, जा, जी, खो, खू, खे, खो, गा, गी) एक दुर्लभ नौकरी का अवसर आज आपके दरवाजे पर दस्तक देने के लिए आ रहा है। यह विचार करने पर कुछ हद तक जोखिम भरा लगेगा , लेकिन आप उस पर कार्रवाई करते हैं, तो आप अपने कैरियर को एक नया मोड़ दे सकते हैं। सुरक्षित और संकीर्ण रास्ते की तुलना में ये समय जोखिम लेने के लिए है ताकि जो आप अपने जीवन में करना चाहते है वो पूरा हो ।

कुंभ (गू, गे ,गो, सा, सी, सू, से, सो, दा,) आप सफलतापूर्वक आगे बढ़ रहे हैं, लेकिन आपकी प्रगति रुक सकती है। अगर आपने किसी भी गैजेट या कुछ रचनात्मक वस्तु का उत्पादन किया है, तो उसे जल्द से जल्द उस पर क़ानूनी एकाधिकार करवा ले । लोग ये साबित करने की कोशिश कर सकते हैं की ये वस्तु उन्ही की है , हालांकि वास्तविकता में वे शायद ही कोई भी उत्पाद की एक प्रतिकृति के निर्माण में आपके करीब आ सकते हैं।

मीन (दी, दू,थ, झ, ञ, दे, दो, चा,ची) अगर आपने व्यावसायिक साझेदारी को तोड़ने का फैसला कर लिया है , तो आप एक विनम्र और यथार्थवादी तरीके से ऐसा करे । आपको इस शीत युद्ध के अंत के लिए बहुत प्रभावी ढंग से और आसानी से संवाद स्थापित करना होगा और हो सके तो आपको ही पहल करनी होगी ताकि बर्फ कुछ पिघले ।

श्री पंचागुली ज्योतिष केन्द्र

शराब घोटाला, 15 ठिकानों पर एसीबी-ईओडब्ल्यू की रेड

कांग्रेस नेताओं के घर दबिश, दंतेवाड़ा में लखमा के करीबियों के ठिकाने पर चल रही तलाशी

रायपुर/ जगदलपुर, 17 मई (एजेंसियां)। छत्तीसगढ़ में शराब घोटाले केस में शनिवार सुबह एसीबी-ईओडब्ल्यू की टीमों ने सुकमा, जगदलपुर, दंतेवाड़ा, अंबिकापुर और रायपुर में एक साथ छापेमारी की। 5 जिलों के करीब 15 से ज्यादा ठिकानों पर कार्रवाई चल रही है। बताया जा रहा है कि जिन जगहों पर रेड की गई है, वे सभी ठिकाने पूर्व मंत्री कवासी लखमा से जुड़े लोगों के हैं।

रायपुर के देवेंद्र नगर के शहीद हेमू कलाणी वार्ड स्थित जी नागेश्वर राव और जी श्रीनिवास राव के घर भी छापा पड़ा है। जी नागेश्वर कंस्ट्रक्शन का काम करते हैं। छापेमारी के दौरान टीम कई दस्तावेज और डिजिटल सबूत अपने साथ ले गई है।

श्रीनिवास कांग्रेस से पार्षद प्रत्याशी थे। नागेश्वर राव कवासी लखमा और उनके बेटे हरीश लखमा के करीबी हैं। सुबह 2

गाड़ियों में करीब 8-10 अधिकारियों ने दबिश दी। इसके साथ ही संतोषी नगर स्थित कमलेश नहाटा के घर पर भी छापा पड़ा है। एसीबी-ईओडब्ल्यू की टीम दस्तावेज खंगाल रही है।

वहीं ईओडब्ल्यू की छापेमारी को लेकर सीएम विष्णु देव साय ने कहा कि कार्रवाई लगातार जारी है। शिकायतें मिलने के बाद केंद्रीय और राज्य की एजेंसियां जांच कर रही हैं, जो भी दोषी पाया जाएगा, उसे सजा दी जाएगी।

वहीं दंतेवाड़ा में कांग्रेस नेता राजकुमार तामो के घर एसीबी-ईओडब्ल्यू ने दबिश दी है। राजकुमार तामो को कवासी लखमा का करीबी माना जाता है। सुकमा जिले में 4 स्थानों पर छापेमारी हुई है। इसमें जिला मुख्यालय के 3 और तोंगपाल के 1 स्थान पर कार्रवाई जारी है।

इनमें हार्डवेयर और पेट्रोल पंप कारोबारी भी शामिल हैं। ये सभी व्यक्ति भी कवासी लखमा के नजदीकी बताए जा रहे हैं।

वहीं अंबिकापुर में भी कार्रवाई की गई है। यहां एसीबी-ईओडब्ल्यू की टीम ने कपड़ा व्यवसाय से जुड़ी फर्म धजाराम-विनोद कुमार के संचालकों के ठिकानों पर छापा मारा है। इस फर्म का नाम पहले भी चर्चित डीएमएफ (डीएमएफ) घोटाले में आ चुका है।

इनके खिलाफ एफआईआर दर्ज है। पहले भी ईडी और आयकर विभाग (आईटी) इन व्यापारियों पर कार्रवाई कर चुके हैं। फर्म के संचालक मुकेश अग्रवाल और विनोद अग्रवाल हैं, जिनके घरों पर शनिवार सुबह छापेमारी शुरू हुई। छापेमारी के दौरान दस्तावेजों और लेन-देन से जुड़ी कई अहम जानकारियां जुटाई जा रही हैं।

फिलहाल एसीबी-ईओडब्ल्यू की टीमें जांच में जुटी हैं। पूरे नेटवर्क को खंगालने का काम चल रहा है। माना जा रहा है कि आने वाले दिनों में इस घोटाले में और बड़े नाम सामने आ सकते हैं। छत्तीसगढ़ शराब घोटाला मामले में ईडी जांच कर रही है।

कई मामलों में वांछित टीपीसी कमांडर प्रताप गिरफ्तार

पुलिस को मिली बड़ी सफलता

रांची, 17 मई (एजेंसियां)। झारखंड के रांची जिले में पुलिस ने माओवादियों के एक गुट तृतीय सम्मेलन प्रस्तुति कमेटी (टीएसपीसी) के दो सदस्यों को गिरफ्तार किया है। इनमें एक सब-जोनल कमांडर भी शामिल है। गिरफ्तार माओवादियों की पहचान दिवाकर गंझू उर्फ प्रताप जी और अक्षय गंझू के रूप में हुई है। दोनों को गुरुवार रात बुरमु थाना क्षेत्र के चायनगढ़ा और गमहरिया के जंगलों के बीच से पकड़ा गया। पुलिस ने इनके पास से दो पिस्तौल, छह जिंदा कारतूस, टीएसपीसी के पर्चे, पांच मोबाइल फोन, चार चार्जर और अन्य सामान बरामद किया है। रांची के सीनियर एसपी चंदन कुमार सिन्हा ने बताया कि ये दोनों बुरमु, उरीमारी, भुरकुंडा, पतरातू, बड़कागांव और केरेडारी इलाकों में क्रशर प्लांट मालिकों, ईंट भट्ठा चलाने वालों और जमीन कारोबारियों से लेवी वसूलते थे।

ट्रक ने युवती को कुचला, 25 कांग्रेस कार्यकर्ताओं पर एफआईआर

हादसे के बाद एनएच पर किया था चक्काजाम, पीएचडी की तैयारी कर रही थी

रायपुर, 17 मई (एजेंसियां)। रायपुर में एक युवती की एक्सीडेंट में मौत के बाद तेलीबांधा चौक पर हाईवे पर चक्काजाम करने के मामले में 20-25 कांग्रेसियों के खिलाफ एफआईआर दर्ज की गई है। कांग्रेसी तेलीबांधा चौक पर स्पीड ब्रेकर बनाने की मांग कर धरने पर बैठे थे। एक ऑटोवाले ने मामले की शिकायत पुलिस से की थी, जिसके बाद कार्रवाई की गई।

हालांकि, एफआईआर में किसी भी आरोपी का नाम नहीं है। बता दें कि युवती को एक ट्रक ने कुचल दिया था। जिसका वीडियो भी वायरल हुआ था। वहीं आज तेलीबांधा में एक्सीडेंट वाली जगह पर रायपुर कलेक्टर, एसएसपी और ट्रैफिक डीएसपी समेत अन्य अधिकारी मुआयना करने पहुंचे।

एक्सीडेंट की घटना शुक्रवार सुबह करीब साढ़े 11 बजे हुआ था। एक्सीडेंट इतना भयानक था कि युवती के सिर और छाती की हड्डियां चूर-चूर हो गई है। युवती की मौके पर ही मौत हो गई। इस मामले में कांग्रेस के पूर्व विधायक विकास उपाध्याय के नेतृत्व में कांग्रेस कार्यकर्ताओं ने स्पीड ब्रेकर बनाने की मांग को लेकर प्रदर्शन किया था।

तेलीबांधा थाना प्रभारी नरेंद्र मिश्रा से मिली जानकारी के मुताबिक रेड सिग्नल होने के कारण ट्रक खड़ा हुआ था, जो मैग्नेटो मॉल की तरफ से टाटीबंध की ओर जा रहा था। सिग्नल ग्रीन होते ही ट्रक आगे बढ़ा। इस दौरान स्कूटी को ट्रक ड्राइवर ने लेफ्ट साइड के चक्के से अपनी चपेट में ले लिया। बताया जा रहा है कि युवती की स्कूटी ट्रक के ब्लाइंड स्पॉट में आई। जिसे ट्रक ड्राइवर ने देखा नहीं और गाड़ी आगे बढ़ा दी। एक्सीडेंट होते ही स्कूटी ट्रक के सामने के हिस्से में फंस गई। जिससे तान्या ट्रक के पिछले चक्के में दब गई।

हादसे में युवती के सिर और सीने की हड्डियां बुरी तरह चूर-चूर हो गई। मौके पर उसकी मौत हो गई। सिर पर टायर चढ़ने से भेजा बाहर आ गया। हादसे के बाद ट्रैफिक जाम हो गया। पुलिस ने धीरे-धीरे जाम को क्लियर करवाया। तान्या अपने गोल्डन स्काई अपार्टमेंट फेज-2 वीआईपी रोड से स्कूटर से शहर की तरफ जा रही थी। तान्या के करीबी रिश्तेदारों से पता चला है कि वह पढ़ाई में होनहार थी। वह पीएचडी में एडमिशन के लिए यूजीसी नेट की तैयारी कर रही थी। हादसे के दिन वह शहर के भीतर पढ़ने के लिए लाइब्रेरी जा रही थी।

छत्तीसगढ़ के स्थायी डीजीपी की रेस में 3 सीनियर आईपीएस

अरुण देव के लिए नेताओं की लॉबी, जीपी को मुखिया बनाने में लगे अफसर

रायपुर, 17 मई (एजेंसियां)। छत्तीसगढ़ के नए डीजीपी के लिए यूपीएससी से 3 अधिकारियों के नाम को क्लीयरेंस मिल गई है। विभागीय सूत्रों के अनुसार छत्तीसगढ़ के स्थायी डीजीपी बनने की रेस में आईपीएस अरुण देव गौतम के अलावा, आईपीएस पवन देव और आईपीएस जीपी सिंह का नाम शामिल है। सरकार जून में स्थायी डीजीपी नियुक्त कर देगी।

वर्तमान में डीजीपी की जिम्मेदारी आईपीएस अरुण देव गौतम के पास है। सरकार ने गौतम को डीजीपी पद की अस्थायी जिम्मेदारी दी है। बताया जा रहा है कि आईपीएस अरुण देव गौतम के लिए प्रदेश के नेताओं की लॉबी लगी हुई है। वहीं आईपीएस पवन देव के लिए बिहार के राजनेता लॉबी कर रहे हैं। इसी तरह से आईपीएस जीपी सिंह के लिए प्रदेश के राजनेताओं के अलावा दिल्ली के राजनेता और अफसर लॉबी कर रहे हैं। इन तीनों में से कोई एक छत्तीसगढ़ पुलिस का स्थायी मुखिया होगा। हालांकि सूत्रों का कहना है कि अरुण देव का नाम सबसे टॉप पर है।

गृह विभाग के विश्वसनीय सूत्रों के मुताबिक, यूपीएससी से सीएम सचिवालय फाइल और लेटर आ चुका है। राज्य सरकार के जिम्मेदारों ने यूपीएससी से आए पत्र पर अंतिम निर्णय लेने की कवायद शुरू कर दी है।जून माह तक नए डीजीपी का नाम सार्वजनिक किया जाएगा।

राज्य सरकार ने 4 फरवरी को आईपीएस अरुण देव गौतम को डीजीपी की अस्थायी जिम्मेदारी दी थी। इस संबंध में गृह विभाग के विशेष सचिव ने निर्देश जारी किया था। जिस समय आईपीएस गौतम को डीजीपी बनाया गया था, उस समय उनके पास नगर सेना एवं नागरिक सुरक्षा नवा रायपुर के महानिदेशक, लोक अभियोजन नवा रायपुर के संचालक की भी जिम्मेदारी थी। सुप्रीम कोर्ट का 2006 का फैसला आज भी राज्यों में डीजीपी (पुलिस प्रमुख) की नियुक्ति के लिए एक दिशा-निर्देश की तरह काम करता है।

ज्योति बनकर रह रही थी बांग्लादेश की शाहिदा

पति ने कई इंडस्ट्रीज में काम किया, दोनों का वीजा एक्सपायर, फर्जी आधार, पैन-कार्ड बनवाया

भिलाई, 17 मई (एजेंसियां)। दुर्ग पुलिस की एसटीएफ (स्पेशल टास्क फोर्स) जिले में पहचान छिपाकर अवैध रूप से रह रहे घुसपैठियों की तलाश कर रही है। एसटीएफ ने 4 दिन के भीतर दूसरी कार्रवाई करते हुए बांग्लादेशी दंपती को गिरफ्तार किया है। भिलाई में पत्नी घरेलू काम करती थी और पति इंडस्ट्रीज में काम करता था।

एसटीएफ प्रभारी सत्य प्रकाश तिवारी के अनुसार उन्हें जानकारी मिली कि सुपेला के कांट्रेक्टर कॉलोनी में एक महिला और पुरुष अवैध तरीके से पहचान छिपाकर रह रहे हैं। दोनों बांग्लादेश के निवासी हैं और भारत जिस वीजा पासपोर्ट से आए थे, वो एक्सपायर हो गया है।

पुलिस ने दोनों को हिरासत में लिया। जब उनके दस्तावेजों की जांच कर उनसे पूछताछ की गई तो महिला ने अपना नाम ज्योति बताया और उसके पति ने अपना नाम रासेल शेख बताया। जब पुलिस ने बारीकी से जांच की तो

पता चला कि महिला का असली नाम शाहिदा खातून (35 साल) है। वो यहां अपना नाम (ज्योति) बदलकर भिलाई में किराए के मकान में रह रही है।

पुलिस ने जांच में पाया कि ज्योति ने रासेल शेख से 2017 में शादी की। इसके बाद दोनों ने पासपोर्ट और वीजा के आधार पर भारत में प्रवेश किया। इस दौरान ज्योति का वीजा 13-09-2018 को और रासेल का वीजा 12 अप्रैल 2020 को समाप्त हो गया था। इसके बाद भी दोनों यहां अवैध तरीके से रह रहे थे।

पुलिस ने जांच में पाया कि भिलाई में रहते हुए ज्योति ने फर्जी दस्तावेज के आधार पर अपना आधार कार्ड, पैन कार्ड, मतदाता परिचय पत्र और पासपोर्ट बना लिया था।

इसके बाद वे यहां रहकर इंटरनेट कॉल और वॉट्सएप के जरिए बांग्लादेश में अपने परिजनों से संपर्क में थे।

एसपी विजय अग्रवाल ने बताया कि शाहिदा खातून इससे पहले साल 2009 में भारत आ चुकी थी। उसने भारत बांग्लादेश अंतर्राष्ट्रीय बोंगा बॉर्डर को अवैध तरीके से पारकर नॉर्थ 24 परगना पश्चिम बंगाल में प्रवेश किया था।

युवा कांग्रेस नेता ने शादी का झांसा देकर किया दुष्कर्म

दुर्ग, 17 मई (एजेंसियां)। दुर्ग जिले में शादी का झांसा देकर युवती से रेप का मामला सामने आया है। आरोपी युवा कांग्रेस का पूर्व प्रदेश महासचिव है। 10 साल तक रिलेशन में रहने के बाद आरोपी युवती से शादी से इनकार कर दिया। रिलेशनशिप के दौरान युवती गर्भवती हुई तो आरोपी ने एबॉर्शन भी करवाया।

पीड़िता ने युवक के खिलाफ पद्मनाभपुर थाने में एफआईआर दर्ज कराई है। पुलिस ने आरोपी को गिरफ्तार कर न्यायिक रिमांड पर भेज दिया है।

एएसपी पद्मश्री तंवर ने बताया कि एक युवती ने पद्मनाभपुर थाने में दैहिक शोषण का मामला दर्ज कराया है। लड़की ने आरोप लगाया है कि साल 2015 में उसकी मुलाकात भिलाई निवासी मो. आमिर सिद्दकी (35 साल) से हुई थी।

दोनों के बीच नजदीकियां बढ़ी। आमिर ने लड़की को शादी का वादा किया, लेकिन लड़की के घरवालों को ये रिश्ता मंजूर नहीं था। इसके बाद भी आमिर और लड़की साल 2015 से 2025 तक एक साथ रहे। दोनों के बीच मिलना-जुलना होता रहा।

इस दौरान आमिर ने समय-समय पर लड़की के साथ शारीरिक संबंध बनाए। लड़की के गर्भवती होने पर उसने उसे शादी करने का झूठा वादा किया और एबॉर्शन करा दिया। कुछ दिन पहले लड़की को पता की आमिर का किसी दूसरी लड़की से निकाह होने वाला है, इस पर उसने उससे झगड़ा किया और शादी के लिए दबाव बनाया।

जब लड़की शादी की जिद पर अड़ गई तो आमिर ने लड़की से शादी करने से ही मना कर दिया। इसके बाद लड़की ने पद्मनाभपुर थाने में जाकर मामले की शिकायत दर्ज कराई। मामले की गंभीरता को देखते हुए आरोपी को पुलिस ने कोर्ट में विफोर टाइम पेश किया। इस मामले की सुनवाई के लिए दुर्ग जिला न्यायालय की संबंधित कोर्ट को समय से पहले खोला गया। वहां पुलिस ने आरोपी को पेश किया। न्यायालय ने आरोपी को न्यायिक हिरासत में भेज दिया है।

छात्र की 5वीं मंजिल से गिरने से मौत

एनआईटी का था स्टूडेंट्स, परीक्षा में शामिल नहीं हो पाने से था तनाव में, आत्महत्या की आशंका

जमशेदपुर, 17 मई (एजेंसियां)। सरायकेला में एनआईटी जमशेदपुर के एक छात्र की आत्महत्या से हड़कंप मच गया। ड्रीम सिटी अपार्टमेंट के 5वीं मंजिल से गिरने से कंप्यूटर साइंस के छात्र दिव्यांशु गांधी (20) की मौत हो गई। घटना शुक्रवार की देर शाम की है।

सोसायटी के लोगों ने दिव्यांशु को टाटा मेमोरियल हॉस्पिटल पहुंचाया। चिकित्सकों ने उन्हें मृत घोषित कर दिया। शनिवार को पोस्टमॉर्टम के बाद शव परिजनों को सौंप दिया गया। आशंका जाहिर की जा रही है कि छात्र ने आत्महत्या की है। पुलिस मामले की जांच कर रही है।

दिव्यांशु रांची के जगन्नाथपुर थाना क्षेत्र के हवाई नगर का रहने वाला था। उनके पिता ब्रजकिशोर प्रसाद रेलवे में लोको पायलट हैं। जानकारी के अनुसार, दिव्यांशु कुछ समय से डिप्रेशन में था। बीमारी के कारण वह परीक्षा में शामिल नहीं हो पाया था।

शादी के 16 दिनों बाद फंदे से लटकी मिली विवाहिता

पति ने कहा- फेयरवेल की बात कह गई थी स्विमिंग पूल, भाई ने कहा- हत्या है ये

जमशेदपुर, 17 मई (एजेंसियां)। जमशेदपुर में शादी के महज 16 दिनों बाद ही एक विवाहिता का शव उसके ससुराल में फंदे से लटका मिला। घटना सोनारी थाना क्षेत्र के कागलनगर की है। मृतका के पति का कहना है कि वो फेयरवेल में जाने की बात कह स्विमिंग पूल गई थी। उसके मोबाइल में फोटो दिखा तो पति को पता चला।

पति नाराज हो गया और इसकी जानकारी अपने ससुर को दे दी। इसी बात से पत्नी ने आहत होकर सुसाइड कर लिया। जबकि मृतका के भाई का आरोप है कि ये हत्या है। ससुराल पक्ष बहन को दहेज में बाइक नहीं मिलने पर प्रताड़ित कर रहे थे। मृतका की पहचान रीता महतो के रूप में की गई। रीता का शव गुरुवार की शाम कमरे से बरामद किया गया। गुरुवार को शव का पोस्टमॉर्टम हुआ। रीता की चंदन महतो के साथ 29 अप्रैल को शादी हुई थी।

चंदन महतो ने बताया कि दोनों पिछले तीन साल से रिलेशन में थे। परिवार वालों की सहमति के बाद उनकी अरेंज मैरिज कराई गई। शादी के बाद रीता और चंदन हनीमून मनाने दार्जिलिंग गए थे। वहां से लौटने के बाद रीता कुछ दिन अपने मायके में रही। पारिवारिक परंपराओं के तहत 14 मई को रीता अपने ससुराल लौटी थी। चंदन महतो ने बताया कि मैंने उसके मोबाइल में उसके स्विमिंग पूल में जाने की कुछ फोटो देखी। जबकि वो उस दिन फेयरवेल पार्टी में जाने की बात कह कर गई थी। इससे चंदन नाराज हो गया और उसने इसकी जानकारी अपने ससुर को दे दी। रीता ने उसे कहा था बात इतना ना बढ़ाओ। इसके बाद चंदन उससे बिना बात किए ही ड्यूटी चला गया। शाम को फोन पर जानकारी मिली कि रीता ने फांसी लगा आत्महत्या कर ली है।

इधर, रीता के भाई शंभू महतो ने इस मामले में चंदन महतो और उसके परिवार पर दहेज प्रताड़ना का गंभीर आरोप लगाया है। उनका कहना है कि शादी के बाद से हमसे बाइक की मांग की जा रही थी। उन्होंने बाइक की बुकिंग भी कर दी थी, लेकिन इसी दौरान यह दर्दनाक घटना घट गई।

वज्रपात की चपेट में आए चार जवान

सीआरपीएफ अधिकारी की मौत

रांची, 17 मई (एजेंसियां)। पश्चिमी सिंहभूम जिले से एक दुखद खबर सामने आई है। जिले के घने सारंडा जंगल में नक्सलियों के खिलाफ चल रहे ऑपरेशन के दौरान तेज बारिश हो रही थी, इसी बीच आकाशीय बिजली गिर गई। इस वज्रपात की चपेट में आकर सीआरपीएफ के दो और झारखंड जगुआर के दो जवान बुरी तरह झुलस गए। इस हादसे में सीआरपीएफ के द्वितीय कमान अधिकारी एसपी सिंह की मौत हो गई। पुलिस कप्तान आशुतोष शेखर ने उनकी मौत की पुष्टि की है और बताया कि उनका शव पोस्टमॉर्टम के लिए जमशेदपुर के एमजीएम अस्पताल भेजा गया है।

मॉर्निंग वॉक पर निकली महिला से चेन स्नैचिंग

सिदगोड़ा में 15 दिन में दूसरी वारदात, 50 हजार की चेन लूटकर बदमाश फरार

जमशेदपुर, 17 मई (एजेंसियां)। जमशेदपुर के सिदगोड़ा थाना क्षेत्र में चेन स्नैचिंग की एक और घटना सामने आई है। छोटा दुर्गा पूजा मैदान के पास मॉर्निंग वॉक कर रही संजना झा से बाइक सवार बदमाशों ने सोने की चेन लूट ली।

पीड़िता ने बताया कि वह सुबह की नियमित सैर पर निकली थीं। दो युवक बाइक पर उनका पीछा कर रहे थे। दुर्गा पूजा मैदान के पास एक युवक ने बाइक से उतरकर उनकी करीब 50 हजार रुपए की सोने की चेन छीन ली।

स्थानीय निवासी विजय नारायण के अनुसार, पिछले 15 दिनों में यह क्षेत्र में दूसरी चेन स्नैचिंग की घटना है। इससे पहले भी एक महिला को निशाना बनाया गया था। इन घटनाओं से क्षेत्र के लोगों में असुरक्षा की भावना बढ़ गई है। पुलिस मौके पर पहुंचकर जांच कर रही है। आसपास लगे सीसीटीवी कैमरों की फुटेज से अपराधियों की पहचान की कोशिश की जा रही है। स्थानीय लोगों का कहना है कि तुरंत सूचना के बावजूद पुलिस अपराधियों को पकड़ने में विफल रही है।

पत्नी का गला रेत दिया

बेटी ने मां को खून से लथपथ देखा, हिरासत में पति, मायके वालों का प्रताड़ना का आरोप

गिरिडीह, 17 मई (एजेंसियां)। गिरिडीह जिले के बेंगाबाद थाना क्षेत्र के कजरो गांव में एक महिला की हत्या का मामला सामने आया है। मृतका की पहचान आसमा खातून (31) के रूप में हुई है। शनिवार की सुबह आसमा की बेटी ने मां को खून से लथपथ देखा। उसकी चीख-पुकार सुनकर आसपास के ग्रामीण एकत्र हुए। सूचना मिलते ही बेंगाबाद पुलिस मौके पर पहुंची। पुलिस ने शव को पोस्टमॉर्टम के लिए भेज दिया है।

प्रारंभिक जांच में सामने आया कि मृतका के गले पर धारदार हथियार से वार किया गया था। पुलिस ने मृतका के पति मकसूद मियां उर्फ भोला मियां को हिरासत में लेकर पूछताछ शुरू कर दी है। घटना की जानकारी मिलते ही मृतका के मायके पक्ष के सैकड़ों लोग मौके पर पहुंच गए। मायके वालों ने ससुराल पक्ष पर हत्या का आरोप लगाया है।

महिला के परिजनों का कहना है कि आसमा की शादी करीब 15 साल पहले मकसूद अंसारी से हुई थी। उसके बच्चे भी हैं। मायके वालों का आरोप है कि पति और ससुराल वाले आसमा को बार-बार प्रताड़ित करते थे। पुलिस मामले की गहन जांच कर रही है।

जीते जी घर मिल जाए यही अंतिम इच्छा

पीएम-सीएम को लिखी चिट्ठी, मंत्रियों के बंगलों का चक्कर काटी, कहा-3 लाख मांग रहे अधिकारी, सड़क ही सहारा

रायपुर, 17 मई (एजेंसियां)। 65 साल की ध्याना बाई बरेठ की आंखों में अब आंसू सूख चुके हैं। सिस्टम की बेरुखी, गरीबी की मार और बेबसी का बोझ लिए 65 साल की ध्याना बाई बरेठ दर-दर की ठोकरें खा रही हैं। न कोई पक्का ठिकाना, न सिर छुपाने की जगह। बस एक बैग है उनके पास, जिसमें कुछ कपड़े और ढेरों चिट्ठियां हैं।

शनि मंदिर के पास खुले आसमान के नीचे, कभी धूप तो कभी बारिश की मार सहते हुए जिंदगी काट रही हैं। ये कहानी रायगढ़ के चक्रधर नगर की रहने वाली ध्याना बाई बरेठ की है।

ध्याना बाई पीएम आवास के लिए प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी, मुख्यमंत्री विष्णुदेव साय, गृहमंत्री विजय शर्मा और डिप्टी सीएम अरुण साव को कई बार चिट्ठी लिख चुकी हैं। मंत्रियों के बंगलों की

चक्कर काट रही हैं, लेकिन उन्हें अब तक घर नहीं मिला। उल्टा घर के बदले 2 लाख 73 हजार रुपए की मांग की गई।

ध्याना बाई बरेठ बताती हैं कि वृद्धा पेंशन ही सहारा है, जिससे दो वक्त की रोटी भी मुश्किल से नसीब होती है। फिर भी, हर महीने जैसे-तैसे ट्रेन पकड़कर रायपुर आती हैं, मंत्रियों के बंगलों के बाहर घंटों बैठी रहती हैं। कभी गार्ड कहता है मंत्री बाहर हैं, तो कभी बिना जवाब के लौटा दिया जाता है।

ध्याना बाई चाहती हैं कि इन्हें जीते जी सरकार एक मकान दे दे, ताकि यह अपना बुढ़ापा बिता सकें, बुजुर्ग ने यह तक कहा है कि मेरी मौत के बाद वह मकान सरकार वापस ले ले यही मेरी अंतिम इच्छा है। वृद्धा पेंशन के सहारे जिंदगी जी रही हूं। मुझे मकान मिल जाए, इससे मैं अपनी वृद्धावस्था आगे ठीक तरह से काट सकूं। रायगढ़ नगर निगम के दफ्तरों के कई चक्कर लगा चुकी ध्याना बाई बेहद परेशान हैं। पिछले साल आवास योजना में इन्हें मकान आवंटित हुआ मगर 2 लाख 73000 जमा करने की शर्त थी। इतनी बड़ी रकम न देने की वजह से मकान नहीं मिला। इस वजह से देश के प्रधानमंत्री और प्रदेश सरकार के मंत्रियों से यह बुजुर्ग गुहार लगा रही है।

सालों पहले पति ने मारपीट कर छोड़ दिया, तब से सड़क पर रह रही हैं। कभी चोर-उचक्के उनके बैग को टटोलते हैं तो कभी यह बुजुर्ग सड़क पर छेड़छाड़ का शिकार भी होती रही है। कहती हैं कि मजदूरी करने जम्मू कश्मीर भी गई थी, वहां बस स्टैंड पर उनके गहने और रुपए चोरी हो गए, जो बची-खुची चीजें थी, वह पुलिस ने ले लिए। बड़ी मुश्किल से खुद को बचाकर वापस छत्तीसगढ़ पहुंची। 1 साल से रायगढ़ और रायपुर के बीच चक्कर काट रही इस महिला की मदद को कोई आगे अब तक नहीं आया है।

विदेशी मुद्रा में इन्वेस्टमेंट कर मुनाफा दिलाने के नाम पर करोड़ों रुपये की ठगी

गौरेला पेंड्रा मरवाही, 17 मई (एजेंसियां)। गौरेला पेंड्रा मरवाही जिले में लगातार ठगी का मामला रुकने का नाम नहीं ले रहा है। लगातार पुलिस लोगों को जागरूक करने का काम कर रही है इसके बावजूद भी लोग ठगी का शिकार हो रहे हैं। इस बार ठगी के मामले में आरोपी खुद को पूर्व में सैनिक व खाद्य अधिकारी बतलाकर एक फाइनेंशियल धोखाधड़ी का मामला सामने आया है, जिसमे आरोपी ने स्थानीय लोगों को विदेशी मुद्रा (डॉलर) में इन्वेस्टमेंट कर मोटा मुनाफा दिलाने का झांसा देकर उनसे करोड़ों रुपए की ठगी कर ली। ठगी का यह मामला गौरेला थाना क्षेत्र का है।

पुलिस ने मामले में पीड़ितों से मिले शिकायत के आधार पर ठगी करने वाले व्यक्ति के खिलाफ एफ आई आर दर्ज कर आरोपी को गिरफ्तार कर मामले की तफ्तीश शुरू कर दी है। वहीं लगातार न्यूज चैनलों, समाचार पत्रों एवं सोशल मीडिया के जरिये,व बड़े बड़े पोस्टर के साथ प्रचार प्रसार करते हुए,ऐसे फ्रॉड से बचने की सलाह दी जाती है फिर भी लोग ऐसी घटनाओं एवं उसमें फंसने वाले लोगों की कहानियां और घटनाओं को जानने, पढ़ने और देखने के बावजूद लोग उसमें फंस रहे हैं, जन जागरूकता और साइबर फ्रॉड सहित ठगी के मामले प्रसारित किए जाने के बावजूद भी लोग लालच के चलते ठगे जा रहे हैं,ताजे मामले में आज करीब 50 से अधिक लोगों ने गौरेला थाने पहुंचकर गौरेला थाना क्षेत्र के गिरवर गांव में रहने वाले प्रहलाद राठौर के खिलाफ लिखित शिकायत दर्ज कराई है।

ट्रम्प के प्रवासियों को निकालने पर सुप्रीम कोर्ट की रोक

अमेरिकी राष्ट्रपति नाराज, कहा– जज अपराधियों को देश से निकालने नहीं देंगे

वॉशिंगटन, 17 मई (एजेंसियां)। अमेरिकी सुप्रीम कोर्ट ने शुक्रवार को ट्रम्प के वेनेजुएला के अप्रवासियों को देश से निकालने के फैसले पर रोक लगा दी है। कई अप्रवासी अभी टेक्सास की एक हिरासत केंद्र में बंद हैं। ट्रम्प प्रशासन 1798 के 'एलियन एनिमीज एक्ट' के जरिए उन्हें जल्द से जल्द देश से बाहर भेजना चाहता था।

ट्रम्प प्रशासन के फैसले पर रोक लगाते हुए कोर्ट ने कहा कि सरकार को लोगों को देश से निकालने से पहले उन्हें कानूनी प्रक्रिया का पूरा मौका देना होगा। कोर्ट ने यह भी कहा कि ट्रम्प प्रशासन ने जो तरीका अपनाया, जैसे कि 24 घंटे में बिना सुनवाई को अप्रवासी को देश से बाहर भेज देना, यह कहीं से सही नहीं है।

एलियन एनिमीज एक्ट युद्ध के समय का बनाया हुआ कानून है जिसमें दुश्मनों को देश से निकालने के लिए कोई भी कानूनी कार्रवाई नहीं करनी होती है। हालांकि अमेरिकी संविधान के कुछ प्रावधान के जरिए इसे कोर्ट में चुनौती दी गई थी। इस फैसले का मतलब है कि प्रवासियों को यह जानने और अदालत में

चुनौती देने का अधिकार है कि उन्हें क्यों निकाला जा रहा है। हालांकि यह फैसला अभी अस्थायी है और इस पर पूरी कानूनी लड़ाई अभी बाकी है।

सुप्रीम कोर्ट ने मामला एक निचली अदालत (फिफ्थ सर्किट कोर्ट) को वापस भेज दिया है ताकि वहां इसे और अच्छे से सुना जा सके। यह वहीं अदालत ने जिसने अप्रैल में इस मामले में हस्तक्षेप करने से इनकार कर दिया था।

अदालत के फैसले पर अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रम्प ने नाराजगी जताई है। उन्होंने अपने सोशल मीडिया अकाउंट पर लिखा-सुप्रीम कोर्ट हमें अपराधियों को देश से बाहर निकालने की इजाजत नहीं देगा।

ट्रम्प दूसरी बार सत्ता में आने के बाद से ही देश में अवैध तौर पर रह रहे लोगों को निकालने में जुटे हैं। ट्रम्प प्रशासन ने एलियन एनिमीज एक्ट का इस्तेमाल करते हुए मार्च 2025 में वेनेजुएला के लगभग 137 अप्रवासियों को अल सल्वाडोर भेज दिया था। ट्रम्प का आरोप था कि ये अपराधी हैं और कुख्यात गिरोह 'ट्रेन डे अरागुआ' से जुड़े हुए हैं।

रिपोर्ट्स के मुताबिक इन प्रवासियों में से कई के खिलाफ कोई आपराधिक आरोप नहीं थे और इन्हें बिना उचिता कानूनी प्रक्रिया का पालन किए बिना हिरासत में ले लिया गया था। अल सल्वाडोर में इन अप्रवासियों को दुनिया की सबसे खतरनाक मानी जाने वाली सीकोट जेल में भेज दिया गया। यह जेल मानवाधिकार उल्लंघनों के लिए बदनाम है।

अल सल्वाडोर में जनवरी 2023 में एक जेल का निर्माण हुआ था। इसका नाम 'आंतकवादी बंदी केंद्र' है जिसे सीकोट के नाम से भी जाना जाता है। यह दुनिया की सबसे बड़ी जेलों में से एक है। इसमें 40 हजार से ज्यादा कैदी रखे जा सकते हैं।

अमेरिकी सुप्रीम कोर्ट ने मार्च के अंत में ट्रम्प प्रशासन के एलियन एनिमीज एक्ट के इस्तेमाल करने पर अस्थायी रोक लगा दी थी।

दक्षिण कोरिया के पूर्व राष्ट्रपति यून सुक योल ने पार्टी छोड़ी

राष्ट्रपति चुनाव से पहले की घोषणा

सियोल, 17 मई (एजेंसियां)। दक्षिण कोरिया के पूर्व राष्ट्रपति यून सुक योल ने शनिवार को पीपुल्स पावर पार्टी (पीपीपी) छोड़ने की घोषणा की है। यह जानकारी उन्होंने अपने एक फेसबुक पोस्ट में दी। पिछले साल दिसंबर में उन्होंने देश में आपातकाल लगा दिया था। इसके बाद 7 अप्रैल को उन्हें पद से हटा दिया गया था।

साउथ कोरिया में 3 जून को राष्ट्रपति पद के लिए मतदान होना है। योल ने लोगों से पीपीपी के आधिकारिक उम्मीदवार किम मून-सू का समर्थन करने की अपील की। मून-सू यून के राष्ट्रपति कार्यकाल में श्रम मंत्री रह चुके हैं। किम मून-सू उदारवादी डेमोक्रेटिक पार्टी के उम्मीदवार ली जे-म्यांग से बुरी तरह से पीछे चल रहे हैं।

ट्रम्प फिर पलटे, कहा- भारत-पाक न्यूक्लियर वॉर मैंने रुकवाई

मुझे इसका क्रेडिट नहीं मिला, 7 दिन में 6 बार सीजफायर पर बयान दिए

वॉशिंगटन, 17 मई (एजेंसियां)। अमेरिका के राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रम्प ने एक बार फिर दावा किया है कि उन्होंने भारत और पाकिस्तान के बीच युद्ध रोकने में बड़ी भूमिका निभाई थी। ट्रम्प ने कहा कि दोनों देशों के बीच तनाव इतना बढ़ गया था कि वे परमाणु जंग के बहुत करीब पहुंच गए थे। ट्रम्प से विदेश नीति की सफलताओं के बारे में पूछा गया था। इसके जवाब में उन्होंने कहा कि भारत-पाकिस्तान जंग को रोकना उनकी सबसे बड़ी सफलताओं में से एक है। हालांकि उन्हें इसका क्रेडिट नहीं मिला।

ट्रम्प ने शुक्रवार को फॉक्स न्यूज को दिए इंटरव्यू में ये बातें कही। उन्होंने कहा कि हालात बहुत गंभीर हो गए थे। अगला कदम क्या होता, आप जानते हैं 'एन वर्ड'। यानी परमाणु हमला।

ट्रम्प ने कहा कि उन्होंने दोनों देशों को जंग रोकने के बदले उनके साथ ट्रेड करने का प्रस्ताव रखा था। उन्होंने कहा- अब मैं व्यापार का इस्तेमाल हिसाब

चुकता करने और शांति स्थापित करने के लिए कर रहा हूं।

भारत और पाकिस्तान सीजफायर के लिए राजी हो गए हैं। मैं दोनों देशों को कॉमनसेंस, समझदारी से भरा फैसला लेने के लिए बधाई देता हूं।

मुझे भारत और पाकिस्तान की मजबूत लीडरशिप पर बहुत गर्व है, जिन्होंने ताकत, समझदारी और हिम्मत दिखाकर यह फैसला लिया कि अब मौजूदा तनाव को रोकने का समय है। यह तनाव लाखों लोगों की मौत और तबाही का कारण बन सकता था।

मैंने परमाणु जंग रोक दी है। अमेरिका ने दोनों देशों के बीच सीजफायर कराने में मदद की है। मुझे यकीन है कि यह सीजफायर स्थायी होगा। दोनों देशों के पास बहुत सारे परमाणु हथियार हैं, इससे एक भीषण परमाणु जंग छिड़ सकती थी।

दोनों देशों के बीच सीजफायर में मध्यस्थता के लिए मैंने काफी हद तक बिजनेस का इस्तेमाल किया। मेरा सबसे बड़ा सपना शांति स्थापित करने का है। मैं विभाजन नहीं, एकता चाहता हूं।

मैंने दोनों देशों के बीच मध्यस्थता नहीं कराई, लेकिन मैंने मदद की है। मैं ये नहीं कहता कि ये मैंने किया, लेकिन ये पक्का है कि पिछले हफ्ते भारत-पाकिस्तान के बीच जो हुआ, मैंने उसे सेटल करने में मदद की।

अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रम्प ने फॉक्स न्यूज पर ही शुक्रवार को दावा किया कि भारत, अमेरिकी चीजों पर 100 प्रतिशत टैरिफ में कटौती करने को तैयार है। ट्रम्प ने फॉक्स न्यूज के इंटरव्यू में दावा किया कि भारत और अमेरिका के बीच एक ट्रेड डील होने वाली है। वे इसमें कोई जल्दबाजी नहीं करने जा रहे हैं।

जॉर्जिया मेलोनी के स्वागत में घुटनों पर बैठे अल्बानिया पीएम

हाथ जोड़कर नमस्ते भी किया, फिर गले मिले दोनों नेता

तिराना, 17 मई (एजेंसियां)। इटली की प्रधानमंत्री जॉर्जिया मेलोनी अल्बानिया के दौरे पर हैं। यहां पीएम एडी रामा ने शुक्रवार को घुटनों के बल बैठकर स्वागत किया।

रेड कार्पेट पर बैठे रामा ने मेलोनी को नमस्ते भी किया। उनका शानदार अंदाज मूसलाधार बारिश के बावजूद भी बरकरार रहा।

अल्बानिया के प्रधानमंत्री एडी रामा ने 2030 तक देश को यूरोपीय यूनियन में शामिल कराने का वादा किया है। इसके लिए उन्होंने शुक्रवार को राजधानी तिराना में यूरोप के नेताओं की मेजबानी की।

गाजा पर इजराइली हमले में 3 दिन में 250 मौत

24 घंटे में हमास के 150 ठिकानों पर हमला गाजा खाली कराने का ऑपरेशन जारी

गाजा, 17 मई (एजेंसियां)। इजराइली सेना ने हमास को हराने और अपने बंधकों की रिहाई के लिए गाजा में एक बड़ा मिलिट्री ऑपरेशन शुरू किया है। इस ऑपरेशन के तहत इजराइल ने बीते 3 दिन में गाजा पर कई बड़े हमले किए, जिसमें 250 से ज्यादा लोगों की मौत हो चुकी है।

वहीं सिर्फ बीते 24 घंटे में ही गाजा पट्टी में हमास के 150 से अधिक ठिकानों पर हमले किए गए। इजराइल का कहना है कि वह तब तक अपना अभियान जारी रखेगा, जब तक हमास खत्म नही हो जाता।

इजराइल ने गाजा पर कंट्रोल के लिए 5 मई को 'गिदोन चैरियट्स' मिलिट्री ऑपरेशन की शुरुआत की थी। इजराइल ने मार्च 2025 में गाजा के अंदर फूड और फ्यूल सप्लाई रोकने का फैसला किया था। इजराइली सरकार ने दावा किया था कि इससे हमास कमजोर होगा। गाजा में बीते 19 महीनों से जारी जंग के बीच 5 लाख लोगों पर भुखमरी का संकट पैदा हो गया है। गाजा के हालात पर 12 मई को संयुक्त राष्ट्र ने एक रिपोर्ट पेश की थी।

इसके मुताबिक अगर इजराइल पाबंदियां नहीं हटाता है तो गाजा में हर 5 में से 1 व्यक्ति भुखमरी की चपेट में आ सकता है। साथ ही 21 लाख लोगों को अकाल का सामना भी करना पड़ सकता है।

इजराइल ने यमन के 2 बंदरगाहों पर हमला किया

इजराइली विदेश मंत्री बोले- हमला नहीं रोका तो नसरल्लाह जैसा हाल करेंगे

सना, 17 मई (एजेंसियां)। इजराइल ने यमन के होदेइदाह और सालिफ पोर्ट पर शुक्रवार को हवाई हमले किए। इजराइली सेना ने कहा कि इनका इस्तेमाल हथियार लाने और ले जाने के लिए हो रहा था। यमन में हूती समर्थक टीवी चैनल अल मसीराह ने इन हमलों की पुष्टि की है।

रिपोर्ट्स के मुताबिक इजराइली सेना ने इन दोनों बंदरगाहों पर 30 से ज्यादा बम गिराए। इसमें 1 व्यक्ति की मौत हुई है और 9 घायल हुए। हमले के बाद इजराइल ने कहा है हूती विद्रोही अगर हमले नहीं रोकते तो उनका हाल हमास और हिजबुल्लाह नेताओं जैसा होगा। इजराइल ने पिछले साल मोहम्मद देइफ, याह्या सिनवार और हसन नसरल्लाह की हत्या कर दी थी।

इजराइली पीएम बेंजामिन नेतन्याहू ने इस कार्रवाई की सराहना की है। उन्होंने कहा कि हमारे पायलट ने हूती आतंकियों के

दो ठिकानों पर सफल हमला किया है। हम हूतियों को और नुकसान पहुंचाएंगे। नेतन्याहू ने यह भी कहा कि हूतियों के पीछे ईरान हैं। हूती सिर्फ एक मोहरा हैं। उनके पीछे जो ताकत है, जो उन्हें समर्थन देती है और निर्देश देती है, वो ईरान है।

काट्ज बोले- हूती का नसरल्लाह जैसा हाल होगा

इजराइली रक्ष मंत्री इजराइल काट्ज ने कहा कि अगर हूती विद्रोही इजराइल पर मिसाइल हमले जारी रखते हैं तो उन्हें और उनके नेताओं को गंभीर खामियाजा भुगतना होगा। उन्होंने कहा कि इजराइली सेना ने हमास के मोहम्मद देइफ, याह्या सिनवार और हसन नसरल्लाह का जैसा हाल किया था, ठीक वैसे ही यमन में अब्दुल मलिक अल-हूती का किया जाएगा।

हूती विद्रोहियों ने अक्टूबर 2023 में गाजा पर इजराइल के हमले के बाद फिलिस्तीनियों के समर्थन किया था। वे इजराइल और रेड सी में इजराइल समर्थक देशों के जहाजों पर हमले कर रहे थे। अल जजीरा के मुताबिक मार्च में गाजा में सीजफायर टूटने के बाद हूती विद्रोहियों ने अब तक कम से कम 34 मिसाइलें और ड्रोन इजराइल पर दागे हैं। इससे पहले हूती विद्रोहियों ने 4 मई को इजराइल के सबसे व्यस्त हवाई अड्डे बेन गुरियन इंटरनेशनल एयरपोर्ट पर बैलिस्टिक मिसाइल से हमला किया था।

मिसाइल ने एयरपोर्ट के परिसर में एक सड़क और एक वाहन को नुकसान पहुंचाया। इजराइली सेना ने माना है कि उनका डिफेंस सिस्टम इस मिसाइल को रोकने में नाकाम रहा। इसके अगले ही दिन इजराइली सेना ने यमन में हूती विद्रोहियों के नियंत्रण वाले बंदरगाह शहर हुदैदाह पर भीषण बमबारी की।

व्हाइट हाउस की प्रेस सचिव का दावा- कश्मीरी वेटर ने युद्ध रोकने के लिए ट्रंप को कहा शुक्रिया

वॉशिंगटन, 17 मई (एजेंसियां)। व्हाइट हाउस की प्रेस सचिव कैरोलिन लेविट ने भारत-पाकिस्तान युद्ध विराम कराने के लिए राष्ट्रपति ट्रंप को श्रेय दिया और एक कश्मीरी वेटर की कृतज्ञता का हवाला दिया, हालांकि भारतीय अधिकारियों ने इसमें अमेरिकी भागीदारी से इनकार किया था।

सोशल मीडिया मंच एक्स पर एक पोस्ट में उन्होंने लिखा- दोहा में वेटर के रूप में काम करने वाले एक कश्मीरी व्यक्ति ने भारत और पाकिस्तान के बीच हाल ही में हुए सैन्य संघर्ष को कम करने में अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप की भूमिका के लिए व्यक्तिगत रूप से उन्हें धन्यवाद दिया है।

'राष्ट्रपति ट्रंप को नहीं मिल रहा पर्याप्त श्रेय'

लेविट के अनुसार, वेटर ने कहा कि उसे अभी-अभी सूचित

किया गया था कि वह युद्ध विराम के बाद घर लौट सकता है, जो उसका मानना है कि अमेरिकी हस्तक्षेप के कारण संभव हुआ है। 'उसने कहा कि राष्ट्रपति ट्रंप को वास्तव में परमाणु युद्ध को रोकने के लिए पर्याप्त श्रेय नहीं मिल रहा है और वे सही हैं।

पहलगाम आतंकी हमले के बाद बिगड़े हालात

बता दें कि, 22 अप्रैल को पहलगाम में हुए आतंकवादी हमले के बाद बढ़े तनाव के बाद भारत और पाकिस्तान के बीच सैन्य संघर्ष इस महीने की शुरुआत में चार दिनों तक सीमा पार से ड्रोन और मिसाइल हमलों के रूप में जारी रहा। 10 मई को दोनों देशों ने संघर्ष विराम के लिए सहमति जताई। इसे लेकर ट्रंप ने सार्वजनिक रूप से दावा किया है कि अमेरिका ने संघर्ष विराम की मध्यस्थता की, लेकिन भारतीय सरकारी सूत्रों ने इस दावे को खारिज कर दिया है। नई दिल्ली ने स्पष्ट किया कि संघर्ष विराम दोनों देशों के सैन्य संचालन महानिदेशकों के बीच सीधे समझौते के परिणामस्वरूप हुआ, जिसमें किसी तीसरे पक्ष की भागीदारी नहीं थी।

हालांकि, लेविट ने इस घटनाक्रम को ट्रंप की कूटनीतिक जीत के रूप में पेश किया। उन्होंने कहा, 'राष्ट्रपति ट्रंप को दुनिया भर में बहुत सारे संघर्ष विरासत में मिले हैं और वे एक-एक करके उनसे निपट रहे हैं। मध्य पूर्व की इस ऐतिहासिक यात्रा ने इस क्षेत्र में अमेरिकी विदेश नीति में एक महत्वपूर्ण मोड़ को चिह्नित किया है जो अंततः मध्य पूर्व के स्वर्ण युग की शुरुआत करेगा!

शक्ति के माध्यम से शांति बहाल हो रही है।'

झारखंड में विदेश में बनी शराब सस्ती मिलेगी

मॉडल दुकानों में होगी बैठ कर पीने की सुविधा, जुलाई से नई पॉलिसी के तहत बिकेगी शराब

रांची, 17 मई (एजेंसियां)। झारखंड में अब विदेशों में बनी शराब सस्ती मिलेगी। जबकि राज्य में बनी और यहां बिकने वाली पॉपुलर ब्रांड की शराब महंगी हो जाएगी। नई उत्पाद नीति में शराब पर लगने वाली वैट में कटौती की गई है। इसी वजह से ऐसा हो रहा है। इसके अतिरिक्त नई शराब नीति दुकानों से न केवल शराब खरीदने की सुविधा दे रहा है बल्कि अब दुकानों में ही बैठ कर पीने की भी व्यवस्था रहेगी। ऐसा उन दुकानों में होगा जिसे मॉडल शराब दुकान के नाम से खोला जाएगा। नगर निगम व परिषद क्षेत्र में विदेशी शराब की ऑफ दुकान को मॉडल शॉप में अपग्रेड किया जाएगा। इसके लिए तय शर्तों के अनुसार जगह जरूरी होगी।

पीएम शहबाज बोले- भारत ने बैलिस्टिक मिसाइल से हमला किया

आर्मी चीफ ने फोन कर बताया, नूरखान एयरबेस को निशाना बनाया

इस्लामाबाद, 17 मई (एजेंसियां)। पाकिस्तान के पीएम शहबाज शरीफ ने शुक्रवार को एक कार्यक्रम में कहा कि 9 और 10 मई की रात भारत ने पाकिस्तान पर बैलिस्टिक मिसाइल से हमला किया था। उन्होंने कहा कि आर्मी चीफ आसिम मुनीर ने उन्हें रात 2:30 बजे फोन कर बताया था कि भारत ने नूर खान बेस और बाकी जगहों पर बैलिस्टिक मिसाइल दागी हैं।

शरीफ ने दावा किया कि पाकिस्तान की वायुसेना ने देसी तकनीक और आधुनिक उपकरणों का इस्तेमाल कर देश को बचाया। चीन से मिले जेट्स की आधुनिक टेक्नोलॉजी का भी इस्तेमाल किया गया।

इससे पहले शरीफ ने भारत के

साथ बातचीत की इच्छा भी जताई थी। उन्होंने कहा कि पाकिस्तान, भारत के साथ शांति के लिए बातचीत करने के लिए तैयार है, लेकिन इसमें कश्मीर मुद्दे को शामिल करना होगा।

पाकिस्तान के विदेश मंत्री इशाक डार शुक्रवार को संसद में टेलीग्राफ अखबार का एक कटआउट दिखाया। इसमें उन्होंने दावा किया कि दुनिया ने पाकिस्तानी एयरफोर्स की ताकत का लोहा माना है और उसे 'आसमान का राजा' करार दिया है। इशाक डार ने गर्व से कहा कि ऐसा वे नहीं बल्कि इंटरनेशनल मीडिया कह रहा है। हालांकि उनके इस झूठ की पोल पाकिस्तानी अखबार डॉन ने खोल दी। अखबार ने इसे फर्जी करार दिया। दरअसल डार ने ब्रिटिश अखबार द टेलीग्राफ की एक फेक एआई तस्वीर का हवाला देकर पाकिस्तानी एयरफोर्स की तारीफ की थी। इससे पहले पाकिस्तानी पीएम शहबाज शरीफ ने बुधवार को पंजाब प्रांत के सियालकोट पसरूर छावनी में पाकिस्तानी सैनिकों को संबोधित किया था। इस दौरान उन्होंने कहा कि हमने भारत के अहंकार को धूल में मिला दिया है।

नेपाल फोरम में चीनी नेता ने माउंट एवरेस्ट को कहा चोमुलुंगमा

पीएम ओली साधे रहे चुप्पी

काठमांडू, 17 मई (एजेंसियां)। नेपाल में चल रहे सागरमाथा संवाद कार्यक्रम में चीनी नेता ने माउंट एवरेस्ट को चीनी नाम से संबोधित किया। चीन की स्थायी समिति के उपाध्यक्ष शियाओ जी ने कार्यक्रम में अपने संबोधन के दौरान करीब 10 बार माउंट एवरेस्ट को चोमुलुंगमा कहा। इस पर फोरम में मौजूद अन्य देशों के नेताओं ने आपत्ति जताई। जबकि नेपाल के प्रधानमंत्री केपी शर्मा ओली चुप्पी साधे रहे।

नेपाल में चल रहे सागरमाथा संवाद में विभिन्न देशों के प्रतिनिधि भाग ले रहे हैं। इसमें हिमालयी क्षेत्र में बर्फ के तेजी से पिघलने और पारिस्थितिकी तंत्र के

कमजोर होने को लेकर चर्चा की जा रही है। कार्यक्रम के उद्घाटन सत्र में चीनी नेता ने अपने भाषण में माउंट एवरेस्ट को चोमुलुंगमा कहकर संबोधित किया।

जबकि अन्य देशों के नेताओं ने माउंट एवरेस्ट को अंग्रेजी और नेपाली नाम लेकर ही संबोधित किया। जब चीनी नेता ने माउंट एवरेस्ट का नया नाम लिया तो कार्यक्रम में नेपाल के प्रधानमंत्री केपी शर्मा ओली, विदेश मंत्री आरजू राणा देउबा, वित्त मंत्री बिष्णु पौडेल समेत 200 अंतरराष्ट्रीय प्रतिभागी मौजूद थे।

चीनी नेता के इस बयान ने नए विवाद को जन्म दे दिया है। इस मामले में भारतीय विदेश मंत्रालय के अधिकारी ने कहा कि मुझे मामले की जानकारी नहीं है। काठमांडू में हो रहे कार्यक्रम में बांग्लादेश, भूटान, नेपाल, यूके, यूएई,जापान, भारत, कतर, कजाखस्तान, ब्राजील, मिस्र, ओमान और पाकिस्तान का प्रतिनिधिमंडल भाग ले रहा है। इसके अलावा यूएन, विश्व बैंक, एडीबी, सार्क, बिम्सटेक और आईसीआईएमओडी के प्रतिनिधि में भी शामिल हो रहे हैं।

सागरमाथा संवाद कार्यक्रम को भारत के पर्यावरण मंत्री भूपेंद्र यादव ने भी संबोधित किया था। उन्होंने कहा था कि भारत पूरी तत्परता से जलवायु कार्रवाई में अपना योगदान दे रहा है। 'विकसित देशों ने जलवायु वित्त, तकनीक और जलवायु परिवर्तन से प्रभावित देशों में क्षमता निर्माण का वादा किया था, लेकिन अब वे इससे मुकर रहे हैं।

ट्रंप की धमकियों पर बोले ईरानी राष्ट्रपति- अमेरिका से परमाणु बातचीत जारी रहेगी

तेहरान, 17 मई (एजेंसियां)। ईरान के राष्ट्रपति मसूद पेजेश्कियन ने शनिवार को साफ किया कि उनका देश अमेरिका के साथ परमाणु कार्यक्रम को लेकर बातचीत जारी रखेगा, लेकिन धमकियों के कारण अपने अधिकारों से पीछे नहीं हटेगा। राष्ट्रपति ने नौसेना अधिकारियों को संबोधित करते हुए कहा, 'हम बातचीत कर रहे हैं और करते रहेंगे। हमें युद्ध नहीं चाहिए, लेकिन हम किसी धमकी से डरते भी नहीं हैं।' उन्होंने कहा कि, 'अगर कोई ये सोचता है कि हमें डराकर हमारे वैधानिक और मानव अधिकार छीन लिए जाएंगे, तो ऐसा नहीं होगा। हम वैज्ञानिक,

नहीं हटेंगे पीछे

सैन्य और परमाणु क्षेत्रों में अपनी गरिमा से पीछे नहीं हटेंगे।'

कहां तक पहुंची अमेरिका-ईरान की बातचीत?

राष्ट्रपति ने बताया कि बातचीत अब विशेषज्ञ स्तर तक पहुंच चुकी है, यानी दोनों पक्ष अब समझौते की तकनीकी बारीकियों पर काम कर रहे हैं। लेकिन सबसे बड़ा अड़चन ईरान की तरफ से यूरेनियम संवर्धन का मुद्दा है। ईरान का कहना है कि यह उसका अधिकार है, जबकि अमेरिका, खासकर ट्रंप प्रशासन, इसे पूरी तरह रोकना चाहता है।

ट्रंप की धमकी और ईरान की प्रतिक्रिया

अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप ने एक बार फिर ईरान के परमाणु ठिकानों पर हमले की धमकी दी है अगर समझौता नहीं हुआ। इस पर ईरानी अधिकारियों ने चेतावनी दी है कि अगर उन पर हमला किया गया तो वे अपने परमाणु कार्यक्रम को हथियार बनाने की दिशा में ले जा सकते हैं। हालांकि अमेरिकी खुफिया एजेंसियों का मानना है कि ईरान फिलहाल परमाणु बम बनाने की दिशा में सक्रिय रूप से काम नहीं कर रहा है, लेकिन उसके पास ऐसा करने की क्षमता लगभग तैयार है।

पहला देवनारायण कॉरिडोर बनेगा

5 तीर्थस्थलों से जोड़ा जाएगा; केंद्र से 48.73 करोड़ रुपए मंजूर

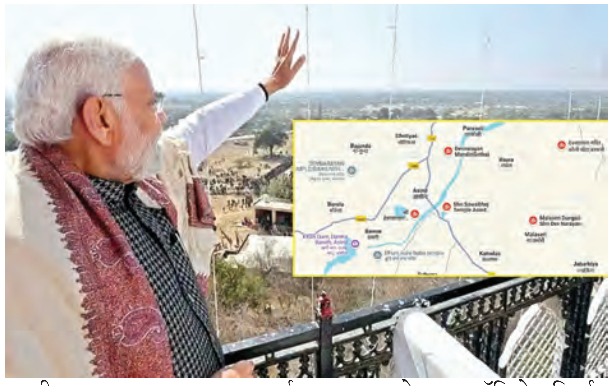

भीलवाड़ा, 17 मई (एजेंसियां)। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी राजस्थान विधानसभा चुनाव से पहले आसींद के मालासेरी आए थे। पीएम भगवान देवनारायण की 1111वीं दिव्य जयंती पर शामिल हुए थे। उस वक्त धार्मिक टूरिस्ट सर्किट को लेकर चर्चा थी। जिसके बाद केंद्र सरकार ने अब कॉरिडोर निर्माण की घोषणा की है। केंद्र सरकार 'प्रसाद योजना' के तहत विकास करेगी।

मालासेरी डूंगरी सहित 5 तीर्थस्थलों के लिए 48.73 करोड़ स्वीकृत किए गए है। इसमें मालासेरी डूंगरी, साडूमाता की बावड़ी, सवाईभोज मंदिर, गढ़ गोठा और बरनागर का विकास होगा। भीलवाड़ा कलेक्टर ने पांचों जगह 11 हैक्टेयर जमीन चिह्नित कर भिजवाया है। सभास्थल, सभा मंच, 5 प्रवेश द्वार, पार्किंग, भोजनशाला आदि का निर्माण होगा।

देवनारायण कॉरिडोर से जुड़ेंगे 5 तीर्थस्थल

उपखंड मुख्यालय से 9 किलोमीटर दूर मालासेरी डूंगरी भगवान देवनारायण की जन्मस्थली है। यहां से 8 किमी दूर गुर्जर समाज का अंतरराष्ट्रीय तीर्थ स्थल सवाई भोज है। सवाईभोज से 10 किमी दूर बरनागर है। बरनागर से भगवान देवनारायण बैकुंठ धाम गए थे। वहीं, 12 किमी दूर गढ़ गोठा है। मालासेरी डूंगरी से 7 किमी दूर साडू माता की बावड़ी है।

अब हर जिंदगी की होगी कद्र!

विमंदित और लावारिसों को भी सरकारी अस्पतालों में मिलेगा मुफ्त इलाज

जयपुर, 17 मई (एजेंसियां)। अब राजस्थान के सरकारी मेडिकल कॉलेजों से जुड़े अस्पतालों में असहाय, मानसिक रूप से कमजोर, लावारिस और असक्षम लोगों को इलाज के लिए पहचान पत्र नहीं दिखाना होगा। अगर उनके पास कोई पहचान पत्र नहीं है, तो भी उन्हें इलाज से इनकार नहीं किया जाएगा। ऐसे मरीजों को अब अस्पतालों में मुफ्त इलाज और दवाइयां मिल सकेंगी। यह फैसला सामाजिक न्याय और अधिकारिता विभाग की पहल पर लिया गया है, और इसके बाद चिकित्सा शिक्षा विभाग ने आदेश जारी किए हैं। प्रदेश में हजारों ऐसे लोग हैं जो असहाय, विमंदित, लाचार या असक्षम हैं। कई लोग किसी एनजीओ के आश्रय स्थलों में रहते हैं या किसी तरह अपना जीवन गुजार रहे हैं। इनके पास आधार, जनाधार या कोई पहचान पत्र नहीं होता। जब ये अस्पतालों में इलाज के लिए जाते हैं, तो पहचान पत्र न होने की वजह से उन्हें मुफ्त इलाज और दवाइयां नहीं मिलती थीं। इसी समस्या को देखते हुए अब सरकार ने यह नई व्यवस्था लागू की है, जिससे बिना पहचान पत्र के भी इन जरूरतमंद लोगों को इलाज मिल सके। चिकित्सा शिक्षा विभाग के सचिव अम्बरीश कुमार ने जो आदेश जारी किए हैं, उसमें कहा गया है कि अगर कोई संस्था किसी असहाय मरीज को अस्पताल लेकर आती है, तो उसे अपने लैटरहेड पर सिर्फ इतना लिखना होगा कि मरीज असहाय है और उसके पास कोई पहचान पत्र नहीं है। अगर कोई मरीज खुद आता है और कहता है कि उसके पास पहचान पत्र नहीं है, तो भी उसे प्राथमिकता के साथ पूरा इलाज दिया जाएगा।

एसआई भर्ती पर बड़ा फैसला जल्द

पीएम के बीकानेर दौरे से पहले सब कमेटी की बैठक

जयपुर, 17 मई (एजेंसियां)। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी 22 मई को राजस्थान के बीकानेर आने वाले हैं। उनके दौरे की तैयारियां चल रही हैं। लेकिन इसी बीच एसआई भर्ती पेपर लीक मामले में सरकार बड़ा फैसला लेने वाली है। इस मामले पर फैसला करने के लिए बनी कैबिनेट सब कमेटी की बैठक अब 21 मई की बजाय 20 मई को बुला ली गई है।

एसआई भर्ती 2021 के पेपर लीक मामले में गुरुवार को हाईकोर्ट ने सरकार को कड़ी फटकार लगाई थी। जस्टिस समीर जैन ने कहा कि अगर इस मामले में जल्दी फैसला नहीं हुआ, तो सरकार को इसके नतीजे भुगतने पड़ सकते हैं। सुनवाई 26 मई को होगी।

राज्य सरकार के अतिरिक्त महाधिवक्ता विज्ञान शाह ने कोर्ट में बताया कि 13 मई को कैबिनेट सब कमेटी की बैठक बुलाई गई थी, लेकिन 'ऑपरेशन सिंदूर' के कारण कई सदस्य शामिल नहीं हो सके। इसलिए सरकार ने 21 मई को बैठक तय की थी, जिसे अब 20 मई कर दिया गया है।

पिछली सुनवाई में सरकार ने कहा था कि 13 मई को कैबिनेट सब कमेटी की बैठक होगी, लेकिन उस दिन केवल अध्यक्ष जोगाराम पटेल और सदस्य मंजू वाघमार ही मौजूद थे, बाकी सदस्य नहीं आ पाए। इसलिए अगली बैठक 20 मई को सचिवालय में रखी गई है। हाईकोर्ट ने 15 मई तक इस मामले पर फैसला करने की डेडलाइन भी दी हुई है।

परमाणु बिजलीघर के बाद अचानक आवासीय कॉलोनियों की सुरक्षा भी बढ़ाई

कोटा, 17 मई (एजेंसियां)। पहलगाम में आतंकी हमले और ऑपरेशन सिंदूर के बाद कोटा के रावतभाटा क्षेत्र में सुरक्षा व्यवस्था को चाक चौबंद किया जा रहा है। राजस्थान परमाणु बिजलीघर, भारी पानी संयंत्र और न्यूक्लियर यूल कांपलेक्स सहित राणा प्रताप सागर बांध और राणा प्रताप सागर पन बिजली घर की सुरक्षा व्यवस्था को और अधिक सुदृढ़ किया गया है।

थाना अधिकारी रावतभाटा रायसल सिंह शेखावत ने बताया कि राजस्थान परमाणु बिजलीघर में सुरक्षा व्यवस्था में एटीएस, एसटीएफ, केंद्रीय औद्योगिक सुरक्षा बल और रावतभाटा पुलिस की संयुक्त टीम ने सुरक्षा व्यवस्था का निरीक्षण किया। नाकाबंदी की जा रही है और बाहरी वाहनों की तलाशी ली जा रही है।

परमाणु विद्युत परियोजना की सातवीं आठवीं इकाई में कार्यरत श्रमिकों के चरित्र सत्यापन के लिए फार्म भरवाए गए और उन्हें उनके घरों के थाना क्षेत्र में जांच के लिए भेजा गया। परमाणु बिजलीघर की आवासीय कॉलोनी में भी सुरक्षा व्यवस्था को बढ़ा दिया गया है। आवासीय कॉलोनी में बाहरी व्यक्तियों का प्रवेश बंद कर दिया है। आवासीय कॉलोनी के प्रवेश द्वारों को अब बंद रखा जा रहा है। अंदर जाने वाले व्यक्तियों के आधार कार्ड देखे जा रहे हैं और कहां किस से मिलने जा रहे हैं। इसकी भी जानकारी ली जा रही है। भारी पानी संयंत्र आवासीय कॉलोनी में भी बाहरी व्यक्तियों को नहीं जाने दिया जा रहा है।

राजस्थान परमाणु बिजलीघर की इकाई 1 से 8 में बाहरी वाहनों का प्रवेश बंद कर दिया गया है। इसके साथ ही भारी पानी संयंत्र और न्यूक्लियर यूल कांप्लेक्स में भी बाहरी वाहनों को नहीं जाने दिया जा रहा।

रावतभाटा शहर 'ए' कैटेगरी में है। परमाणु बिजली घर, भारी पानी संयंत्र न्यूक्लियर यूल कांपलेक्स, राणा प्रताप सागर बांध, राणा प्रताप सागर पनबिजली घर की सुरक्षा व्यवस्था का घेरा मजबूत किया जा रहा है। संदिग्ध व्यक्तियों की जांच की जा रही है। अवैध बांग्लादेशियों की खोज की जा रही है।

पूर्व मुख्यमंत्री अशोक गहलोत ने उठाए पहलगाम हमले पर सवाल, सरकार से मांगा जवाब

जयपुर, 17 मई (एजेंसियां)। कांग्रेस के वरिष्ठ नेता और राजस्थान के पूर्व मुख्यमंत्री अशोक गहलोत ने शनिवार को केंद्र सरकार से पहलगाम आतंकी हमले को लेकर गंभीर सवाल उठाए हैं। गहलोत ने सोशल मीडिया मंच 'एक्स' पर एक पोस्ट साझा करते हुए हमले के करीब एक माह बीत जाने के बावजूद जांच और कार्रवाई में हुई कथित देरी को लेकर चिंता जताई।

गहलोत ने लिखा कि पहलगाम हमले को अब लगभग एक महीना होने जा रहा है, परन्तु देशवासियों के मन में अब भी दो सवाल हैं। पहला सवाल ये कि अभी तक हमला करने वाले आतंकवादी क्यों नहीं पकड़े गए? क्या सीजफायर की शर्तों में पाकिस्तान से आतंकियों को भारत को सौंपने की शर्त नहीं रखी गई? जब सरकार ने माना कि पहलगाम में चूक के कारण आतंकी हमला हुआ, तो अभी तक चूक के लिए जिम्मेदार किन-किन लोगों पर क्या-क्या कार्रवाई हुई?

वहीं उन्होंने 14 फरवरी 2019 को हुए पुलवामा हमले का भी उल्लेख करते हुए कहा कि पाँच साल बीतने के बावजूद यह स्पष्ट नहीं हो सका कि उस हमले में हुई चूक के लिए कौन जिम्मेदार था और सैकड़ों किलो आरडीएक्स आतंकियों तक कैसे पहुँचा। गहलोत ने केंद्र सरकार से मांग की है कि वह पहलगाम और पुलवामा दोनों मामलों में अब तक हुई जांच और कार्रवाई की स्थिति सार्वजनिक करे, ताकि जनता का सरकार और सुरक्षा व्यवस्था पर विश्वास बना रहे। अब तक सरकार की ओर से अशोक गहलोत के इन सवालों पर कोई आधिकारिक प्रतिक्रिया नहीं दी गई है।

माउंट आबू में भालुओं का मूवमेंट

आबादी क्षेत्र अधर देवी मंदिर के पास डाला डेरा

सिरोही, 17 मई (एजेंसियां)। हिल स्टेशन माउंटआबू में गुरुवार देर शाम को एक साथ छह भालुओं का मूवमेंट नजर आया है। इस दौरान ये भालू करीब 15 मिनट तक अधरदेवी मंदिर के पास पहाड़ियों पर अठखेलियां कर रहे हैं। इसके बाद फिर जंगल की ओर चले गए। वैसे तो माउंटआबू में भालुओं का आबादी क्षेत्र में आए दिन मूवमेंट होता रहता है, लेकिन गुरुवार देर शाम को अधरदेवी मंदिर के पास पहाड़ियों पर एक दो नहीं एक साथ करीब छह भालू बैखौफ होकर घूमते हुए नजर आए। इस दौरान एक मादा भालू अपने दो बच्चों के साथ अठखेलियां भी कर रही थीं। इसी समय जंगल की ओर से चार भालुओं का एक ओर झुंड वहां आ गया। आसपास के क्षेत्र में घूमने और धमाचौकड़ी के बाद ये भालू फिर जंगल की ओर चले गए।

भोजन की तलाश में आबादी क्षेत्रों के आते हैं भालू

इस मामले में वन्यजीव प्रेमियों का कहना है वर्तमान में पड़ रही भीषण गर्मी से माउंटआबू भी अछूता नहीं है। इस समय जंगल में भालू के प्राकृतिक भोजन के स्रोत, जैसे कि पेड़, पौधे और पानी कम हो जाता हैं। इसलिए, वे आबादी वाले क्षेत्रों में भोजन के स्रोतों की कूड़ेदान, होटल और रेस्टोरेंट के आसपास तलाश करते हैं। इससे भालुओं का आबादी क्षेत्रों में विचरण लगातार बढ़ता जा रहा है। इसके साथ ही बीते सालों में माउंटआबू में भालुओं की आबादी भी बढ़ रही है।

जिम्मेदार अधिकारियों की लापरवाही भी है जिम्मेदार

माउंटआबू में काफी बड़ा वन क्षेत्र है। इसकी देखरेख का जिम्मा वन विभाग के पास है, लेकिन हालत यह है कि विभागीय अधिकारी वन्यजीवों के पीने के लिए बनाए गए पानी के हौदियों और टंकियों को भी भरवाने के मामले में ओपचारिक खानापूर्ति करने में लगे हुए है। इसके साथ ही जगल में गर्मियों के दौरान हर बार आग लगने की घटनाएं होती है इसमें वन क्षेत्र एवं वन्य जीवों को खासा नुकसान होते है। ऐसे में ये आबादी क्षेत्रों की ओर पलायन करते हैं।

प्रतापगढ़ में दर्दनाक हादसा

तेज रफ्तार ट्रेलर ने बाइक में मारी टक्कर, 2 युवकों की मौत

प्रतापगढ़, 17 मई (एजेंसियां)। प्रतापगढ़ के पीपलखूंट थाना क्षेत्र में एक दर्दनाक सड़क हादसे में 2 युवकों की मौत हो गई। यह भीषण टक्कर नेशनल हाईवे-56 पर लांबा डाबरा के पास कटारों का खेड़ा के समीप हुई, जहां एक तेज रफ्तार ट्रेलर ने सामने से आ रही बाइक को टक्कर मार दी। हादसे में गोरधन पुत्र नारायणलाल, निवासी हरो ग्राम पंचायत कुपड़ा की मौके पर ही मौत हो गई। जबकि बाइक पर उसके साथ सवार पंकज 15 वर्ष पुत्र नंदलाल, निवासी कटारों का खेड़ा, गंभीर रूप से घायल हो गया। पंकज को तुरंत जिला अस्पताल ले जाया जा रहा था, लेकिन रास्ते में ही उसने दम तोड़ दिया। पुलिस ने बताया कि गोरधन कल देर शाम अकेले घर से निकला था। पीपलखूंट में पंकज से मुलाकात के बाद दोनों एक रिश्तेदार के घर लांबा डाबरा जा रहे थे। इसी दौरान यह हादसा हो गया। प्रत्यक्षदर्शियों के अनुसार, ट्रेलर की रफ्तार बहुत अधिक थी। चालक ने संतुलन खोते हुए बाइक को सीधे टक्कर मार दी। हादसे की सूचना मिलते ही पीपलखूंट पुलिस मौके पर पहुंची और दोनों शवों को जिला अस्पताल की मोर्चरी में भिजवाया।

पीपलखूंट पुलिस ने ट्रेलर को जब्त कर थाने में खड़ा कर दिया गया है, जबकि चालक मौके से फरार हो गया। पुलिस ने मामला दर्ज कर जांच शुरू कर दी है और चालक की तलाश जारी है। वही एक और हादसे में पीपलखूंट क्षेत्र के माही पुल पर एक भीषण सड़क हादसे में 2 बाइक सवार गंभीर रूप से घायल हो गए। यह दुर्घटना कल रात नेशनल हाईवे-56 पर उस समय हुई जब दो बाइकों की आमने-सामने भिड़ंत हो गई।

अवैध संबंधों के चलते पत्नी ने प्रेमी से इंजीनियर पति की हत्या करा दी

खुद ही रिपोर्ट दर्ज कराने पहुंची थाने

चित्तौडगढ़, 17 मई (एजेंसियां)। राजस्थान के चित्तौडगढ़ जिले की निम्बाहेड़ा कोतवाली थाना पुलिस ने आरयूडीआइपी के इंजीनियर की हत्या के मामले का दूसरे ही दिन खुलासा करते हुए बैंक के कैशियर को गिरफ्तार किया है। आरोपी मृतक की पत्नी का प्रेमी है। मृतक की पत्नी भी हत्या की योजना बनाने में शामिल बताई गई है।

पुलिस अधीक्षक सुधीर जोशी ने बताया कि गुरुवार को प्रार्थी भीलवाड़ा जिले के आसींद थानान्तर्गत दांतड़ा बांध निवासी लादूलाल बलाई ने निम्बाहेड़ा कोतवाली थाने में रिपोर्ट दी कि उनका पुत्र मोतीलाल आरयूडीआइपी में इंजीनियर है और पिछले ढ़ाई साल से बहू सोनिया के साथ निम्बाहेड़ा में रह रहा है। 14 मई को सोनिया ने प्रार्थी को फोन कर बताया कि मोतीलाल फोन नहीं उठा रहे है। सूचना पर प्रार्थी व उसका पुत्र मिश्रीलाल व अन्य रिश्तेदार निम्बाहेड़ा पहुंचे। मोतीलाल का शव एक कुएं में मिला। पुलिस ने शव बाहर निकलवाया। उसके सिर के पीछे गहरा घाव, पीठ पर चोटों के निशान व कोहनी पर कट लगा हुआ पाया गया। पुलिस ने हत्या का प्रकरण दर्ज कर टीम का गठन किया, जिसमें कोतवाली व निम्बाहेड़ा सदर थाने के पुलिसकर्मियों सहित साइबर सेल के हैडकांस्टेबल राजकुमार सोनी, रामावतार मीना व रामनरेश को भी शामिल किया गया। पुलिस ने मृतक के मोबाइल व अन्य संदिग्ध नंबरों की कॉल डिटेल निकलवाकर भौतिक साक्ष्यों के आधार पर इंडियन बैंक के कैशियर करौली जिले के श्रीमहावीरजी थानान्तर्गत दानलपुर निवासी वीरसिंह (32) पुत्र करनसिंह मीणा को डिटेन कर पूछताछ की तो उसने मोतीलाल की हत्या करना स्वीकार कर लिया।

युवक का अपहरण कर ले गए बदमाश

कपड़े उतरवा कर बेरहमी से पीटा

जोधपुर, 17 मई (एजेंसियां)। राजस्थान के जोधपुर जिले में हैरान कर देने वाला मामला सामने आया है। यहां कुछ बदमाशों ने एक युवक का अपहरण कर लिया और फिर सुनसान जगह ले जाकर नग्न कर वीडियो बनाया। इतना ही नहीं, पत्नी व बच्चों को भी जान से मारने की धमकियां दी गईं। पुलिस के अनुसार सालावास निवासी श्यामलाल सरगरा निवासी श्यामलाल सरगरा ने अशोक पुत्र सूरज कुमार और अन्य के खिलाफ एफआइआर दर्ज कराई है। आरोप है कि नकाबपोश आरोपी जोजरी नदी के पास और उसका जबरन बाइक पर अपहरण कर ले गए। यह पूरी घटना सीसीटीवी में कैद हो गई। सुनसान जगह ले जाने के बाद आरोपियों ने उसके साथ मारपीट की। उसके कपड़े उतरवा लिए। इतना ही नहीं, आरोपियों ने नग्न हालत में उसका वीडियो बना लिया और किसी को न बताने की जान से मारने की धमकियां दी। साथ ही पत्नी व बच्चों को भी जान से मारने की धमकियां देकर सभी चले गए।

दिन के साथ रात का पारा भी चढ़ा

अधिकतम तापमान 46 डिग्री, कई इलाकों में तेज लू का प्रकोप

जयपुर, 17 मई (एजेंसियां)। राजस्थान में तेज गर्मी का सिलसिला जारी है। दिन के साथ-साथ अब रात का तापमान भी तेजी से बढ़ रहा है। दिन में सबसे ज्यादा गर्मी गंगानगर में रही, जहां तापमान 45.9 डिग्री पहुंच गया। वहीं रात को फलौदी में न्यूनतम तापमान 32 डिग्री से ऊपर रहा, जो सामान्य से लगभग 7 डिग्री ज्यादा है। मौसम विभाग ने चेतावनी दी है कि आने वाले कुछ दिनों में प्रदेश में गर्मी और बढ़ेगी।

राजस्थान में गर्मी बहुत तेज हो गई है। यहां का तापमान लगभग 46 डिग्री सेल्सियस तक पहुंच गया है। अप्रैल के अंत में तो पारा 47 डिग्री तक भी पहुंचा था। मौसम विभाग ने बताया है कि आने वाले कुछ दिनों में तापमान में और 2 डिग्री तक बढ़ोतरी हो सकती है। दिन के साथ-साथ रातें भी बहुत गर्म हो रही हैं। कई जिलों में रात का तापमान भी 30 डिग्री से ऊपर चला गया है। सबसे ज्यादा रात का तापमान फलौदी में 32.6 डिग्री दर्ज किया गया है। इसके अलावा पांच और शहरों में भी रात का तापमान 30 डिग्री से ज्यादा रहा।

पिछले 24 घंटों में गंगानगर राजस्थान का सबसे गर्म शहर रहा, जहां तापमान 45.9 डिग्री रिकॉर्ड किया गया। ज्यादातर शहरों में दिन का तापमान 42 से 44 डिग्री के बीच रहा। मौसम विभाग ने बताया कि अगले तीन दिनों में जोधपुर और बीकानेर जैसे सीमावर्ती इलाकों में धूल भरी हवाएं चलेंगी और तापमान 2 डिग्री तक बढ़ सकता है। इन इलाकों में तापमान 45 से 46 डिग्री के करीब रह सकता है। इस दौरान हीट वेव का असर भी रहेगा। राज्य के उत्तरी हिस्सों में 19 और 20 मई को गरज-चमक के साथ हल्की बारिश हो सकती है। बीकानेर और गंगानगर में हीट वेव की चेतावनी भी जारी की गई है।

शराब ठेके के सेल्समैन पर फायरिंग के दो आरोपी गिरफ्तार, अवैध हथियार बरामद

करौली, 17 मई (एजेंसियां)। जिले के नादौती क्षेत्र स्थित गढ़मौरा थाना क्षेत्र में शराब ठेके पर कार्यरत सेल्समैन पर जानलेवा फायरिंग करने वाले दो बदमाशों को पुलिस ने गिरफ्तार कर लिया है। पुलिस ने आरोपियों के कब्जे से एक अवैध देशी कट्टा 12 बोर, एक खाली कारतूस और वारदात में प्रयुक्त मोटरसाइकिल बरामद की है। गढ़मौरा थानाधिकारी रामनिवास ने बताया कि 12 मई 2025 की शाम को गढ़मौरा में स्थित शराब ठेके पर तैनात सेल्समैन पर दो अज्ञात बदमाशों ने जान से मारने की नीयत से फायरिंग कर दी थी और घटना को अंजाम देने के बाद मौके से फरार हो गए थे। इस घटना को लेकर ठेकेदार केदार सिंह गुर्जर पुत्र रघुवीर सिंह गुर्जर, उम्र 28 वर्ष, निवासी खुर्द, थाना नादौती ने गढ़मौरा थाने में मामला दर्ज करवाया था। पुलिस ने मामला दर्ज कर जांच शुरू की और गंभीरता को देखते हुए टीम गठित की गई। मुखबिर से मिली सूचना के आधार पर पुलिस ने त्वरित कार्रवाई करते हुए दो आरोपियों पिन्टूराम मीना पुत्र कूलराम मीना, उम्र 24 वर्ष, निवासी रायसाना, थाना गढ़मौरा, तथा धर्मवीर उर्फ गोलू पुत्र रामसिंह गुर्जर, उम्र 20 वर्ष, निवासी सेवसार, थाना गढ़मौरा को पकड़ा है।

खेलो इंडिया नेशनल यूथ गेम्स 2025, राजस्थान ने जीता बास्केटबॉल में रजत पदक

जैसलमेर, 17 मई (एजेंसियां)। भारत सरकार के युवा मामलात एवं खेल मंत्रालय तथा भारतीय खेल प्राधिकरण के संयुक्त तत्वावधान में आयोजित खेलो इंडिया नेशनल यूथ गेम्स 2025 का आयोजन 10 मई से 15 मई 2025 तक पटना, बिहार में बड़े उत्साह और गरिमा के साथ संपन्न हुआ। इस राष्ट्रीय स्तर की प्रतियोगिता में देशभर से विभिन्न राज्यों की प्रतिभाशाली युवा टीमें हिस्सा लेने पहुंचीं, जिनमें से प्रत्येक का लक्ष्य था श्रेष्ठता की ओर कदम बढ़ाना और अपने राज्य को गौरव दिलाना।

इसी क्रम में राजस्थान की बास्केटबॉल टीम ने अपने बेहतरीन खेल प्रदर्शन के बलबूते न केवल दर्शकों का दिल जीता, बल्कि रजत पदक अपने नाम करते हुए प्रदेश के लिए गर्व का क्षण भी प्रदान किया। सेमीफाइनल मुकाबले में राजस्थान की टीम ने जबरदस्त खेल कौशल दिखाते हुए दिल्ली की मजबूत टीम को 80-64 के बड़े अंतर से पराजित किया। इस जीत ने टीम को प्रतियोगिता के फाइनल में प्रवेश दिलाया और राज्य को पदक की उम्मीद से भर दिया।

फाइनल मुकाबला एक बेहद संघर्षपूर्ण और रोमांच से भरपूर रहा, जहां राजस्थान और उत्तर प्रदेश की टीमें आमने-सामने थीं। दोनों टीमों ने हर एक अंक के लिए जबरदस्त प्रतिस्पर्धा की। हालांकि अंतिम क्षणों में उत्तर प्रदेश की टीम ने बढ़त बनाते हुए मुकाबला 68-57 के अंतर से जीत लिया। इस प्रकार राजस्थान को रजत पदक से संतोष करना पड़ा, लेकिन टीम का यह सफर पूरे प्रदेश के लिए गर्व और प्रेरणा का स्रोत बन गया। राजस्थान टीम के मुख्य प्रशिक्षक एवं जिला खेल अधिकारी राकेश बिश्नोई ने बताया कि खिलाड़ियों ने पूरे टूर्नामेंट में अनुशासन, समर्पण और उत्कृष्ट टीम भावना का परिचय दिया। उन्होंने कहा कि सेमीफाइनल में दिल्ली जैसी सशक्त टीम को पराजित करना और फाइनल तक पहुंचना खिलाड़ियों के कठिन प्रशिक्षण और आत्मविश्वास का परिणाम है। फाइनल में भले ही टीम उत्तर प्रदेश से हार गई, लेकिन उनका जुझारूपन और आत्मबल दर्शकों को लंबे समय तक याद रहेगा।

नोबेल पुरस्कार विजेता बनर्जी तेलंगाना राइजिंग सलाहकार बोर्ड में शामिल होंगे

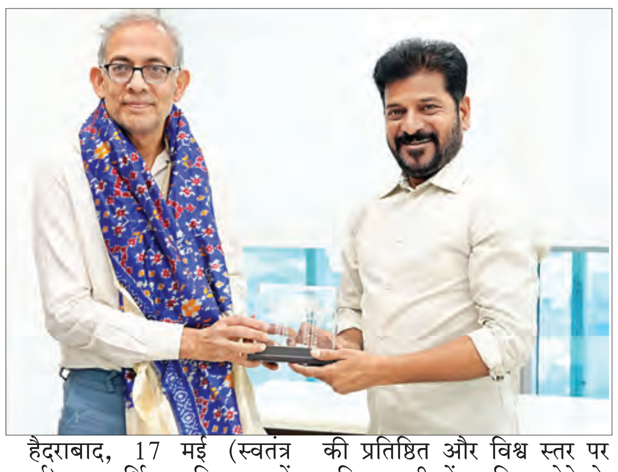

हैदराबाद, 17 मई (स्वतंत्र वार्ता)। आर्थिक विज्ञान में स्वीडिश रिक्सबैंक पुरस्कार (अर्थशास्त्र में नोबेल पुरस्कार) के विजेता, प्रो. अभिजीत बनर्जी ने शनिवार को यहां मुख्यमंत्री रेवंत रेड्डी से मुलाकात की। उन्होंने शहरी विकास, आर्थिक विकास, सार्वजनिक राजस्व में वृद्धि, राजकोषीय अनुशासन, बड़े पैमाने पर कौशल और रोजगार सृजन में कई नवीन विचारों पर चर्चा की। नोबेल पुरस्कार विजेता ने तेलंगाना राइजिंग विजन बोर्ड के सलाहकारों की प्रतिष्ठित और विश्व स्तर पर प्रसिद्ध सूची में शामिल होने के लिए मुख्यमंत्री के निमंत्रण को भी स्वीकार कर लिया। बड़े पैमाने पर रोजगार सृजन पर चर्चा करते हुए, प्रो. बनर्जी ने पारंपरिक कौशल में आधुनिक डिजाइन और अपील, मार्केटिंग, सोशल मीडिया तकनीक के उपयोग के साथ अद्वितीय अल्पकालिक पाठ्यक्रम बनाने की आवश्यकता के बारे में बात की, ताकि पारंपरिक कारीगरों को आधुनिक उद्यमी बनने में मदद मिल सके। उन्होंने मुख्यमंत्री को शिल्प, कला और रचनात्मकता को भारत फ्यूचर सिटी का एक महत्वपूर्ण हिस्सा बनाने का सुझाव भी दिया। चर्चा के दौरान, प्रो. बनर्जी ने पुलिस और नगर निगम विभागों में ट्रांसजेंडरों की भर्ती, ओआरआर के भीतर हैदराबाद कोर शहरी क्षेत्र को एक शुद्ध-सेवा क्षेत्र के रूप में देखने और कौशल और खेल विश्वविद्यालय के निर्माण में मुख्यमंत्री रेवंत रेड्डी के अग्रणी प्रयासों की बहुत सराहना की। मुख्यमंत्री ने सदियों से हैदराबाद के ऐतिहासिक वैश्विक दृष्टिकोण और क्षेत्र में बने उत्पादों की वैश्विक पहुंच को रेखांकित करते हुए वैश्विक जागरूकता पैदा करने की आवश्यकता के बारे में बात की। रेवंत रेड्डी ने महिला स्वयं सहायता समूहों, युवाओं और किसानों के लिए विभिन्न सशक्तिकरण कार्यक्रमों के बारे में भी विस्तार से बताया। चर्चा में आईटी एवं उद्योग मंत्री दुद्दिल्ला श्रीधर बाबू, मुख्य सचिव रामकृष्ण राव, वित्त सचिव संदीप कुमार सुल्तानिया, हैदराबाद के पुलिस आयुक्त सी.वी. आनंद और अन्य अधिकारियों ने भाग लिया।

एसीबी अधिकारियों के नाम पर पैसे मांगने वाले कॉल पर विश्वास न करें : एसीबी

हैदराबाद, 17 मई (स्वतंत्र वार्ता)। भ्रष्टाचार निरोधक ब्यूरो (एसीबी) ने कहा है कि उसके संज्ञान में आया है कि कुछ निजी व्यक्ति एसीबी अधिकारियों के नाम पर फर्जी कॉल करने और लोक सेवकों के खिलाफ मामला दर्ज न करने के लिए पैसे की मांग कर उन्हें धमकाने में संलिप्त हैं।

इस संबंध में एसीबी ने शुक्रवार को एक बयान जारी कर कहा है कि एसीबी के अधिकारी कभी भी लोक सेवकों को फोन करके पैसे नहीं मांगते हैं, न ही उनके खिलाफ मामला दर्ज करने के लिए कहते हैं। बयान में कहा गया है कि सरकारी कर्मचारियों को ऐसे कॉल पर विश्वास नहीं करना चाहिए और न ही ऐसे फर्जी कॉल करने वालों को भुगतान करना चाहिए। अगर एसीबी अधिकारियों के नाम पर किसी सरकारी कर्मचारी या नागरिक को ऐसी कोई फर्जी कॉल आती है, तो तुरंत एसीबी से संपर्क करें।

एसीबी टोल फ्री नंबर 1064. सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म यानी व्हाट्सएप (9440446106), फेसबुक (तेलंगाना एसीबी) और एक्स/पूर्व में ट्विटर (@तेलंगानाएसीबी) के माध्यम से भी उनसे संपर्क किया जा सकता है।

मानसून के मद्देनजर जल निकासी के लिए अग्रिम योजना तैयार की जानी चाहिए : मंत्री

जनसंख्या गणना के साथ हैदराबाद के विकास को विशेष प्राथमिकता : पोन्नम प्रभाकर

मंत्री ने इंजीनियरिंग, स्वच्छता, प्रकाश व्यवस्था, अपशिष्ट प्रबंधन की समीक्षा की

हैदराबाद, 17 मई (स्वतंत्र वार्ता)। हैदराबाद जिला प्रभारी मंत्री, राज्य बी.सी. और परिवहन मंत्री पोन्नम प्रभाकर ने अधिकारियों को शहर में किए जा रहे विकास कार्यों के लिए आवश्यक भूमि अधिग्रहण प्रक्रिया में तेजी लाने के निर्देश दिए हैं। शनिवार शाम को मंत्री ने जीएचएमसी मुख्यालय में अधिकारियों के साथ जीएचएमसी में चल रहे विकास कार्यों की समीक्षा की।

मंत्री ने सड़कों, फ्लाईओवरों, बाढ़ रोकथाम परियोजनाओं जैसे एसएनडीपी, एसआरडीपी, एच सिटी, स्ट्रीट लाइट, स्वच्छता और ठोस अपशिष्ट प्रबंधन सहित विभिन्न योजनाओं के माध्यम से शहर में शुरू की गई बुनियादी ढांचा परियोजनाओं की समीक्षा की।

मेयर गदवाला विजया लक्ष्मी, डिप्टी मेयर श्रीलता शोभन रेड्डी, आयुक्त आर.वी. इस बैठक में श्री कर्णन, जोनल कमिश्नर, सीईओ तथा अन्य विभागों के अधिकारियों ने भाग लिया। वे चाहते हैं कि एसआरडीपी में अधूरे कार्यों को युद्ध स्तर पर पूरा किया जाए और जनता को उपलब्ध कराया जाए। परियोजना अधिकारी को फलकनुमा आरओबी का कार्य जुलाई तक तथा शास्त्रीपुरम आरओबी का कार्य अगस्त तक पूर्ण करने के निर्देश दिए। परियोजना के मुख्य कार्यकारी अधिकारी भास्कर रेड्डी ने मंत्री को बताया कि मूर्तिकला के दूसरे चरण का कार्य पूरा हो चुका है और यह शुरू होने के लिए तैयार है। मंत्री ने परियोजना अधिकारियों को एच सिटी द्वारा स्वीकृत कार्यों को प्रस्तावित कार्यक्रम के अनुसार पूरा करने के लिए कदम उठाने के निर्देश दिए। परियोजना अधिकारियों को निर्देश दिया गया कि वे निविदा प्रक्रिया समझौता पूरा होने के तुरंत बाद काम शुरू करें।

वे चाहते हैं कि गाद हटाने का काम तुरंत शुरू किया जाए ताकि बरसात के मौसम में कोई समस्या उत्पन्न न हो। चूंकि मानसून आपातकालीन टीमें न केवल मुख्य सड़क पर बल्कि बरसात के मौसम में आंतरिक सड़कों पर भी तैनात की जाएंगी ताकि जलभराव बिंदुओं को जमा होने से रोका जा सके, इसलिए वहां भी मोबाइल स्टैटिक टीमें स्थापित की जानी चाहिए ताकि यह सुनिश्चित किया जा सके कि लोगों को किसी भी समस्या का सामना न करना पड़े। शहर के विस्तार के परिप्रेक्ष्य में नवनिर्मित कॉलोनियों में सफाई पर ध्यान दिया जाए तथा आवश्यकता पड़ने पर सफाई कर्मचारियों की नियुक्ति की जाए। जवाहरनगर डम्प यार्ड पर बढ़ते बोझ के संदर्भ में, अतिरिक्त स्वच्छता आयुक्त ने मंत्री से वैकल्पिक डम्प यार्ड की स्थापना के लिए भूमि उपलब्ध कराने का अनुरोध किया। उन्होंने कहा कि यदि उन्हें सूचित किया जाता है कि उन्होंने रंगारेड्डी, मेडचल मलकाजगिरी, यादाद्री भुवनागिरी और संगारेड्डी के जिला कलेक्टरों को डंप यार्ड के लिए भूमि अधिग्रहण करने के लिए कदम उठाने के लिए विशेष पत्र भेजा है तो वह सरकार के माध्यम से काम करेंगे। उन्होंने चेतावनी दी कि कूड़ा-कचरा फैलाने वालों और स्ट्रीट लाइटें न जलाने के लिए जिम्मेदार लोगों तथा इस मामले में जिम्मेदारी से काम न करने वालों के खिलाफ कार्रवाई की जाएगी। अतिरिक्त आयुक्त ने मंत्री को बताया कि स्ट्रीट लाइटों के संबंध में प्राप्त शिकायतों के समाधान के लिए प्रयास किए जा रहे हैं, लेकिन उनके समाधान में कुछ देरी हुई है, इसलिए अब स्ट्रीट लाइटों के संबंध में दैनिक आधार पर प्राप्त शिकायतों के समाधान के लिए कदम उठाए गए हैं।

मंत्री ने यह सुनिश्चित करने के लिए कदम उठाने के आदेश दिए कि दोपहर के समय स्ट्रीट लाइटें न जलाई जाएं। आयुक्त आर.वी. कर्णन ने मंत्री को बताया कि चूंकि ठेकेदारों का टेंडर पूरा हो चुका है, इसलिए जोनल कमिश्नर को निर्देश दिया गया है कि वे अपने उपठेकेदारों के लिए स्ट्रीट लाइटों और उपकरणों की खरीद की समय सीमा दो महीने के लिए बढ़ा दें। उप मुख्य कार्यकारी अधिकारी ने बताया कि एसएनडीपी के प्रथम चरण में किए गए 90 प्रतिशत कार्य पूरे हो चुके हैं तथा इन कार्यों से 150 कॉलोनियों में बाढ़ का खतरा टल गया है।

मिस वर्ल्ड प्रतिभागियों ने योगासन किए

हैदराबाद, 17 मई (स्वतंत्र वार्ता)। मिस वर्ल्ड प्रतिभागियों और एथलीटों ने तांग-ता मार्शल आर्ट और रोलर स्केटिंग का प्रदर्शन किया।

मिस वर्ल्ड प्रतिभागियों ने योगासन किए।

मिस वर्ल्ड प्रतियोगिता के तहत गच्चीबावली इंडोर स्टेडियम में आयोजित खतरोल फाइनल कार्यक्रम में मंत्री जुपल्ली कृष्ण राव, मिस वर्ल्ड संस्थापक जूलिया मोर्ले, तेलंगाना सरकार के सलाहकार और तेलंगाना ओलंपिक संघ के अध्यक्ष जितेन्द्र रेड्डी, सांसद और बीसीसीआई के उपाध्यक्ष राजीव शुक्ला, तेलंगाना खेल प्राधिकरण के अध्यक्ष शिवसेन रेड्डी, खेल प्राधिकरण के एमडी सोनीबाला, तेलंगाना ओलंपिक संघ के सचिव मल्लारेड्डी, पर्यटन निदेशक हनुमंत और अन्य अधिकारी उपस्थित थे। बीसीसीआई के उपाध्यक्ष राजीव शुक्ला और मंत्री जुपल्ली कृष्ण राव ने भी अपने विचार रखे।

छात्रों ने डिग्री सेमेस्टर परीक्षाओं के लिए हॉल टिकट न दिए जाने पर किया प्रदर्शन

हैदराबाद, 17 मई (स्वतंत्र वार्ता)। निजाम कॉलेज के छात्रों ने शनिवार को धरना-प्रदर्शन किया और आरोप लगाया कि कॉलेज प्रशासन डिग्री परीक्षा के लिए उन्हें हॉल टिकट देने से इनकार करके उनके शैक्षणिक भविष्य के साथ खिलवाड़ कर रहा है। छात्रों ने दावा किया कि परीक्षा शुल्क का भुगतान करने के बावजूद, कॉलेज के प्रिंसिपल ने कथित तौर पर 75 प्रतिशत से कम उपस्थिति का हवाला देते हुए हॉल टिकट देने से इनकार कर दिया, जो परीक्षा में बैठने के लिए अपर्याप्त है।

प्रदर्शनकारियों के अनुसार, द्वितीय और तृतीय वर्ष के लगभग 350 छात्रों को हॉल टिकट देने से मना कर दिया गया, जिन्होंने कॉलेज प्रशासन पर अड़ियल रवैया अपनाने और किसी प्रकार की नरमी नहीं बरतने का आरोप लगाया। निजाम कॉलेज में बीकॉम के छात्र नागेश ने दावा किया कि छात्रों को उनकी अपर्याप्त उपस्थिति के बारे में सूचित नहीं किया गया था। उन्होंने कहा कि कॉलेज द्वारा दो दिन पहले हॉल टिकट जारी किए गए थे और छात्रों को उनकी कम उपस्थिति के बारे में सूचित नहीं किया गया था।

दूल्हे ने तय शादी से एक दिन पहले दूसरी महिला से कर ली शादी

करीमनगर, 17 मई (स्वतंत्र वार्ता)। हुजुराबाद ग्रामीण मंडल में एक अजीबोगरीब घटना सामने आई है, जहां एक दूल्हे ने अपनी शादी से एक दिन पहले ही दूसरी महिला से शादी कर ली। स्थानीय लोगों के अनुसार, रंगापुर निवासी सॉफ्टवेयर इंजीनियर कुंता मधुकर रेड्डी का कटरापल्ली की एक महिला से विवाह तय हुआ था और उसकी सगाई भी हो गई थी।

मधुकर रेड्डी को 40 लाख रुपये की जमीन के अलावा दस तोला सोना और 6 लाख रुपये मूल्य के अन्य उपकरण देने का वादा किया गया था। हालांकि शादी शुक्रवार को तय थी, लेकिन गुरुवार की सुबह उसने दूसरी महिला से शादी कर ली। घटना के बारे में जानकर हैरान लड़की के माता-पिता ने दूल्हे के पिता श्रीनिवास रेड्डी से पूछताछ की। श्रीनिवास रेड्डी ने जब बेतुका जवाब दिया तो उन्होंने पुलिस में शिकायत दर्ज करा दी।

पुलिस कर्मी अपना सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन करें और पुलिस विभाग की प्रतिष्ठा बढ़ाएं : डॉ. जितेन्द्र

डीजीपी ने सभी जिलों के थाना प्रभारियों के साथ बैठक की

हैदराबाद, 17 मई (स्वतंत्र वार्ता)। पुलिस महानिदेशक डॉ. जितेन्द्र का मानना है कि यदि पुलिसकर्मी अपने अधीनस्थों को सर्वोत्तम सेवा प्रदान करेंगे तो पुलिस विभाग की प्रतिष्ठा बढ़ेगी। राज्य के डीजीपी ने शनिवार को राज्य के सभी जिलों के थाना प्रभारियों के साथ बैठक की। इस अवसर पर थाना प्रभारियों से बात करते हुए उन्होंने पुलिस कर्मियों को प्रशिक्षण में सीखे गए कानूनों का क्रियान्वयन कर आगे बढ़ने की सलाह दी। इससे पुलिस विभाग की प्रतिष्ठा बढ़ेगी और तेलंगाना राज्य पुलिस की देश में अच्छी प्रतिष्ठा होगी और पुलिसकर्मी उस प्रतिष्ठा को बनाए रखने के लिए काम करेंगे। उन्होंने कहा कि पुलिस विभाग में कार्मिक चार पहलुओं पर ध्यान केन्द्रित कर उच्च पदों पर पहुंच सकते हैं। उन्होंने अपने अनुभवों के बारे में बताया कि पुलिसकर्मी चार पहलुओं को ध्यान में रखकर काम करके जनता की प्रशंसा प्राप्त कर सकते हैं। जनता को पुलिस सेवाएं प्रदान करना, सर्वोत्तम सेवाएं प्रदान करना, बेहतर सेवाएं बनाए रखना और सर्वोत्तम स्तर पर पुलिस सेवाओं का प्रदर्शन करना। उन्होंने स्पष्ट किया कि ब्रिटिश काल में पुलिस व्यवस्था शुरू हुए 165 वर्ष बीत चुके हैं और लोगों को बेहतर सेवाएं प्रदान करने की जिम्मेदारी पुलिस कर्मियों की है। उन्होंने कहा कि थाना प्रभारियों को इस दिशा में काम करना चाहिए ताकि न केवल आम जनता बल्कि स्टाफ के परिवार के सदस्य भी पुलिस अधिकारियों पर गर्व कर सकें। यह सुझाव दिया गया कि पुलिस कर्मियों को तदनुसार काम करना चाहिए क्योंकि जनता में पुलिस कर्तव्यों के प्रति जागरूकता बढ़ी है। उन्होंने सुझाव दिया कि आपराधिक न्याय प्रणाली को इस तरह से काम करना चाहिए कि अपराध करने वालों को दंडित किया जा सके, और इस तरह से अपराधों को रोका जा सके, और इसके लिए प्रौद्योगिकी और अन्य साक्ष्य का उपयोग किया जाना चाहिए। डीजीपी ने कहा कि जब वे अपने पुलिस कर्तव्यों के तहत अन्य देशों के दौरे पर गए, तो उन्होंने न्यूयॉर्क पुलिस भवन देखा और वे इस तरह से काम करना चाहते थे कि न्यूयॉर्क पुलिस उनके राज्य में आए। न्यूयॉर्क पुलिस कमांड कंट्रोल सेंटर में आईं और उन्हें उनके शब्द याद दिलाए तथा कहा कि तेलंगाना पुलिस विभाग में काम करना गर्व की बात है। थाना प्रभारियों के साथ बैठक में बोलते हुए अतिरिक्त पुलिस महानिदेशक (कानून एवं व्यवस्था) श्री महेश एम भागवत ने कहा कि नकली बीज बनाने वालों के खिलाफ सख्त कार्रवाई की जानी चाहिए। बैठक में एआईजी कानून एवं व्यवस्था श्री रमण कुमार, डीएसपी श्री सत्यनारायण और अन्य ने भाग लिया।

चादरघाट में चोरों ने घर में घुसकर उड़ाया कीमती सामान

हैदराबाद, 17 मई (स्वतंत्र वार्ता)। शुक्रवार रात चोरों ने चादरघाट स्थित एक व्यवसायी के घर में घुसकर भारी मात्रा में सोना और नकदी लूट ली। चादरघाट निवासी व्यवसायी हफीजुद्दीन अपनी पत्नी के साथ शुक्रवार देर शाम अपने बच्चों को घर में छोड़कर रिश्तेदारी में गए थे। रात में बच्चे अपने कमरे में सोने चले गए।

चदरघाट पुलिस ने बताया कि जब बच्चे सो रहे थे, तब चोर घर में घुसे और बच्चों को कमरे में देखा। उन्होंने बच्चों के कमरे का दरवाजा बाहर से बंद कर दिया। इसके बाद अपराधी बेडरूम में घुसे और घर के पिछले दरवाजे से भागने से पहले कीमती सामान समेट लिया। चोरों ने फ्रिज से फल भी निकाल कर खा लिए और बाद में रसोई में जाकर घर में खाना खाया। देर रात हफीजुद्दीन घर लौटे तो घर में सामान बिखरा पड़ा था और बच्चों के कमरे का दरवाजा बाहर से बंद देखकर उन्होंने पुलिस को सूचना दी। पुलिस घर पहुंची और एक ट्रैकर डॉग और सुराग टीम को बुलाया। ट्रैकर डॉग पुलिस को मलकपेट रेलवे स्टेशन तक ले गया और गंध खो बैठा। सुराग टीम ने अपराध स्थल से फिंगरप्रिंट उठाए, और पुलिस उन्हें ज्ञात अपराधियों के उपलब्ध डेटाबेस से मिलान करने की कोशिश कर रही है। मामला दर्ज कर लिया गया है।

आज जामबाग मंडल के पार्षद राकेश जायसवाल ने भाजपा प्रदेश कार्यालय नामपल्ली में विरोध स्वरूप तुर्की उत्पादों और तुर्की पर्यटन का बहिष्कार करने के लिए एक कार्यक्रम आयोजित किया। कार्यक्रम में श्रीनिवास यादव, मयूर कालेकर, अनिल यादव, आनंद, राजकुमार, प्रवीण, जनार्दन, संदीप, रवि, अनिल यादव ने विरोध प्रदर्शन में भाग लिया।

बजरंग सेना ने तिरंगा यात्रा में भाग लिया

हैदराबाद, 17 मई (स्वतंत्र वार्ता)। बजरंग सेना तेलंगाना के अध्यक्ष एन.आर. लक्ष्मण राव एवं ग्रेटर हैदराबाद के अध्यक्ष मनोज मोगलगिड्डी और शहर के युवा सचिव नरेश ने पाकिस्तान प्रायोजित आतंकवाद के खिलाफ निर्णायक मिशन ऑपरेशन सिंदूर की सफलता पर आयोजित आयोजित तिरंगा यात्रा में भाग लिया।

इस यात्रा में बजरंग सेना के सदस्यों और समर्थकों ने उत्साहपूर्वक भाग लिया, जिन्होंने आतंकवाद के खिलाफ लड़ाई में अटूट देशभक्ति और एकता का प्रदर्शन किया। इस अवसर पर, पूर्व पार्षद वाई. कृष्णा के साथ टीम ने टैंक बंड में डॉ.बी.आर. अंबेडकर को पुष्पांजलि अर्पित की, उन्होंने विरासत और राष्ट्र के लिए उनके योगदान का सम्मान किया गया। सामाजिक कार्यकर्ता कृष्ण गुप्ता भी तिरंगा यात्रा में शामिल होकर अभियान के प्रति अपनी एकजुटता व्यक्त की। कार्यक्रम का समापन देशभक्ति के नारों और राष्ट्रीय अखंडता और एकता को बनाए रखने की शपथ के साथ हुआ।

जवान ने की अपने घर की जमीन पर अतिक्रमण की शिकायत

सिद्दीपेट, 17 मई (स्वतंत्र वार्ता)। जम्मू एवं कश्मीर में भारत-पाकिस्तान सीमा पर तैनात भारतीय सेना के जवान बी रामास्वामी ने एक वीडियो जारी कर अकबरपेट-भुमपल्ली मंडल के चौदरपल्ली में एक गांव के राजस्व अधिकारी के परिवार पर उनकी जमीन पर अतिक्रमण करने का आरोप लगाया है। राम स्वामी ने कहा कि अतिक्रमणकारी उनके माता-पिता और परिवार के सदस्यों को परेशान कर रहे हैं, साथ ही उनके नाम भूमि अभिलेखों से हटा रहे हैं। हालांकि उनके माता-पिता ने सिद्दीपेट में एमआरओ, आरडीओ और कलेक्टर के कार्यालय से संपर्क किया था, लेकिन किसी भी अधिकारी की ओर से कोई प्रतिक्रिया नहीं मिली क्योंकि उक्त वीआरओ उन्हें प्रभावित कर रहा था, उन्होंने वीडियो में आरोप लगाया।

उन्होंने लोगों से अनुरोध किया कि वे इस वीडियो को तब तक शेयर करें जब तक कि यह मुख्यमंत्री ए रेवंत रेड्डी तक न पहुंच जाए। रामास्वामी का वीडियो अब सोशल मीडिया पर वायरल हो गया है और कई लोगों ने मांग की है कि सरकार तुरंत इस मुद्दे का समाधान करे। इस बीच, पूर्व मंत्री टी हरीश राव ने सिद्दीपेट कलेक्टर एम मनु चौधरी से बात की और उनसे इस मुद्दे को सुलझाने को कहा। उन्होंने कहा कि सीमा पर दुश्मनों से लड़ रहे सैनिक का समर्थन करना हर नागरिक की जिम्मेदारी है।

कोत्तागुडेम में 2 बैलों के बीच लड़ाई में गिरा बिजली का खंभा

5 मवेशियों की करंट लगने से मौत

कोत्तागुडेम, 17 मई (स्वतंत्र वार्ता)। जिले के जुलुरपद मंडल के सुराम गांव में शनिवार को दो बैलों के बीच लड़ाई के कारण बिजली का करंट लगने से पांच मवेशियों की मौत हो गई। ग्रामीणों के अनुसार, गांव के किसान सूर्या, लक्ष्मी, नागेश्वर राव और वेंकटेश्वरलु के पांच मवेशी उस दिन खेतों में चरने गए थे। चरते समय झुंड में वर्चस्व कायम करने के लिए दो बैलों में लड़ाई हो गई। उन्होंने एक बिजली के खंभे को इतनी जोर से टक्कर मारी कि सीमेंट का खंभा टूटकर नीचे गिर गया, जिससे बिजली वितरण लाइन भी जमीन पर गिर गई। बिजली का तार तीन गायों और लड़ते हुए बैलों पर गिर गया, जिससे तीनों की मौके पर ही मौत हो गई। ग्रामीणों से सूचना मिलने पर जुलुरपाड सबस्टेशन के सहायक अभियंता सतीश ने मौके पर पहुंचकर मामले का मुआयना किया और मवेशियों की मौत से दुखी किसानों को मुआवजा दिलाने का आश्वासन दिया।

क्रिकेट खेलते समय बिजली गिरने से 2 लड़कों की मौत

मेदक, 17 मई (स्वतंत्र वार्ता)। तूप्रान नगरपालिका के पडालपल्ली में शनिवार को स्थानीय मैदान में क्रिकेट खेल रहे दो किशोर आकाशीय बिजली गिरने से मर गए। प्रसाद (15) और यशवंत (13) अपने दोस्तों और पड़ोसियों के साथ अपने घर के नजदीक मैदान में क्रिकेट खेल रहे थे, तभी आंधी-तूफान के साथ बारिश होने लगी। प्रसाद और यशवंत तथा दो अन्य दोस्त एक पेड़ के नीचे छिपने के लिए भागे। कुछ मिनटों के बाद, बिजली उन पर गिरी, जबकि दूसरे पेड़ के नीचे खड़े अन्य दोस्त असहाय होकर उन्हें देख रहे थे। उन्हें एक पल के लिए एहसास ही नहीं हुआ कि क्या हुआ था। इसके बाद उन्होंने अन्य लोगों को सूचित किया, जिन्होंने चारों बच्चों को तूप्रान के सरकारी अस्पताल पहुंचाया, जहां डॉक्टरों ने प्रसाद और यशवंत को मृत घोषित कर दिया। अन्य दो का इलाज चल रहा है। पुलिस ने मामला दर्ज कर लिया है।

मुलुगु में 1000 एकड़ में औद्योगिक पार्क स्थापित करेगा टीजीआईआईसी

सिद्दीपेट, 17 मई (स्वतंत्र वार्ता)। तेलंगाना औद्योगिक और अवसंरचना निगम लिमिटेड (टीजीआईआईसी) के कार्यकारी निदेशक निखिल चक्रवर्ती ने कहा कि राज्य सरकार मुलुगु मंडल में 1,000 एकड़ से अधिक भूमि में एक औद्योगिक पार्क स्थापित करने की तैयारी कर रही है।

चक्रवर्ती ने शनिवार को मंडल के मुलुगु, पीरलापल्ली, कोथुर, वारगल और टुनकी बोलरम गांवों में राजस्व विभाग द्वारा चिन्हित भूमि का दौरा किया। ईडी ने भूमि अधिग्रहण की प्रगति और शेष भूमि अधिग्रहण में आने वाली बाधाओं के बारे में जानकारी ली। उन्होंने अधिकारियों से भूमि अधिग्रहण में तेजी लाने को कहा। सिद्दीपेट के अतिरिक्त कलेक्टर एमडी हमीद, टीजीआईआईसी जोनल मैनेजर अनुराधा, डीजीएम नागराजू और रामदेव उपस्थित थे।

बेमौसम बारिश ने करीमनगर में मचाई तबाही

करीमनगर, 17 मई (स्वतंत्र वार्ता)। बेमौसम बारिश और तेज हवाओं ने शुक्रवार रात पूर्ववर्ती करीमनगर जिले में कहर बरपाया। क्रय केंद्रों में रखा धान बारिश के पानी में भीग गया, वहीं तेज हवाओं के कारण कुछ स्थानों पर पेड़ और बिजली के तार क्षतिग्रस्त हो गए। कुछ इलाकों में पेड़ उखड़ने और बिजली के तार सड़कों पर गिरने से यातायात भी प्रभावित हुआ। चिगुरुमामिडी मंडल में पेड़ और बिजली के तार सड़क पर गिरने से करीमनगर-हुस्नाबाद मुख्य मार्ग पर भी कुछ देर के लिए यातायात ठप हो गया। घटना की जानकारी मिलते ही पुलिस मौके पर पहुंची और गिरे हुए पेड़ों और तारों को हटाया। इस बीच क्रय केंद्रों में रखा धान बारिश के पानी में भीग गया है। वेमुलावाड़ा, कोनारोपेट, वीरनापल्ली, चंदुर्थी, रुद्रांगी और राजन्ना-सिरसिल्ला जिले के अन्य मंडलों में फसल क्षतिग्रस्त हो गई।

कोयले से लदी मालगाड़ी में लगी आग

मेदक, 17 मई (स्वतंत्र वार्ता)। कोयले से लदी एक मालगाड़ी में शनिवार को आग लग गई, जिसके बाद लोको पायलट को ट्रेन को चिन्ना शंकरमपेट के मिर्जापल्ली रेलवे स्टेशन पर रोकना पड़ा। ट्रेन रामागुंडम से रायचूर की ओर जा रही थी। लोको पायलट नुनावथ कुमार, अंजनेयुलु और मैनेजर श्रीकांत ने एक बोगी से धुआं निकलता देखा जिसके बाद स्थानीय स्टेशन अधीक्षक प्रसन्ना कुमार ने फायर स्टेशन को फोन किया। आग बुझाने के लिए दमकल की गाड़ी मौके पर भेजी गई। आग बुझाने में एक घंटा लगा।

नामपल्ली अस्पताल में एक व्यक्ति पर उपद्रवी ने किया हमला

हैदराबाद, 17 मई (स्वतंत्र वार्ता)। नामपल्ली अस्पताल में शुक्रवार रात एक बदमाश ने एक व्यक्ति पर हमला कर दिया। संदिग्ध महमूद उर्फ डबला, जिसके खिलाफ फलकनुमा पुलिस स्टेशन में मामला दर्ज है, नामपल्ली एरिया अस्पताल गया, जब उसने पीड़ित सोहेल को देखा, जो पहले उसकी दुकान पर काम करता था। हबीबनगर पुलिस ने बताया कि अस्पताल के गेट पर सोहेल को देखते ही संदिग्ध महमूद ने उसे हाथों और एक बड़ी छड़ी से पीटा। उसका सोहेल के साथ काम से संबंधित कुछ विवाद था। सूचना पर पुलिस मौके पर पहुंची और महमूद को हिरासत में लेकर मामला दर्ज कर लिया।

स्वतंत्र वार्ता

Email :
svaarttha2006@gmail.com
svaarttha@rediffmail.com
svaarttha2006@yahoo.com

Epaper :
epaper.swatantravaartha.com

For Advertisement :
swadds1@gmail.com

मुझे एक और मौका दे दो, 8 साल का इंतजार खत्म

बीसीसीआई ने आखिरकार करवाई करुण नायर की वापसी

मुंबई, 17 मई (एजेंसियां)। बीसीसीआई ने इंग्लैंड दौरे लिए 18 सदस्यीय इंडिया ए टीम का ऐलान कर दिया है. ये सीरीज कई मायनों में अहम रहने वाली है. सलामी बल्लेबाज अभिमन्यु ईश्वरन इस दौरे पर इंडिया ए टीम की कमान संभालेंगे और विकेटकीपर बल्लेबाज ध्रुव जुरेल को उपकप्तान बनाया गया है. इसके अलावा कई युवा खिलाड़ियों को भी जगह मिली है. वहीं, एक खिलाड़ी ऐसा भी है जो 8 साल के बाद भारतीय सेटअप में वापसी करने में कामयाब रहा है. इस खिलाड़ी ने घरेलू क्रिकेट में लगातार रन बनाकर इंडिया ए के स्क्वॉड में अपनी जगह बनाई है.

आखिरकार अनुभवी बल्लेबाज करुण नायर की भारतीय सेटअप में वापसी हो गई है. भारतीय टीम में वापसी के लिए करुण नायर का आठ साल का इंतजार खत्म हो गया है. अब उनकी जगह सीनिय टीम में अपनी जगह बनाने पर रहने वाली है, जिसके लिए ये 2 मैच उनके लिए काफी अहम रहने वाले हैं. करुण नायर ने आखिरी बार मार्च 2017 में टीम इंडिया के लिए खेला था. इसके बाद से ही वह जगह बनाने के लिए जूझ रहे थे. बता दें, करुण नायर ने सोशल मीडिया पर साल 2022 में एक भावुक पोस्ट शेयर किया था, जो अब एक बार फिर वायरल हो गया है. करुण नायर ने साल 2022 में क्रिकेट से खुद को एक और मौका देने की बात की थी. उसमें उन्होंने लिखा था- 'प्रिय क्रिकेट! कृपया मुझे एक और मौका दे दो.' उन्होंने यह पोस्ट अपने सोशल मीडिया हैंडल एक्स (पूर्व में ट्विटर) पर किया था. उनका करियर खतरे में था और उन्हें कर्नाटक की रणजी टीम से भी निकाल दिया गया था. लेकिन पिछला 1 साल उनके लिए काफी यादगार रहा. करुण नायर ने शतकों की लाइन लगा थी, जिसके चलते बीसीसीआई ने उनकी वापसी करवा दी है. करुण नायर 2024-25 में रणजी ट्रॉफी चैंपियन विदर्भ के लिए दूसरे सबसे ज्यादा रन बनाने वाले खिलाड़ी थे. उन्होंने नौ मैचों में 863 रन बनाए थे. इस घरेलू सीजन में उन्होंने फर्स्ट क्लास और लिस्ट-एक क्रिकेट को मिलाकर 1600 से ज्यादा रन बनाए, जिसमें 9 शतक भी शामिल रहे. दूसरी ओर वह 2023 और 2024 में काउंटी क्रिकेट में नॉर्थम्पटनशर के लिए भी खेले थे और दस मैचों में 56.61 की औसत से 736 रन बनाने में कामयाब रहे थे .

इंग्लैंड दौरे के लिए भारत ए टीम का ऐलान

गंभीर नहीं ऋषिकेश बना भारतीय टीम का कोच

मुंबई,17 मई (एजेंसियां)। भारतीय क्रिकेट कंट्रोल बोर्ड ने इंग्लैंड दौरे के लिए 20 सदस्यीय भारतीय ए टीम का ऐलान कर दिया। इस दौरे पर भारत ए इंग्लैंड लायंस के खिलाफ दो फर्स्ट क्लास मैच खेलेगा। दौरे के लिए पूर्व भारतीय बल्लेबाज ऋषिकेश कानिटकर को टीम इंडिया का कोच बनाया गया है। यह दौरा युवा खिलाड़ियों के लिए एक बड़ा मौका होगा और इससे उन्हें इंग्लैंड की चुनौतीपूर्ण परिस्थितियों में एडजस्टमेंट बिठाने में मदद मिलेगी।

बीसीसीआई के एक सीनियर अधिकारी ने कहा, 'कानिटकर के पास खिलाड़ियों के साथ काम करने का अच्छा अनुभव है और उनकी रणनीतिक सोच टीम के लिए फायदेमंद साबित होगी। उनकी कोचिंग से इंग्लैंड की परिस्थितियों में भारतीय खिलाड़ियों को काफी फायदा होगा।'

भारत के लिए इतने मैच खेले हैं कानिटकर

भारत के लिए दो टेस्ट और 34 वनडे खेलने वाले ऋषिकेश पिछले कुछ सालों में बतौर कोच महिला क्रिकेट में अहम भूमिका निभा चुके हैं। उन्होंने बतौर बैटिंग कोच भारतीय महिला टीम के साथ टी-20 वर्ल्ड कप 2023 में भी काम किया था। उनकी कोचिंग में खिलाड़ियों की तकनीक और मानसिक मजबूती में जबरदस्त सुधार देखने को मिला है।

इंडिया ए टीम का इंग्लैंड दौरा जून-जुलाई 2025 में प्रस्तावित है, जिसमें टीम को चार दिवसीय और लिमिटेड ओवरों के मैच खेलने हैं। इस दौरे का उद्देश्य युवा खिलाड़ियों को इंटरनेशनल क्रिकेट के लेवल की तैयारी करवाना और भारतीय टीम के भविष्य के लिए बेंच स्ट्रेंथ को मजबूत करना है। कानिटकर के कोच बनने के साथ ही यह उम्मीद की जा रही है कि भारत की युवा ब्रिगेड इस दौरे में शानदार प्रदर्शन करेगी और सीनियर टीम में जगह बनाने की दिशा में एक मजबूत कदम उठाएगी।

इंग्लैंड दौरे के लिए भारत ए टीमः अभिमन्यु ईश्वरन (कप्तान), यशस्वी जायसवाल, करुण नायर, ध्रुव जुरेल (उप-कप्तान, विकेटकीपर), नितीश कुमार रेड्डी, शार्दुल ठाकुर, इशान किशन (विकेटकीपर), मानव सुथार, तनुष कोटियन, मुकेश कुमार, आकाश दीप, हर्षित राणा, अंशुल कंबोज, खलील अहमद, रुतुराज गायकवाड़, सरफराज खान, तुषार देशपांडे, हर्ष दुबे, शुभमन गिल और साई सुदर्शन।

भारत ए टीम का पूरा शेड्यूल

30 मई से 2 जून – इंग्लैंड लायंस बनाम भारत ए, कैंटरबरी।

6 जून से 9 जून – इंग्लैंड लायंस बनाम भारत ए, नॉर्थम्पटन।

13 जून से 16 जून – इंट्रा-स्क्वाड मैच, बेकेनहैम।

'देश को आप पर गर्व' : नीरज चोपड़ा ने पहली बार फेंका 90 मीटर थ्रो; पीएम मोदी ने यूं दी बधाई

नई दिल्ली, 17 मई (एजेंसियां)। भारत के स्टार जेवलिन थ्रोअर नीरज चोपड़ा ने दोहा डायमंड लीग में 90.23 मीटर भाला फेंका। इस थ्रो के साथ ही उन्होंने इतिहास रच दिया। उन्होंने पहले प्रयास में 88.44 मीटर स्कोर किया, जबकि दूसरा थ्रो अमान्य रहा। फिर नीरज ने तीसरे प्रयास में अपने करियर का बेस्ट थ्रो किया। तीसरे प्रयास में 90.23 मीटर दूर भाला फेंका।

उन्होंने पहली बार 90 मीटर का आंकड़ा पार किया है। हालांकि, वह लीग में दूसरे नंबर

पर रहे। जर्मनी के जूलियन वेबर ने 91.06 मीटर का थ्रो फेंककर पहला स्थान हासिल किया। वहीं, नीरज 90 मीटर का थ्रो के साथ दुनिया के 25वें और एशिया के तीसरे खिलाड़ी बन गए। इससे पहले उनका बेस्ट थ्रो 89.94 मीटर था, जो उन्होंने 2022 डायमंड लीग में हासिल किया था।

दोहा डायमंड में लीग भारत के भाला फेंक खिलाड़ी नीरज चोपड़ा ने जादुई आंकड़ा पार किया। उनके इस शानदार प्रदर्शन के बाद भारत के प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने उनकी खूब तारीफ की। पीएम मोदी ने नीरज चोपड़ा के लिए अपने एक्स पर लिखा,

शानदार उपलब्धि! दोहा डायमंड लीग 2025 में 90 मीटर का आंकड़ा पार करने और अपना सर्वश्रेष्ठ व्यक्तिगत थ्रो हासिल करने के लिए नीरज चोपड़ा को बधाई। यह उनके अथक समर्पण, अनुशासन और जुनून का नतीजा है। भारत को खुशी और आप पर गर्व है।

दोहा डायमंड लीग 2025 में सिल्वर मेडल जीतने के बाद नीरज ने कहा कि मैं बहुत खुश हूं कि अंततः मैंने 90 मीटर का आंकड़ा पार कर लिया। यह मेरे लिए एक सपना था और मैंने इसके लिए बहुत मेहनत की है। अब मेरी नजरें अगले ओलंपिक और विश्व चैंपियनशिप पर हैं।

प्रज्ञानंद ने सुपरबेट शतरंज क्लासिक टूर्नामेंट जीता

टाइब्रेकर से हुआ विजेता का फैसला

बुकारेस्ट, 17 मई (एजेंसियां)। भारत के आर प्रज्ञानंद ने अलीरजा फिरोजा और मैक्सिम वाचियेर लाग्रेव के साथ रोमांचक टाइब्रेक प्लेआफ मुकाबला जीतकर सुपरबेट शतरंज क्लासिक टूर्नामेंट अपने नाम किया। जीत के बाद प्रज्ञानंद ने एक्स पर लिखा, 'अविश्वसनीय अनुभव। अभी अभी बुकारेस्ट में सुपरबेट शतरंज क्लासिक टूर्नामेंट जीता। मेरी टीम और सहयोगियों को लगातार हौसलाअफजाई करने के लिए धन्यवाद।' प्रज्ञानंद, वाचियेर लाग्रेव और फिरोजा नौ दौर के बाद 5.5 अंक लेकर बराबरी पर थे जिससे विजेता का फैसला त्रिकोणीय टाइब्रेकर से हुआ। टाइब्रेकर में पहली दो बाजियां ड्रॉ रहने के बाद प्रज्ञानंद ने तीसरी बाजी और खिताब जीता। भारत के विश्व चैंपियन डी गुकेश चार अंक लेकर नौवें स्थान पर रहे। अब ग्रैंड शतरंज टूर का अगला टूर्नामेंट सुपर युनाइटेड रैपिड और ब्लिट्ज एक जुलाई से क्रोएशिया में खेला जाएगा। प्रज्ञानंद के लिए साल 2018 खास रहा। वह महज 12 साल की उम्र में ही ग्रैंडमास्टर बन गए थे। वह भारत के सबसे युवा ग्रैंडमास्टर बने थे। इस मामले में उन्होंने विश्वनाथन आनंद को पीछे छोड़ा था। आनंद 18 साल की उम्र में ग्रैंडमास्टर बने थे। प्रज्ञानंद दुनिया के दूसरे सबसे युवा ग्रैंडमास्टर बने थे। उनसे आगे सिर्फ यूक्रेन के सिर्जी कर्जाकिन हैं। वह साल 1990 में सिर्फ 12 साल की उम्र में ग्रैंडमास्टर बन गए थे। प्रज्ञानंद शतरंज के अलावा क्रिकेट का भी शौक रखते हैं। मौका मिलने पर वो क्रिकेट मैच खेलने भी जाते हैं। हालांकि, शतरंज में करियर बनाने के चलते उन्होंने क्रिकेट के मैदान पर कोई उपलब्धि नहीं हासिल की है, लेकिन उन्हें क्रिकेट खेलने और मैच देखने का शौक है।

रोहित शर्मा के लिए राहुल द्रविड़ का खास संदेश

'अब मुंबई में टिकट की चिंता नहीं, मुझे पता है किससे संपर्क करना है'

मुंबई, 17 मई (एजेंसियां)। राहुल द्रविड़, जिन्हें क्रिकेट की दुनिया में 'द वॉल' के रूप में जाना जाता है,उन्होंने अपने चिर-परिचित अंदाज में रोहित को बधाई दी। उन्होंने मजाकिया लहजे में कहा, "अरे रोहित, लगता है तुमने उन स्टैंड्स में इतने छक्के मारे कि उन्हें तुम्हारे नाम पर रखना ही पड़ा!" द्रविड़ ने इस सम्मान को रोहित के लिए एक सपने के सच होने जैसा बताया। उन्होंने कहा, "मुझे यकीन है कि एक युवा लड़के के रूप में तुमने वानखेड़े जैसे प्रतिष्ठित स्टेडियम में खेलने का सपना देखा होगा। लेकिन क्या तुमने कभी सोचा था कि एक दिन इस स्टेडियम का एक स्टैंड तुम्हारे नाम पर होगा? यह मुंबई और भारतीय क्रिकेट में तुम्हारे योगदान का सच्चा पुरस्कार है।"

द्रविड़ ने रोहित के शानदार प्रदर्शनों की तारीफ करते हुए कहा, "वानखेड़े जैसे विश्व स्तरीय स्टेडियम में खेलना हर क्रिकेटर का सपना होता है, और

रोहित, तुमने न केवल वहां खेला, बल्कि अनगिनत यादगार पारियां खेलकर उसे और खास बनाया।" उन्होंने हल्के-फुल्के अंदाज में यह भी जोड़ा, "अब जब तुम्हारे नाम पर स्टैंड है, तो अगली बार मुंबई में टिकट की कमी होने पर मुझे पता है कि किससे संपर्क करना है!"

रोहित शर्मा का वानखेड़े स्टेडियम के साथ रिश्ता बेहद खास है। मुंबई इंडियंस के कप्तान के रूप में उन्होंने इस मैदान पर कई ऐतिहासिक जीत हासिल की हैं। उनके बल्ले से निकले छक्कों ने न केवल प्रशंसकों का दिल जीता, बल्कि इस स्टेडियम को क्रिकेट प्रेमियों के लिए और भी यादगार बना दिया। वानखेड़े में रोहित की कप्तानी में मुंबई इंडियंस ने कई आईपीएल खिताब जीते और उनकी व्यक्तिगत पारियों ने भी इस मैदान को एक अलग पहचान दी।

रोहित का यह सम्मान उनके उस समर्पण का प्रतीक है, जिसके साथ उन्होंने भारतीय क्रिकेट को नई ऊंचाइयों तक पहुंचाया। वनडे क्रिकेट में तीन दोहरे शतक, टी20 में रनों का अंबार, और कप्तान के रूप में उनकी शानदार रणनीतियां-रोहित ने हर प्रारूप में अपनी छाप छोड़ी है। वानखेड़े का यह स्टैंड उनके उस जुनून और मेहनत का सम्मान है, जिसने उन्हें 'हिटमैन' बनाया।

रोहित शर्मा के नाम पर स्टैंड का नामकरण केवल एक सम्मान नहीं, बल्कि आने वाली पीढ़ियों के लिए एक प्रेरणा भी है। यह हर उस युवा क्रिकेटर को प्रेरित करेगा, जो वानखेड़े के मैदान पर खेलने का सपना देखता है। जैसा कि द्रविड़ ने कहा, मुझे उम्मीद है कि रोहित के नाम वाला यह स्टैंड और भी कई छक्कों का गवाह बनेगा।" यह स्टैंड न केवल रोहित की उपलब्धियों का उत्सव है, बल्कि भारतीय क्रिकेट के सुनहरे भविष्य का भी प्रतीक है।

राहुल द्रविड़ ने अपनी शुभकामनाओं में रोहित के परिवार और दोस्तों को भी शामिल किया। उन्होंने कहा, "मुझे उम्मीद है कि यह तुम्हारे लिए, तुम्हारे परिवार और दोस्तों के लिए एक शानदार दिन होगा।" यह सम्मान न केवल रोहित के लिए, बल्कि उनके उन लाखों प्रशंसकों के लिए भी गर्व का क्षण है, जो उनके हर छक्के पर तालियां बजाते हैं।

33 साल के रोस्टन चेज बने वेस्टइंडीज के नए कप्तान

दो साल पहले खेला था पिछला टेस्ट

जमैका, 17 मई (एजेंसियां)। कप्तान की भूमिका में चेज का पहला असाइनमेंट ऑस्ट्रेलिया के खिलाफ टेस्ट सीरीज है, जो नए विश्व टेस्ट चैंपियनशिप (डब्ल्यूटीसी) चक्र 2025-27 में दोनों टीमों की पहली भिड़ंत होगी। योमेल वारिकन को टेस्ट टीम का उपकप्तान नामित किया गया है। क्रिकेट वेस्टइंडीज (सीडब्ल्यूआई) ने कहा कि उसने कप्तान के चयन के लिए डेटा, बहु-आयामी ढांचा अपनाया। टेस्ट कप्तान की भूमिका के लिए शॉर्टलिस्ट किए गए अन्य खिलाड़ियों में जॉन कैंपबेल, टेविन इमलाच, जोशुआ दा सिल्वा और जस्टिन ग्रीव्स के नाम भी शामिल थे।

होप ने टेस्ट कप्तानी से इनकार किया

सीडब्ल्यूआई की विज्ञप्ति के मुताबिक, वेस्टइंडीज के मौजूदा वनडे और टी20 कप्तान शाई होप ने टेस्ट में कप्तानी करने से इनकार कर दिया था। नए कप्तान

के लिए चयन के दौरान इंटरव्यू पैनल में डैरेन सैमी (मुख्य कोच), माइल्स बासकॉम्ब (क्रिकेट निदेशक) और इनोक लुईस (क्रिकेट रणनीति और कार्यवाहक समिति के अध्यक्ष) शामिल थे।

'नया बेंचमार्क स्थापित किया गया है'

सीडब्ल्यूआई के अध्यक्ष डॉ. किशोर शैलो ने कहा, 'यह चयन प्रक्रिया हमारे द्वारा की गई सबसे व्यापक और आगे की सोच में से एक है। मैं चेज की निष्पक्षता और रणनीतिक सोच की गहराई से प्रभावित हूं। इसी को देखते हुए फैसला लिया गया है। इसने वेस्टइंडीज क्रिकेट में कप्तान चुनने के लिए एक नया बेंचमार्क स्थापित किया है।

सैमी ने फैंस से समर्थन करने की अपील की

वहीं, कोच सैमी ने प्रशंसकों से अपने नए कप्तान का समर्थन करने का आग्रह किया। उन्होंने कहा, 'मैं पूरी तरह से इस नियुक्ति का समर्थन करता हूं। हमारे नए कप्तान ने अपने साथियों का सम्मान अर्जित किया है। चेज भूमिका के साथ आने वाली जिम्मेदारी को समझते हैं और इस टीम को आगे ले जाने के लिए आवश्यक लीडरशिप क्वालिटी को दिखाया है। हम कुछ खास करने जा रहे हैं और इसमें फैंस के समर्थन की जरूरत होगी।

चेज का अंतरराष्ट्रीय करियर

चेज ने 49 टेस्ट मैचों में 26.33 की औसत से 2265 रन बनाए हैं, जिसमें पांच शतक शामिल हैं। उनके नाम 85 विकेट भी हैं। उनका सर्वश्रेष्ठ आंकड़ा ब्रिजटाउन 2019 में इंग्लैंड के खिलाफ 60 रन देकर 8 विकेट है। चेज इसके अलावा 54 वनडे और 32 टी20 भी खेल चुके हैं। वनडे में चेज ने 858 रन बनाए और 32 विकेट झटके, जबकि टी20 में उन्होंने 410 रन बनाए और 22 विकेट झटके।

बाबर आजम ने चुनी टी20 की वर्ल्ड 11, विराट को नहीं दी जगह

भारत के 2 स्टार खिलाड़ी शामिल

इस्लामाबाद, 17 मई (एजेंसियां)। पाकिस्तान के स्टार बल्लेबाज और पूर्व कप्तान बाबर आजम ने हाल ही में अपनी टी20 वर्ल्ड इलेवन का ऐलान किया है, जिसने क्रिकेट फैंस के बीच खासी चर्चा बटोरी है. बाबर आजम ने अपनी इस टीम का चयन एक पॉडकास्ट में किया, जहां उन्होंने उन 11 खिलाड़ियों को चुना, जिन्हें वे टी20 क्रिकेट में बेस्ट मानते हैं. उनकी टीम में बल्लेबाजी, गेंदबाजी और ऑलराउंडरों का शानदार मिश्रण देखने को मिला. लेकिन चौंकाने वाली बात ये रही है कि बाबर ने अपनी टीम में विराट कोहली जैसे दिग्गज खिलाड़ी को जगह नहीं दी. इसके अलावा मौजूदा समय के घातक तेज गेंदबाज जसप्रीत बुमराह भी उनकी टीम का हिस्सा नहीं हैं.

बाबर आजम ने चुनी T20 की वर्ल्ड 11

बाबर आजम ने अपनी इस ड्रीम टीम में भारत के 2 खिलाड़ियों को शामिल किया है. वहीं, पाकिस्तान, साउथ अफ्रीका, ऑस्ट्रेलिया और इंग्लैंड के भी 2-2 खिलाड़ी उन्हें चुने हैं. इसके अलावा अफगानिस्तान के एक खिलाड़ी को जगह दी है. ओपनर के रूप में बाबर ने भारतीय कप्तान रोहित शर्मा को चुना है. रोहित टी20 इंटरनेशनल में सबसे ज्यादा रन बनाने वाले बल्लेबाज हैं. दूसरे ओपनर के रूप में बाबर ने अपने हमवतन और विकेटकीपर बल्लेबाज मोहम्मद रिजवान को चुना.

नंबर तीन पर बाबर ने फखर जमां को रखा और नंबर चार पर भारत के सूर्यकुमार यादव को जगह मिली. ये दोनों ही खिलाड़ी टी20 क्रिकेट में अपनी विस्फोटक बल्लेबाजी के लिए जाने जाते हैं. इसके बाद बाबर ने नंबर पांच पर अपनी टीम में इंग्लैंड के तूफानी बल्लेबाज जोस बटलर को रखा. वहीं, छठे नंबर पर साउथ अफ्रीका के डेविड मिलर को शामिल किया गया. ऑलराउंडर के तौर पर बाबर की पहली पसंद साउथ अफ्रीका के मार्को यानसन रहे. इसके बाद उन्होंने स्पिन गेंदबाजी की कमान अफगानिस्तान के राशिद खान के हाथों में दी.

टीम में 3 तेज गेंदबाज किए शामिल

बाबर आजम ने अपनी इस टीम में तीन तेज गेंदबाजों को शामिल किया, जो इस समय के सबसे घातक गेंदबाजों में से एक हैं.

बाबर की टीम में तेज गेंदबाजी में ऑस्ट्रेलिया के कप्तान पैट कमिंस को जगह मिली. वहीं, मिचेल स्टार्क को भी बाबर ने चुना. इसके बाद बाबर ने अपनी टीम में आखिरी खिलाड़ी के रूप में इंग्लैंड के तेज गेंदबाज मार्क वुड को जगह दी.

बाबर आजम की ड्रीम T20 टीम

रोहित शर्मा, मोहम्मद रिजवान, फखर जमां, सूर्यकुमार यादव, जोस बटलर, डेविड मिलर, मार्को यानसन, राशिद खान, पैट कमिंस, मिचेल स्टार्क, मार्क वुड.

1 साल में 2300 करोड़ की कमाई

रोनाल्डो पर हुई पैसों की बारिश, फिर बना दुनिया में नंबर-1

खेल की दुनिया न केवल प्रतिभा और जुनून का मंच है, बल्कि यह एक विशाल आर्थिक मंच भी है, जहां स्टार खिलाड़ी अपनी उपलब्धियों और ब्रांड वैल्यू के दम पर करोड़ों की कमाई करते हैं. फोर्ब्स ने हर साल की तरह इस बार भी सबसे ज्यादा कमाई करने वाले खिलाड़ियों की लिस्ट जारी कर दी है. इस बार कई बड़े खिलाड़ियों ने रिकॉर्ड तोड़ कमाई करते हुए लिस्ट में अपनी जगह बनाई है. वहीं, एक दिग्गज कमाई के मामले में इतना आगे है कि दूसरा खिलाड़ी उसके आसपास भी नहीं है.

पुर्तगाल के दिग्गज फुटबॉलर क्रिस्टियानो रोनाल्डो एक बार फिर लिस्ट में नंबर-1 बनने में कामयाब रहे हैं. क्रिस्टियानो

रोनाल्डो ने मई 2024 और मई 2025 के बीच सबसे ज्यादा कमाई की है. फोर्ब्स की रिपोर्ट के मुताबिक, क्रिस्टियानो रोनाल्डो ने पिछले 1 साल में 275 मिलियन अमेरिकी डॉलर (लगभग 2,356 करोड़ रुपए) की कमाई की है. इसी के साथ वह लगातार तीसरी बार इस लिस्ट में टॉप पर रहे हैं. वहीं, ये 5वां मौका है जब उन्होंने एक साल में सबसे ज्यादा कमाई करने के मामले में दुनिया के सभी खिलाड़ियों को पीछे छोड़ा है.

40 साल के क्रिस्टियानो रोनाल्डो की कमाई का सबसे बड़ा हिस्सा सऊदी प्रो लीग के क्लब अल-नासर के साथ उनकी 225 मिलियन अमेरिकी डॉलर की सालाना सैलरी से आता है. इसके अलावा, नाइकी, बिनांस, और हर्बालाइफ जैसे ब्रांड्स से उनकी ऑफ-फील्ड कमाई को 50 मिलियन अमेरिकी डॉलर तक पहुंचाया. इसके साथ उनकी एंडोर्समेंट डील्स और सोशल मीडिया की अपार लोकप्रियता (लगभग 939 मिलियन फॉलोअर्स) भी इसका एक बड़ा कारण है.

तेलंगाना के विकास की गति से मेल खाने की क्षमता किसी अन्य राज्य में नहीं है : भट्टी

डिप्टी सीएम ने कई बिजली सब-स्टेशनों की आधारशिला रखी

कोत्तागुडेम, 17 मई (स्वतंत्र वार्ता)। उपमुख्यमंत्री भट्टी विक्रमार्क ने कहा कि भारत में किसी भी राज्य में तेलंगाना जैसा विकास हासिल करने की क्षमता नहीं है। शनिवार को भट्टी विक्रमार्क ने कोत्तागुडेम जिले में कई बिजली सबस्टेशनों और पलवांचा में एक उच्च स्तरीय पुल की आधारशिला रखी। कोत्तागुडेम कलेक्ट्रेट में एक कार्यक्रम में बोलते हुए उन्होंने इस बात पर जोर दिया कि तेलंगाना आईटी, फार्मा, बिजली, स्वास्थ्य, आवास और कल्याणकारी योजनाओं जैसे क्षेत्रों में विकास के साथ समग्र रूप से प्रगति कर रहा है। उपमुख्यमंत्री ने पिछले शासकों की आलोचना की, जो दस साल तक सार्वजनिक धन का दुरूपयोग करने और निष्क्रिय रहने के बाद, अब तेलंगाना के विकास को बर्दाश्त नहीं कर पा रहे हैं और निराधार टिप्पणियां कर रहे हैं। उन्होंने जोर देकर कहा कि सरकार स्पष्ट विकास के जरिए उनका जवाब देगी। उपमुख्यमंत्री ने वनों की रक्षा और आदिवासियों के सम्मान के साथ उत्थान के लिए इंदिरा सौर जनजातीय जल विकास योजना शुरू करने की घोषणा की। यह योजना गोदावरी बेसिन के साथ आदिलाबाद से भद्राचलम तक फैलेगी और कृष्णा बेसिन में आदिवासियों को भी कवर करेगी। सरकार बागवानी विभाग की मदद से बोरवेल, सौर बिजली, ड्रिप और स्प्रिंकलर सिंचाई प्रणाली स्थापित करेगी और एवोकाडो और बांस जैसी बागवानी फसलों को बढ़ावा देगी। भट्टी विक्रमार्क ने कहा कि योजना को सोमवार को नगरकर्नूल जिले के अचंपेट में आधिकारिक रूप से लॉन्च किया जाएगा। उन्होंने दोहराया कि आदिवासी समुदायों पर कोई लागत लगाए बिना 12,500 करोड़ रुपये खर्च किए जाएंगे। उन्होंने उल्लेख किया कि जबकि पिछला प्रशासन 2023-24 में 15,000 मेगावाट की मांग का प्रबंधन नहीं कर सका, वर्तमान सरकार ने मार्च में बिना किसी व्यवधान के 17,162 मेगावाट की अधिकतम मांग को संभाला। संयुक्त आंध्र प्रदेश के इतिहास में भी इतनी अधिक मांग कभी नहीं हुई थी। उन्होंने कहा कि थर्मल पावर के साथ-साथ सौर, जलविद्युत और पवन ऊर्जा का भी उपयोग किया जाएगा और सरकार 20,000 मेगावाट हरित ऊर्जा का लक्ष्य लेकर चल रही है। भट्टी विक्रमार्क ने जोर देकर कहा, यह कांग्रेस ही थी जिसने राज्य में बिजली लाई, केसीआर नहीं। उन्होंने न तो बिजली लाई और न ही दी। उन्होंने कहा कि सीताराम परियोजना को राज्य सरकार प्राथमिकता दे रही है और इसकी नहरों के लिए आवश्यक भूमि अधिग्रहण किया जाएगा।

जीएचएमसी का स्ट्रीट लाइट रखरखाव पर विशेष ध्यान

हैदराबाद, 17 मई (स्वतंत्र वार्ता)। जीएचएमसी ने स्ट्रीट लाइटों के कुशल प्रबंधन पर विशेष ध्यान दिया है। पिछले महीने ईईएसएल एजेंसी के साथ समझौता समाप्त होने के बाद, जीएचएमसी 1 मई से स्ट्रीट लाइटों का प्रबंधन अपने हाथ में ले लेगी। इसके तहत एक नए अपर आयुक्त की नियुक्ति की गई। क्षेत्र-दर-क्षेत्र आधार पर स्ट्रीट लाइटें और अन्य आपूर्तियां खरीदने के लिए कदम उठाए गए हैं। समीक्षाएं प्रतिदिन आयोजित की जाती हैं। लाइटें लगाने के लिए 17 एजेंसियों का काम अगले एक महीने तक जारी रहेगा। स्ट्रीट लाइटों से संबंधित शिकायतों के समाधान पर विशेष ध्यान देते हुए दैनिक समीक्षा की जाती है। आज तक 9,000 शिकायतें प्राप्त हुई हैं, जिनमें से 5,800 का समाधान किया जा चुका है। अब तक 50 प्रतिशत से अधिक शिकायतों का समाधान हो चुका है। शिकायत प्राप्ति के 48 घंटे के भीतर उसका समाधान करने के लिए विशेष उपाय किए जा रहे हैं। शेष 3,200 शिकायतों का एक सप्ताह के भीतर समाधान करने का लक्ष्य है। सभी लोगों को सलाह दी जाती है कि वे अपने क्षेत्रों में स्ट्रीट लाइटिंग संबंधी समस्याओं की रिपोर्ट मैजीएचएमसी ऐप के माध्यम से करें।

राज्यपाल ने क्वांटम वैली स्थापित करने की सरकार की योजना की सराहना की

विजयवाड़ा, 17 मई (स्वतंत्र वार्ता)। आंध्र प्रदेश के राज्यपाल एस. अब्दुल नजीर और जेएनटीयू अनंतपुर के कुलाधिपति ने शनिवार को अनंतपुर में विश्वविद्यालय सभागार में आयोजित विश्वविद्यालय के XIV दीक्षांत समारोह की अध्यक्षता की। छात्रों को संबोधित करते हुए राज्यपाल अब्दुल नजीर ने कहा कि भारत के राष्ट्रीय क्वांटम मिशन के हिस्से के रूप में अमरावती में क्वांटम कंप्यूटिंग हब क्वांटम वैली स्थापित करने की राज्य सरकार की योजना राज्य को भारत में क्वांटम प्रौद्योगिकी अनुसंधान और विकास के लिए एक अग्रणी केंद्र के रूप में स्थापित करेगी। कुलाधिपति ने कहा कि "विकसित भारत" की अवधारणा आर्थिक समृद्धि, सामाजिक समावेशिता, तकनीकी उन्नति और सतत विकास प्राप्त करने पर केंद्रित है और एक ऐसे भारत की कल्पना करती है जहां प्रत्येक नागरिक को गुणवत्तापूर्ण शिक्षा, स्वास्थ्य सेवा, रोजगार के अवसर और सम्मानजनक जीवन तक पहुंच हो। इस विजन को हासिल करने के लिए डिजिटल अर्थव्यवस्था, नवीकरणीय ऊर्जा, स्टार्ट-अप, शिक्षा, स्वास्थ्य और कौशल विकास जैसे कई कार्यक्रम सहभागी दृष्टिकोण के साथ शुरू किए गए हैं, जो नागरिकों, छात्रों, युवाओं और सभी संस्थानों को इस सपने की दिशा में सक्रिय रूप से योगदान देने के लिए प्रोत्साहित करते हैं। उन्होंने यह भी कहा कि स्वर्ण आंध्र 2047, राज्य का अपना विजन विकसित भारत के राष्ट्रीय मिशन के साथ संरेखित है और राज्य सरकार द्वारा तैयार किए गए रोडमैप का उद्देश्य 2047 तक आर्थिक समृद्धि, तकनीकी उन्नति, सामाजिक समानता और पर्यावरणीय स्थिरता हासिल करना है। राज्यपाल ने दीक्षांत समारोह में स्वर्ण पदक, योग्यता प्रमाण पत्र और डिग्री प्राप्त करने वाले छात्रों को बधाई दी। आईआईटी कानपुर के एमेरिटस प्रोफेसर (सेवानिवृत्त) प्रो. एमआर माधव ने मुख्य अतिथि-सह-वक्ता के रूप में भाग लिया और लॉरस लैब्स लिमिटेड के संस्थापक और सीईओ डॉ राज्यपाल के सचिव डॉ.एम. हरि जवाहरलाल और अन्य गणमान्य व्यक्ति दीक्षांत समारोह में शामिल हुए।

हैदराबाद पुलिस आयुक्त ने मुख्यमंत्री रेवंत से मुलाकात की

हैदराबाद, 17 मई (स्वतंत्र वार्ता)। हैदराबाद पुलिस आयुक्त सीवी आनंद ने शनिवार को मुख्यमंत्री रेवंत रेड्डी से शिष्टाचार भेंट की और एंटी-नारकोटिक्स पुरस्कार में उत्कृष्टता प्राप्त करने का जश्न मनाया। हैदराबाद नारकोटिक्स प्रवर्तन विंग (एच-न्यू) का हिस्सा सीवी आनंद को दुबई पुलिस द्वारा आयोजित 13 से 16 मई तक आयोजित विश्व पुलिस शिखर सम्मेलन (डब्ल्यूपीएस) 2025 के दौरान "एंटी-नारकोटिक्स पुरस्कार में उत्कृष्टता" से सम्मानित किया गया। इस बैठक के दौरान, मुख्यमंत्री ने 138 प्रतिस्पर्धी देशों के बीच दुनिया में शीर्ष प्रदर्शन करने वाले के रूप में पहचाने जाने में तेलंगाना की उपलब्धि के लिए सीवी आनंद की प्रशंसा की।

डलास, यूएसए में बीआरएस अध्यक्ष केटीआर के कार्यक्रम के लिए तैयारी बैठकें जारी

हैदराबाद, 17 मई (स्वतंत्र वार्ता)। भारत राष्ट्र समिति (बीआरएस) यूएसए विंग डलास, यूएसए में बीआरएस के कार्यकारी अध्यक्ष कलवकुंतला तारक रामाराव की आगामी बैठक की भव्य सफलता सुनिश्चित करने के लिए व्यापक योजनाओं के साथ आगे बढ़ रही है।

इस कार्यक्रम के साथ-साथ तेलंगाना स्थापना दिवस और बीआरएस रजत जयंती समारोह भी बड़े पैमाने पर आयोजित किए जा रहे हैं। इन कार्यक्रमों का उद्देश्य तेलंगाना आंदोलन की भावना और पार्टी के विजन को मजबूत करने के लिए पूरे अमेरिका में तेलंगाना संघों, पार्टी कार्यकर्ताओं और समर्थकों को एक साझा मंच पर लाना है। इस भव्य आयोजन की तैयारी में, बीआरएस यूएसए विंग ने लॉस एंजिल्स, कैलिफोर्निया; अटलांटा, जॉर्जिया और वाशिंगटन डीसी जैसे प्रमुख शहरों में सफलतापूर्वक तैयारी बैठकें आयोजित की हैं।

ये बैठकें स्थानीय तेलुगु और तेलंगाना संघों और बीआरएस पार्टी कार्यकर्ताओं की सक्रिय भागीदारी के साथ आयोजित की गईं। डलास कार्यक्रम से संबंधित प्रचार रणनीतियों और सांस्कृतिक कार्यक्रमों पर चर्चा की गई। तेलंगाना से बीआरएस के वरिष्ठ नेता बालका सुमन विशेष अतिथि के रूप में शामिल हुए और स्थानीय पार्टी कार्यकर्ताओं और एनआरआई से बातचीत की। बैठकों में डलास कार्यक्रम के लिए समन्वय, रसद, परिवहन, आवास और रजत जयंती समारोह के लिए सोशल मीडिया अभियान पर ध्यान केंद्रित किया गया। सांस्कृतिक कार्यक्रमों और मीडिया समन्वय पर भी विस्तार से चर्चा की गई।

बीआरएस यूएसए के वरिष्ठ नेताओं ने भाग लिया और मार्गदर्शन प्रदान किया। इन बैठकों ने पूरे अमेरिका में बीआरएस पार्टी कार्यकर्ताओं और समर्थकों के बीच उत्साह को काफी बढ़ाया है। अगले दस दिनों में, प्रमुख अमेरिकी शहरों और राज्यों में स्थानीय बीआरएस अध्याय आगे की तैयारी बैठकें आयोजित करेंगे।

इन सत्रों का उद्देश्य डलास कार्यक्रम की व्यवस्था को अंतिम रूप देना और तेलंगाना संघों और समर्थकों को और अधिक संगठित करना है। बीआरएस यूएसए के अनुसार, आगामी बैठकें न्यू जर्सी, बे एरिया (कैलिफोर्निया), शिकागो, ह्यूस्टन, डलास और न्यूयॉर्क सहित शहरों में आयोजित की जाएंगी।

इटेला राजेंद्र ने सीएम से तत्काल धान खरीदने की मांग की

हैदराबाद, 17 मई (स्वतंत्र वार्ता)। भाजपा सांसद इटेला राजेंद्र ने आज मांग की कि मुख्यमंत्री राज्य के किसानों से धान की तेजी से खरीद के लिए कदम उठाएं। उन्होंने सीएम से कहा कि राज्य के कई खरीद केंद्रों पर किसानों से धान की खरीद में अत्यधिक देरी हो रही है। राजेंद्र ने मेडचल मलकाजगरी जिले के घटकेसर मंडल के एडुलाबाद में एक खरीद केंद्र का दौरा किया। इस अवसर पर उन्होंने किसानों से बातचीत की। किसानों ने सांसद को बताया कि 20 दिन बीत जाने के बाद भी संबंधित अधिकारियों ने उनकी उपज नहीं खरीदी है और कहा कि हाल ही में हुई बेमौसम बारिश के कारण धान भीग गया है। सांसद ने जिला कलेक्टर और अन्य अधिकारियों से बात की और उन्हें अगले दो दिनों में खरीद प्रक्रिया पूरी करने को कहा। इस अवसर पर बोलते हुए राजेंद्र ने कहा कि लगभग हर दिन विभिन्न जिलों में बारिश हो रही है और धान को नुकसान पहुंचा रही है। उन्होंने कहा कि खरीद केंद्रों पर बुनियादी जरूरतों की कमी के कारण किसानों को खरीद में समस्याओं का सामना करना पड़ रहा है। उन्होंने कहा कि एडुलाबाद के काश्तकार 15 दिन पहले अपनी उपज खरीद केंद्रों पर लाए थे, लेकिन सरकार अब तक उनका धान खरीदने में विफल रही है।

कठिन परिस्थिति में महिला की मदद करने वाले अभिषेक को पुलिस ने सम्मानित किया

हैदराबाद, 17 मई (स्वतंत्र वार्ता)। हैदराबाद के वाईएमसीए फ्लाईओवर के बीच में बीती शाम एक सैंट्रो कार की बैटरी अचानक खराब हो गई। वाहन को 55 वर्षीय महिला चला रही थी, जो एक असुरक्षित स्थिति में फंस गई थी, क्योंकि वह चल रहे यातायात के बीच अपनी कार को आगे नहीं बढ़ा पा रही थी। इस महत्वपूर्ण क्षण में, हाई-टेक सिटी से डीडी कॉलोनी, अंबरपेट जा रहे गूगल कर्मचारी अभिषेक ने नागरिक जिम्मेदारी का एक अनुकरणीय कार्य प्रदर्शित किया। स्थिति को देखते हुए, उन्होंने अपनी बाइक रोकी, फंसे हुए वाहन के पास पहुंचे, और अपने हाथों से कार को फ्लाईओवर से सुरक्षित रूप से उत्तरी क्षेत्र कार्यालय की ओर धकेल दिया, जिससे बुजुर्ग महिला की सुरक्षा और यातायात का सुचारू प्रवाह सुनिश्चित हुआ। महिला की सुरक्षा सुनिश्चित करने के बाद, वह फ्लाईओवर के बीच तक वापस चला गया और अपना वाहन वापस ले आया। इस निस्वार्थ और सराहनीय कार्य की मान्यता में जी शंकर राजू, एसीपी ट्रैफिक- I, उत्तरी क्षेत्र, जी सतीश रेड्डी, एसआई, और गोपालपुरम ट्रैफिक पुलिस स्टेशन के कांस्टेबल पी श्रीनिवास ने अभिषेक को सम्मानित किया, उनके साहस और सामाजिक कर्तव्य की भावना की प्रशंसा की। उन्हें हैदराबाद के नागरिकों के लिए एक आदर्श के रूप में सही रूप से स्वीकार किया गया है। यह घटना एक अनुस्मारक के रूप में कार्य करती है कि सड़क सुरक्षा और सार्वजनिक कल्याण सुनिश्चित करने में नागरिक भागीदारी महत्वपूर्ण है। जबकि ट्रैफ़िक पुलिस घटनाओं को बनाए रखने और उनका जवाब देने का प्रयास करती है, वे जुड़वां शहरों में ट्रैफ़िक और घटनाओं की मात्रा के कारण हमेशा तुरंत मौजूद नहीं हो सकते हैं। देश भर में प्रतिदिन 2000 से अधिक नए वाहन जुड़ने और 5000 से अधिक दुर्घटना के मामलों की रिपोर्ट के साथ, नागरिकों के लिए आगे आना और ज़रूरत के समय एक-दूसरे की मदद करना आवश्यक हो जाता है। हम इस अवसर पर गुड सेमेरिटन कानून के बारे में जागरूकता बढ़ाने का भी प्रयास कर रहे हैं, जिसके तहत भारत सरकार उन व्यक्तियों को मान्यता देती है और पुरस्कृत करती है जो स्वेच्छा से दुर्घटना पीड़ितों या संकट में फंसे लोगों की मदद करते हैं। ऐसे व्यक्ति गुड सेमेरिटन पुरस्कार के लिए पात्र हो सकते हैं, और उनकी सहायता कानून के तहत संरक्षित है। ट्रैफिक-I, उत्तरी क्षेत्र, हैदराबाद, सभी नागरिकों स अभिषेक के उदाहरण का अनुसरण करने और एक दयालु, जिम्मेदार और सुरक्षित समुदाय के निर्माण में योगदान देने का आग्रह करता है।

टीटीडी वैदिक स्कूलों में प्रवेश प्रक्रिया शुरू

तिरुपति, 17 मई (स्वतंत्र वार्ता)। शैक्षणिक वर्ष 2025-26 के लिए टीटीडी वैदिक स्कूलों में प्रवेश के लिए पात्र छात्रों (लड़कों) से आवेदन आमंत्रित किए जाते हैं। लड़कों को वैदिक परंपरा के अनुसार उपनयन संस्कार करवाना चाहिए और टीटीडी द्वारा संचालित श्री वेंकटेश्वर वेद विज्ञान पीठम (स्कूल) में पढ़ाए जाने वाले विभिन्न पाठ्यक्रमों में प्रवेश के लिए निर्धारित आयु और शैक्षिक मानक रखने चाहिए। प्रवेश केंद्रों में श्री वेंकटेश्वर वेद विज्ञान पीठम, धर्मगिरि, तिरुमला, केसरगुट्टा, विजयनगरम, आई. भीमावरम, नलगोंडा और कोटप्पाकोंडा शामिल हैं। उक्त स्कूलों में पढ़ाए जाने वाले विभिन्न पाठ्यक्रमों, पात्रता, आवश्यकताओं, आवेदन और अन्य विवरणों का विवरण टीटीडी वेबसाइट www.tirumala.org पर देखा जा सकता है। आवेदन 30 मई 2025 तक जमा किए जाने चाहिए।

आरपीएफ साइबर सेल ने 'ऑपरेशन अमानत' के तहत मोबाइल रिकवरी के प्रयासों का नेतृत्व किया

हैदराबाद, 17 मई (स्वतंत्र वार्ता)। यात्री सेवाओं को बढ़ावा देने के लिए आरपीएफ-दक्षिण मध्य रेलवे (एससीआर) ने 'ऑपरेशन अमानत' के तहत खोए हुए मोबाइल फोन को खोजने और पुनः प्राप्त करने के लिए डिजिटल उपकरणों का प्रभावी ढंग से उपयोग करके अपने प्रयासों को आगे बढ़ाया है। 3 अप्रैल 2025 को केंद्रीय उपकरण पहचान रजिस्टर (सीईआईआर) पोर्टल तक पहुंच प्रदान करने के बाद, आरपीएफ साइबर सेल तुरंत कार्रवाई में जुट गया, जिससे प्रौद्योगिकी को ठोस परिणामों में बदल दिया गया। आरपीएफ को खोए हुए उपकरणों को केवल तभी पुनर्प्राप्त करने का अधिकार दिया गया था जब घटना की सूचना दी गई थी और ट्रेन के माध्यम से रिकॉर्ड किया गया था, मदद और शिकायतकर्ता ने मामले में प्राथमिकी दर्ज नहीं की थी। दूरसंचार विभाग द्वारा विकसित सीईआईआर पोर्टल, आईएमईआई-आधारित ट्रैकिंग और खोए हुए या चोरी हुए उपकरणों को अवरूद्ध करने में सक्षम बनाता है। हालांकि, यह आरपीएफ का समर्पित साइबर सेल है जो पूरे जोन में रिकवरी ऑपरेशन चला रहा है। पहली शिकायत 13 अप्रैल 2025 को विजयवाड़ा डिवीजन से दर्ज की गई थी। तब से, आरपीएफ साइबर सेल ने दक्षिण मध्य रेलवे में कुल 123 शिकायतों को संभाला है। प्रमुख उपलब्धियों में साइबर सेल ने 90 मोबाइल फोन ब्लॉक कर दिए हैं। 29 उपकरणों का पता लगाने की क्षमता का पता लगाया गया है। 3 मोबाइल फोन सफलतापूर्वक बरामद किए गए हैं और उनके असली मालिकों को वापस कर दिए गए है। इसके अलावा, साइबर सेल वर्तमान में ट्रेस किए गए मोबाइल फोन के कब्जे में तीन उपयोगकर्ताओं के साथ समन्वय कर रहा है, जिनमें से सभी सप्ताह के भीतर उपकरणों को वापस करने के लिए सहमत हुए हैं। इन प्रयासों को संरचित अनुवर्ती और प्रत्यक्ष उपयोगकर्ता जुड़ाव द्वारा समर्थित किया जाता है, जो आरपीएफ के सक्रिय दृष्टिकोण को दर्शाता है। यात्री कल्याण पर एक मजबूत ध्यान देने के साथ, आरपीएफ साइबर सेल डिजिटल इंटेलिजेंस, समय पर कार्रवाई और अंतर-एजेंसी सहयोग के माध्यम से चोरी या गलत संपत्ति को बहाल करने में एक महत्वपूर्ण बल बन गया है। यह पहल रेलवे नेटवर्क में सुरक्षा और सेवा सुनिश्चित करने के लिए आरपीएफ की प्रतिबद्धता में जनता के विश्वास को मजबूत करना जारी रखती है।

विश्व उच्च रक्तचाप दिवस पर सेंट्रल हॉस्पिटल लालागुडा में इंटरएक्टिव लर्निंग सेशन आयोजित

हैदराबाद, 17 मई (स्वतंत्र वार्ता)। विश्व उच्च रक्तचाप दिवस के अवसर पर शनिवार को सेंट्रल रेलवे हॉस्पिटल, लालागुडा में एक इंटरएक्टिव लर्निंग सेशन आयोजित किया गया। इस वर्ष विश्व उच्च रक्तचाप दिवस और वैश्विक उच्च रक्तचाप जागरूकता को थीम के साथ मनाया जा रहा है, "अपने रक्तचाप को सही तरीके से मापें, इसे नियंत्रित करें, लंबे समय तक जियें!" सत्र के दौरान, डॉ. एनवीबीके साईं, चीफ स्टाफ सर्जन- 1/कार्डियोलॉजिस्ट ने उच्च रक्तचाप की जटिलताओं और आपात स्थितियों के बारे में बात की। डॉ. सुषमा ने उच्च रक्तचाप की परिभाषा, कारण, लक्षण और निदान के बारे में बात की। डॉ. ज्योत्सना, मंडल चिकित्सा अधिकारी/चिकित्सक ने उच्च रक्तचाप रोधी दवाओं, प्रकारों, संकेतों, वर्गीकरण, दवा अंतःक्रियाओं के बारे में बताया। आहार विशेषज्ञ ने उच्च रक्तचाप के रोगियों के लिए अपनाए जाने वाले आहार के बारे में बताया। डॉ. कृष्णावेनी, मुख्य स्टाफ सर्जन- 2, डॉ. महिता, डॉ. काव्या- मंडल चिकित्सा अधिकारियों के साथ-साथ डीएनबी, सहायक नर्सिंग अधिकारी, ओपीडी मेट्रन और परिवार नियोजन कर्मचारियों ने भी कार्यक्रम में भाग लिया। विभिन्न प्रकार की उच्च रक्तचाप रोधी दवाओं का प्रदर्शन किया गया और रोगियों को उनके बारे में बताया गया।

डॉक्टरों ने भी रोगियों से बातचीत की और उनकी शंकाओं का समाधान किया। अरुण कुमार जैन, महाप्रबंधक, एससीआर ने कहा कि रोगियों के बीच जागरूकता फैलाने के लिए एससीआर के चिकित्सा विभाग द्वारा की गई यह एक अच्छी पहल है। उन्होंने कहा कि स्वास्थ्य को हमेशा सर्वोच्च प्राथमिकता दी जानी चाहिए और कर्मचारियों को अच्छे आहार और व्यायाम पर ध्यान केंद्रित करने के लिए प्रोत्साहित किया।

जगद्गुरु रामभद्राचार्य को ज्ञानपीठ पुरस्कार से सम्मानित होना उत्कृष्टता का उदाहरण : चोक्का राव

हैदराबाद, 17 मई (स्वतंत्र वार्ता)। ऑल इंडिया कॉन्फेडरेशन ऑफ द ब्लाइंड, दिल्ली/हैदराबाद के उपाध्यक्ष पोनुगोटी चोक्का राव ने कहा कि राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू ने नई दिल्ली में आयोजित एक समारोह में संस्कृत विद्वान जगद्गुरु रामभद्राचार्य को 58वां ज्ञानपीठ पुरस्कार प्रदान किया। जगद्गुरु ने दृष्टिहीनों के लिए उत्कृष्टता का एक प्रेरक उदाहरण प्रस्तुत किया है और समाज को उन्हें अपने पैरों पर खड़े होने के प्रयासों में उत्कृष्टता लाने के लिए प्रोत्साहित करना चाहिए। उन्होंने कहा कि इसमें कोई संदेह नहीं है कि आने वाली पीढ़ियां साहित्य सृजन, समाज-निर्माण और राष्ट्र-निर्माण में सही मार्ग पर आगे बढ़ने के लिए उनसे प्रेरणा लेंगी। इस अवसर पर जगद्गुरु रामभद्राचार्य ने पुरस्कार प्राप्त करने पर प्रसन्नता व्यक्त करते हुए उन्होंने कहा कि उनके साहित्यिक कार्य को मान्यता मिली है।

11 बीआरएस विधायकों ने सीएम से मेट्रो रेल टिकट की कीमतों में बढ़ोतरी वापस लेने की मांग की

हैदराबाद, 17 मई (स्वतंत्र वार्ता)। मुख्यमंत्री रेवंत रेड्डी को संबोधित एक कड़े शब्दों वाले खुले पत्र में, हैदराबाद के 11 बीआरएस विधायकों ने हैदराबाद मेट्रो रेल टिकट की कीमतों में हाल ही में हुई बढ़ोतरी का कड़ा विरोध किया है, इसे शहर के गरीब और मध्यम वर्ग के यात्रियों पर "क्रूर आर्थिक बोझ" बताया है। विधायकों ने मांग की कि कांग्रेस सरकार तुरंत बढ़ोतरी वापस ले, क्योंकि छात्रों, कर्मचारियों और दिहाड़ी मजदूरों सहित लाखों दैनिक यात्री किफायती और विश्वसनीय परिवहन के लिए मेट्रो पर निर्भर हैं। उन्होंने कहा कि किराए में संशोधन, जो कथित तौर पर 10 से 20 रुपए तक टिकटों की वृद्धि करता है, प्रति व्यक्ति 500 से 600 रुपये का अतिरिक्त मासिक बोझ डाल सकता है। भारत के सबसे तेजी से बढ़ते शहरों में से एक हैदराबाद को एक मजबूत, सब्सिडी वाली सार्वजनिक परिवहन प्रणाली की आवश्यकता है, न कि निजी मुनाफे के लिए डिज़ाइन की गई। सिंगापुर, बर्लिन और टोक्यो जैसे अंतर्राष्ट्रीय उदाहरणों का हवाला देते हुए, बीआरएस विधायकों ने तर्क दिया कि वैश्विक शहर सरकारी सब्सिडी के माध्यम से अपने सार्वजनिक परिवहन को सुलभ बनाए रखते हैं।

पावरग्रिड
POWERGRID

अधिसूचना

कार्य का नाम: नागरकर्नूल जिले के अचम्पेट (17.249 हेक्टेयर) और रंगारेड्डी जिले के अमंगल डिवीजन (9.744 हेक्टेयर) में 26.993 हेक्टेयर वन भूमि के डायवर्जन के लिए कर्नूल-3 (नया पीएस) से पावरग्रिड के महेश्वरम एसएस तक 765 केवी डी/सी ट्रांसमिशन लाइन के निर्माण के लिए मेसर्स पावर ग्रिड कॉर्पोरेशन ऑफ इंडिया लिमिटेड के पक्ष में सैद्धांतिक मंजूरी पर्यावरण, वन और जलवायु परिवर्तन मंत्रालय, भारत सरकार, क्षेत्रीय कार्यालय, चेन्नई द्वारा ऑनलाइन प्रस्ताव संख्या: एफपी/टीजी/पीडब्लूआर_ट्रांस/457150/2023 दिनांक 22.04.2025 के माध्यम से दी गई है।

नोट: वन मंजूरी MoEFCC पोर्टल **http://www.parivesh.nic.in** पर प्रस्ताव संख्या: FP/TG/PWR_TRANS/457150/2023 दिनांक 22.04.2025 के अनुसार उपलब्ध है।

इसे राज्य वन विभाग द्वारा निर्धारित शर्तों के अनुसार प्रकाशित किया जा रहा है।

पावरग्रिड की ओर से
(भारत सरकार का उद्यम)

उप. महाप्रबंधक
पावरग्रिड/नागरकर्नूल

SR-I/PR/Advt-02/Forest Notice-01/2025-26/Promodome

एक महारत्न पीएसयू

Printed and published by Dr. Gireesh Sanghi on behalf of AGA Publications Ltd., at 396, Lower Tankbund, Hyderabad-500080 Editor: *Dhirendra Pratap Singh *responsible for selection of news under the PRB Act. Postal Licence H/SD/380/21-22, Phone:27644999. Fax:27642512, RNI No.69340/98, Regd.:No.AP/HIN/00196/01/1/97/TC.